

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 अगस्त, 2021
डाक प्रेषण तिथि 10 अगस्त, 2021

वर्ष : 79 अंक : 08
श्रावण, 2078 मूल्य : ₹ 10
पृष्ठ संख्या 104

डाक पंजीयन संख्या Jaipur City/413/2021-23
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

अगस्त, 2021



Website : www.jinwani.in

संघ एवं समाज में महान् भेद है।

समाज जहाँ सामाजिक व्यवहार का आधार है,
वहाँ संघ आध्यात्मिक उन्नति का आधार है।

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जय गुरु हस्ती

जय महावीर

जय गुरु हीरा-मान

जय गुरु कन्हैया

श्री कुशलरत्नगजेन्द्रहीरागणिभ्यो नमः

अंक सौजन्य

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अनन्त श्रद्धा के केन्द्र

आचार्यप्रबल 1008 श्री हस्तीमलनी म.सा.

व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक

श्रद्धेय आचार्यप्रबल 1008 श्री हीराचन्द्रनी म.सा.

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न

पूज्य श्री मानचन्द्रनी म.सा.

के चरण कमलों में शत-शत वन्दन, नमन।

अनन्य गुरुभक्त संथारा साधक श्रावकरत्न स्व. श्री मोतीलालजी नागसेठिया,

संथारा साधक श्राविकारत्न स्व. बदामबाईजी नागसेठिया

के सुसंस्कार, आशीर्वाद एवं देव-गुरु-धर्म की

छत्र-छाया में पल्लवित....

* श्रद्धान्वित गुरुभक्त नागसेठिया परिवार *

भाई

:: स्व. श्री गुलाबचन्दजी, स्व. श्री पुखराजजी, स्व. श्री शान्तिलालजी

बहन

:: श्रीमती मदनबाईजी-श्री किशनलालजी खिंवसरा (निमगुळवाले), धुलिया

सुपुत्र-सुपुत्रवधूँ

:: श्री हुकुमचन्दजी-सौ. चन्द्रकलाबाई, संथारा साधक स्व. श्री प्रेमचन्दजी-श्रीमती सुशीलाबाई, श्री पवनलाल-सौ. चन्द्रकलाबाई, श्री सुरेशचन्दजी-सौ. पुष्पाबाई

सुपौत्र-सुपौत्रवधूँ

:: सागर-सौ. सपना, पीयूष-सौ. किरण, नरेश-सौ. सीमा, जितेन्द्र-सौ. शैला, रविन्द्र-सौ. प्रीति, आतिश-सौ. समता, संथारा साधक स्व. श्री रुपेश

सुपौत्री-सुपौत्री दामाद

:: सौ. रेखा-अशोकजी बोहरा, सौ. मेघा-राजेन्द्रजी कोठडीया, सौ. छाया-सुनीलजी सुराणा, सौ. दर्शना-सुनीलजी चोरडिया, सौ. अर्चना-अजयजी ओस्तवाल, सौ. मंगला-अनिलजी आब्बड़, सौ. ममता-जितेशजी संघवी, सौ. सपना-निलेशजी गोठी, सौ. जयश्री-गौरवजी रेदासनी, सौ. सीमा-दीपकजी टाटिया।

आनन्द चोरडिया, दीक्षा चोरडिया, हर्ष ओस्तवाल, स्नेहल ओस्तवाल,

बिपुल, नवकार, दर्शन, करण, हर्ष, संस्कार एवं ध्रुव,

श्रेया चोरडिया, साची अलीझाड़, दिव्या, केशर (श्रुति) हर्षिता, तपस्या, अर्पिता, तनिशा

एवं समस्त नागसेठिया परिवार, होलनांथा/शिरपुर (महाराष्ट्र)

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रकाशित नूतन सत्साहित्य का संक्षिप्त विवरण

1. **आचाराङ्गसूत्र**-अहिंसा, अप्रमाद, अपरिग्रह एवं आत्मसाधना का प्रतिपादन करने वाला इस आगम के विवेचन में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के तत्त्वावधान में तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी आदि सन्त-सतियों का सहकार रहा है। आचाराङ्गसूत्र का यह 632 पृष्ठों का विशिष्ट संस्करण है जो आगम के हार्द को स्पष्ट करता है। सम्पादक : श्री प्रकाशचन्द जैन 'प्राचार्य', मूल्य : 100/-
 2. **जैन प्रमाणशास्त्र**-किसी भी ज्ञेय पदार्थ का सही ज्ञान करने के लिए प्रमाणशास्त्र का विकास हुआ है। जैनदर्शन में भी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष प्रमाणों की गहन चर्चा हुई है, जिसका प्रतिपादन 'जैन प्रमाणशास्त्र' ग्रन्थ में हुआ है। इसका लेखन डॉ. धर्मचन्द जैन ने किया है। मूल्य : 100/-
 3. **जम्बू कुमार चरित्र**-अध्यात्मयोगी युगमनीषी परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. द्वारा जम्बूकुमार के वैराग्य, प्रव्रज्या आदि का काव्यमय निरूपण किया गया है, जिसका सम्पादन एवं कथानक का लेखन श्री सम्पतराजजी चौधरी, दिल्ली द्वारा किया गया है। मूल्य : 60/-
 4. **चिन्तन के आयाम भाग-2**-विभिन्न विषयों पर चिन्तन परक आलेखों से युक्त इस पुस्तक का प्रणयन डॉ. धर्मचन्द जैन ने किया है। जिनवाणी के 35 श्रेष्ठ सम्पादकीय आलेख इसमें संकलित है। मूल्य : 40/-
 5. **अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार**-पूज्य आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में सन् 2011 में जोधपुर में 'अध्यात्म, समाज और भ्रष्टाचार' विषय पर आयोजित विद्वत्संगोष्ठी में न्याय, शिक्षा, समाज सेवा आदि क्षेत्रों के विद्वानों ने भागीदारी की थी। उन आलेखों का प्रकाशन इस पुस्तक में किया गया है। सम्पादक : डॉ. धर्मचन्द जैन मूल्य : 40/-
 6. **प्रभो तुम्हारे पावन पथ पर**-नन्हे बालक-बालिकाओं और किशोरों में सत्संकारों का बीजारोपण करने के लिए इस पुस्तक में 60 प्रार्थना, भजन और गीतों का संकलन किया गया है। सभी चयनित भजन, गीत और प्रार्थना बालकों में प्रेम, सहिष्णुता, सत्य, संयम, विनय, शाकाहार, भक्ति, अनुशासन, साहस, सेवा आदि सद्गुणों का वपन एवं विकास करने वाली हैं। मूल्य : 40/-
 7. **विनयचन्द चौबीसी**-कविश्रेष्ठ श्री विनयचन्दजी कुम्भट द्वारा रचित चतुर्विंशति स्तवनों का इस पुस्तक में संग्रह प्रस्तुत किया गया है। श्री सम्पतराजजी चौधरी ने इसका सुन्दर विवेचन किया है। मूल्य : 75/-
 8. **स्वस्थ एवं साधक-जीवन के लिए आहार**-प्रस्तुत पुस्तक में आहार के सम्बन्ध में शरीर विज्ञान, आयुर्वेद तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से भी विचार प्रस्तुत किये गये हैं। आवश्यकतानुसार जैनागम और अन्य शास्त्रों से भी उद्धरण प्रस्तुत किये गये हैं, जो प्रासङ्गिक एवं ज्ञानवर्धक हैं। संकलन : सौ. मंगला चोरड़िया मूल्य : 40/-
 9. **जिज्ञासा-समाधान भाग-2**-श्री धर्मचन्दजी जैन रजिस्ट्रार द्वारा लिखित यह पुस्तक सन्त-सतियों एवं तत्त्व जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी है। इसमें गमा, भवस्थान, पाणत्ता, ऋद्धि, अस्वाध्याय, वन्दना आदि के सम्बन्ध में प्रश्नोत्तर शैली में तात्त्विक जानकारी दी गई है। मूल्य : 30/-
 10. **आचार्य हस्ती के विशिष्ट कीर्तिमान**-श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर मूल्य : 40/-
 11. **हमारे जीवन की नई कहानियाँ**-श्रीमती कमला हणवन्त सुराणा, जोधपुर मूल्य : 40/-
 12. **बोध कथाएँ**-श्री सम्पतराजजी चौधरी, दिल्ली (संकलन) मूल्य : 40/-
- उपर्युक्त सभी पुस्तकें सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, सुबोध बाँयज सीनियर सैकेण्डरी स्कूल के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) फोन नं. 0141-2575997 से उक्त मूल्य के अतिरिक्त पोस्टेज शामिल कर मँगवा सकते हैं।

जिनवाणी

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी' ॥

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763
E-mail : absjrhssangh@gmail.com

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

अशोककुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182, के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997
जिनवाणी वेबसाइट- www.jinwani.in

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन

सह-सम्पादक

नीरतनमल मेहता, जोधपुर
मनोज कुमार जैन, जयपुर

सम्पादकीय कार्यालय

ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 (राज.)
फोन : 0141-2705088
E-mail : editorjinwani@gmail.com

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.- JaipurCity/413/2021-23
WPP Licence No. JaipurCity-WPP-04/2021-23
Posted at Jaipur RMS (PSO)



परस्परप्राप्तो जीवनाम्

परिजूरुड ते सरीर्यं,
केसा पंडुरया हवंति ते।
से सव्व-बले य हायडु,
समयं गौयम! मा पमायडु॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 10.26

हो रहा जीर्ण यह तन तेरा,
हो रहे केश ये धवल पककर।
क्रमशः सब बल हो रहे क्षीण,
गौतम! प्रमाद क्षण का मतकर॥

अगस्त, 2021

वीर निर्वाण सम्बत्, 2547

श्रावण, 2078

वर्ष 79

अंक 8

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि "JINWANI" बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा

कराकर जमापत्री (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट मेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, E-mail : sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियो का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-4043938

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

सम्पादकीय-	संघ एवं समाज में भेद	-डॉ. धर्मचन्द जैन	7
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	10
विचार-वारिधि-	व्यवहार और निश्चय का सम्बन्ध शरीर और प्राण जैसा	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	11
प्रवचन-	साधना में आगे बढ़ें, साधना तारने वाली है	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	12
	साम्बत्सरिक पर्व : वैर की गाँठ गलाने का पर्व	-महान् अध्यक्ष.श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	17
	शुभयोग : सम्यक्त्व प्राप्ति एवं मुक्ति में साधक	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.	19
	तपसाधना और वृत्ति संक्षेप से निर्जरा	-श्रद्धेय श्री योगशमुनिजी म.सा.	25
प्रवचन-सार-	जैन जीवनशैली से आध्यात्मिक उन्नति	-महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.	28
शोधालेख-	ध्यान के हेतु : एक चिन्तन	-उपाध्याय रमेशमुनिजी शास्त्री	32
	तमिल साहित्य के संवर्धन में जैनों का योगदान :		
	एक विहंगावलोकन	-डॉ. दिलीप धींग	36
English-section	Laws, constituents, doctrines and concepts of Jainism	-Dr. Narendra Bhandari	46
प्रासङ्गिक-	चातुर्मास : एक स्वर्णिम अवसर	-श्री पदमचन्द गाँधी	51
जीवन-दृष्टि-	सकारात्मक सोच और विवेकशीलता आवश्यक	-बीना जैन	54
जीवन-व्यवहार-	व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (7)	-श्री पी.शिखरमल सुराणा	57
आत्म-चिन्तन-	देने की कला और विज्ञान	-श्री सुरेश जैन	58
स्वास्थ्य-विज्ञान-	कोरोना का प्रभावशाली उपचार : शिवाम्बु	-डॉ. चंचलमल चोरड़िया	62
आगम-वाक्-	संसारचक्रसूत्र	-श्री हेमन्त लोढ़ा	65
रिपोर्ट-	मण्डल वेबिनार	-डॉ. धर्मचन्द जैन	66
गीत/कविता-	सभी जीवों से रखो मैत्री तुम	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	27
	भावना दिन रात मेरी	-श्री निपुण डगा	27
	अस्तित्व	-श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.	35
	मेरे हीरा गुरु है महान्	-अनुपमा दलपत जैन	45
	मन से मन का प्रेम अब कहाँ	-श्री राकेश मेहता (सी.ए.)	50
	प्रेरणा का पाथेय है मांगलिक	-म.व्याख्यानी श्री गौतममुनिजीम.सा.	53
	करुणा भावना	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	56
	इच्छा पूर्ति के भेंट चढ़ गए	-श्री प्रकाशचन्द नागौरी	61
	'तहत्ति तहत्ति' बोले ये मन	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	72
	ध्यान-चिन्तन	-श्री रमेश 'मयंक'	72
विचार/चिन्तन-	सोलह तरह के मूर्ख	-श्री डी. गौतमचन्द टोडरवाल	18
	चातुर्मास का महत्त्व	-श्री जसराज देवड़ा	31
	सुभाषित वाक्य	-श्री कस्तूरचन्द बाफना	45
	Guiding Words	-Jagarit Dinesh Jain	64
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-श्री गौतमचन्द जैन	69
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	73
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	89
बाल-जिनवाणी -	विभिन्न आलेख/रचनाएँ	-विभिन्न लेखक	91

संघ एवं समाज में भेद

❖ डॉ. धर्मचन्द जौन

हम कई बार संघ एवं समाज को एक जैसा समझ लेते हैं, किन्तु इन दोनों में महान् भेद है। समाज व्यक्तियों के समूह से बनता है, जिसमें हमारा पारस्परिक वैचारिक, वाचिक एवं अन्य लेन-देन का व्यवहार होता है। समाज में कई उत्सव होते हैं, विवाह, जन्म आदि के समारोह होते हैं। लोग परस्पर मिलते-जुलते हैं, एक-दूसरे के हानि-लाभ से जुड़े रहते हैं। शोक के अवसर पर भी एक-दूसरे के समीप पहुँचते हैं, सान्त्वना देते हैं। अब समाज का बहुत-सा व्यवहार अब मोबाइल से या सोशियल मीडिया से भी होने लगा है।

‘संघ’ जिसकी स्थापना तीर्थ के रूप में तीर्थङ्करों के द्वारा की जाती है, वह इस समाज से भिन्न होता है। यह संघ मात्र व्यक्तियों के समूह या संगठन का सूचक नहीं है, अपितु इसमें आध्यात्मिकता एवं व्रत-पालन का तत्त्व सन्निहित रहता है। इसका लक्ष्य संसार के दुःखों से छुटकारा है तथा उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान एवं सम्यक् चारित्र को जीवन में स्थान देना है। समाज का लक्ष्य परस्पर साथ में जीने तक सीमित है। वहाँ संघ का लक्ष्य सर्वविध दुःखों, क्लेशों से मुक्ति है। संघ को चतुर्विध स्वीकार किया गया है—साधु, साध्वी, श्रावक एवं श्राविका। साधु-साध्वी पंच अणुव्रतधारी होते हैं तथा श्रावक-श्राविका पंच महाव्रतधारी या द्वादशव्रतधारी तक होते हैं। साधुओं का अपना संघ होता है, जिसमें वे साथ रहकर एक-दूसरे के आध्यात्मिक उन्नयन में सहयोगी बनते हैं। इसी प्रकार साध्वियाँ भी अपने संघ में रहकर एक-दूसरे के ज्ञान-दर्शन एवं चारित्र के संवर्धन में सहकारिणी होती हैं। साधु एवं साध्वी परस्पर एक-दूसरे के लिए भी मर्यादा के साथ आध्यात्मिक प्रगति में सहायक बनते हैं। वे ठहरते भिन्न-भिन्न स्थानों पर हैं, किन्तु ज्ञान-चर्चा के लिए

साध्वियाँ साधुओं के पास गृहस्थ की उपस्थिति में आ सकती हैं। साधु-साध्वियों के पास साता पूछने जा सकते हैं, किन्तु वहाँ पर ज्ञानचर्चा के लिए भी ठहर नहीं सकते हैं। साधु-साध्वियों का समाज नहीं संघ ही होता है।

श्रावक एवं श्राविकाओं का भी संघ होता है। श्रावक संघ में श्रावकों एवं श्राविकाओं दोनों का समावेश हो सकता है, किन्तु श्राविकाओं को भी जैनधर्म में पृथक् से महत्त्व दिया गया है। जिस प्रकार साध्वियाँ आध्यात्मिक उन्नयन के मार्ग पर बढ़ने के लिए संघ की घटक हैं उसी प्रकार श्राविकाएँ भी आत्मिक विकास हेतु संघ की घटक होती हैं। श्रावक एवं श्राविकाएँ सन्तों एवं साध्वियों का सान्निध्य प्राप्त कर आध्यात्मिक साधना के पथ पर कदम बढ़ाते हैं। स्वाध्याय एवं धर्म-साधना भी उनमें एक-दूसरे के लिए प्रेरकता का कार्य करते हैं।

संघ वह सरिता है जिससे सद्गुणों का सिञ्चन होता है। इसे गुणीजनों का संघात कहा गया है—संघो गुणसंघाओ, क्योंकि संघ के माध्यम से सद्गुणों को प्रोत्साहित किया जाता है। संघ को तीर्थ कहा गया है, क्योंकि यह संसार-सागर को तैरने के लिए तीर्थ/घाट का कार्य करता है।

संघ एवं समाज में जो भिन्नता है वह लक्ष्यगत तो है ही, स्वरूपगत भी है। समाज में स्त्री-पुरुष, बालक-बालिका, युवा-युवति ये सभी अङ्ग होते हैं, किन्तु उन्हें तीर्थ नहीं कहा जाता है, क्योंकि इनमें व्रत, त्याग, तपस्या आदि के नहीं होने पर भी वे समाज के अङ्ग होते हैं, परन्तु धर्म-श्रद्धा एवं त्याग मार्ग पर चले बिना वे संघ के घटक नहीं बनते हैं। यह स्वरूपगत भेद है। एक भेद यह भी है कि संघ में श्रद्धा की आवश्यकता होती है और समाज में पारस्परिक विश्वास की। समाज विश्वास के बल पर चलता है और संघ श्रद्धा के बल पर। दोनों की अपनी

आचार संहिता होती है। समाज की आचार-संहिता परस्पर एकता एवं सहयोग के भाव से सञ्चालित होती है, जबकि संघ की आचार-संहिता में ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की आराधना पर बल होता है। संघ की महिमा समाज से अधिक है, क्योंकि संघ मुक्ति का सोपान है। संघ में श्रावक-श्राविका सदस्य होते हैं तथा समाज में सभी साधारण सदस्य। समाज के सदस्यों से संघ के सदस्य अधिक शालीन व्यवहार एवं वेशभूषा से युक्त होते हैं।

कभी-कभी हम संघ की गतिविधियों में सामाजिक गतिविधियों को शामिल करने लगते हैं, जो उचित नहीं है। इससे संघ की गरिमा घटती है। संघ का आध्यात्मिक स्वरूप सामाजिक गतिविधियों से बोझिल होकर दब जाता है एवं बाह्य गतिविधियाँ प्रमुख बन जाती हैं। समाज में यदि आध्यात्मिकता का प्रवेश होता है तो वह हितावह है। इससे समाज में परस्पर कलह की स्थिति उत्पन्न नहीं होती है। सौहार्द एवं सामञ्जस्य बना रहता है।

समाज तो ओसवाल, पोरवाल, पल्लीवाल, अग्रवाल, खण्डेवाल आदि जातियों से जाना जाता है, किन्तु धर्मसंघ किसी जाति विशेष में बँधा हुआ नहीं होता है। वह सभी जातियों के लिए खुला हुआ है। धर्म-साधना का किसी के लिए बन्धन नहीं है, किन्तु आवश्यकता है पूर्ण दृढ़ता के साथ जिनेन्द्रों की वाणी पर श्रद्धा कर व्रत-नियमों के साथ आचरण करने की। एक बार एकेडेमिक स्टॉफ कॉलेज, जोधपुर में मैं जैनधर्म की विशेषताओं पर प्रकाश डाल रहा था। जब मैंने जैनधर्म में सभी जातियों के लिए द्वार खुला होने की बात कही तो एक शिक्षक विद्वान् ने प्रश्न किया-क्या जैनधर्म अपना लें तो हमारा (अनुसूचित जाति/जनजाति का) विवाह जैन परिवार के साथ हो जाएगा? लोग इस प्रकार संघ में शामिल होकर सामाजिक पक्ष को ही आगे लाना चाहते हैं, जो उचित नहीं है। मैंने कहा-विवाह तो सामाजिक कार्य है, वह अपने-अपने समाज में होता है, उसका धर्मसंघ से सम्बन्ध नहीं है। धर्मसंघ में इतना अवश्य है कि कोई स्वधर्मी बन्धु यदि संकट में है, परिवार का पालन-पोषण नहीं कर पा रहा है तो स्वधर्मी-वात्सल्य के रूप में उसका अर्थसहयोग किया जा सकता है।

जैनधर्म को विश्वव्यापी बनाना है तो इसे जाति की संकीर्णता से ऊपर उठाना होगा। कोई भी जैनधर्म के सिद्धान्तों को समझकर, उन पर आस्था जगा सकता है एवं तदनुकूल अपना आचरण सुधार कर जीवन को ऊँचा उठा सकता है। श्री समीरमलजी महाराज ने वीरवालों एवं आचार्यश्री नानालालजी महाराज ने धर्मपालों को जैनधर्म से जोड़ा। जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा. भी सभी कौमों के बीच प्रवचन फरमाते रहे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. भी सभी को व्यसन मुक्त बनाने के साथ धर्ममार्ग में जोड़ते रहे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. भी व्यसनमुक्ति का अभियान सर्वत्र चला रहे हैं। जाट आदि अन्य जाति के मुमुक्षु भी संघ में दीक्षित होकर जिनशासन की सेवा कर रहे हैं। आचार्यश्री तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन में कई अजैन लोगों को जोड़ा।

समाज के ही लोग संघ में जुड़ते हैं, अतः वे संघ में भी समाज की गतिविधियों का आरोपण करने लगते हैं। कई बहिर्न धर्मसभा में आकर प्रवचन पर ध्यान कम एवं सगाई-सम्बन्ध की बातों पर अधिक ध्यान देती हैं। कोई साधु-साध्वियों से भी उचित रिश्ते के लिए वर या वधू हेतु पूछने लगते हैं। संघ का पावन स्वरूप तभी सुरक्षित रह सकता है, जब वह व्रतियों, श्रद्धालुओं से जुड़ा हो तथा जीवन-शुद्धि एवं आध्यात्मिक उन्नयन के लिए लालयित लोगों से जुड़ा हो। जो पापी हैं वे भी जीवन-सुधार के लिए संघ में प्रवचन आदि श्रवण कर अपने जीवन को बदल सकते हैं।

कई बार समाज के स्वच्छ निर्णयों में संघनिष्ठ लोगों की कट्टरता बाधक बनने लगती है। वे समाज में धड़े बनाना प्रारम्भ करते हैं एवं अपना वर्चस्व कायम करने का प्रयास करते हैं। संघ को सामाजिक गतिविधियों के सौहार्द पूर्ण सञ्चालन में बाधक नहीं बनना चाहिए। एक संघ के लोग सबके प्रति मैत्रीभाव से युक्त होकर चलें, तो कहाँ बाधा है।

धर्मसंघ में धनिकों का अधिक प्रभाव भी उचित नहीं। उनका कार्य संघ की आर्थिक गतिविधियों को सिञ्चित करने का होता है, किन्तु उनका सब स्थानों पर

हावी होना संघ के लिए कभी-कभी अहितकारी सिद्ध होता है। भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई के संस्थापक आदरणीय श्री सुगालचन्दजी जैन ने एक बार स्वयं लिखा था एवं मुझे भी कहा था कि जैन संस्थाओं के पदाधिकारी मद्यपान, धूम्रपान, अण्डे आदि का सेवन करने वाले न हों, इसका अभियान चलाया जाना चाहिए। इसका तात्पर्य है कि कई संस्थाओं में अपने आर्थिक बल एवं अन्य दबदबे के कारण ऐसे लोग इन संस्थाओं के मुखिया बन जाते हैं। समाज हित में स्थापित जैन संस्थाओं में इस प्रकार के पदाधिकारी जब पद पर आरूढ़ होते हैं तो समाज में सच्चरित्र की अपेक्षा धन का महत्त्व हावी होने लगता है, जो उचित नहीं है।

धर्मसंघों में ऐसे भी उदाहरण हैं जो पद धारण करने के पश्चात् वैराग्य की लहर में डूबकर विवेकपूर्वक अनगारधर्म में प्रव्रजित हुए हैं। ऐसे उदाहरण ज्ञानगच्छ में भी हैं, समता संघ में भी हैं और रत्नसंघ में भी हैं। अन्यत्र कई संघों में भी इस प्रकार के उदाहरण देखे जा सकते हैं।

एक संघ का दूसरे संघों के प्रति ईर्ष्या एवं द्वेष नहीं सद्भाव होना चाहिए। गुणियों के गुणों को सम्मान देकर संघ को आगे बढ़ाना चाहिए। ज्ञान की प्रवृत्ति किस प्रकार आगे बढ़े, देव-गुरु-धर्म पर श्रद्धा का भाव किस प्रकार सुदृढ़ हो, इसका चिन्तन रहना चाहिए। पूज्य गुरुदेव पर, जिनप्रणीत धर्म पर अविचल आस्था हो।

भगवान महावीर के समय एक ही संघ था, किन्तु शनैः शनैः संघ का विभिन्न सम्प्रदायों में बँटवारा हो गया। प्रत्येक सम्प्रदाय का अपना एक संघ है, जिसमें एक आचार्य या गच्छाधिपति होता है तथा साधु-साध्वी एवं श्रावक-श्राविका होते हैं। कहीं-कहीं कोई अङ्ग या घटक न्यून भी देखा जाता है। अब भी सम्प्रदायों ने संघ का स्वरूप ग्रहण कर रखा है। श्वेताम्बर एवं दिगम्बर सम्प्रदाय तो हैं ही इनमें भी अनेक सम्प्रदायें हैं। अनेक गण एवं गच्छ हैं। काल का प्रभाव, आचार-पालन एवं कुछ सिद्धान्त में भेद भी इन विभिन्न संघों के निर्माण में कारण बने हैं। साथ ही बड़ी व्यवस्था के सञ्चालन में

आ रही कठिनाई, अपने महत्त्व की स्थापना आदि कारण भी संघों की अनेकता में हेतु हैं। सम्प्रदायों के रूप में संघ भले ही बँटा हुआ हो, किन्तु आध्यात्मिकता का सन्निवेश आवश्यक है। जिस संघ में सामाजिक आङ्गुलियों का बाहुल्य है, धर्म के नाम पर भी समाज के लोगों को भारी संख्या में एकत्रित कर कार्यक्रमों को सामाजिक रूप दिया जाता है, वहाँ पर भी लोगों का जुड़ाव तो होता है, क्योंकि मनुष्य उत्सवप्रिय होने से विभिन्न समारोहों में पहुँचते हैं, किन्तु आत्मशुद्धि का लक्ष्य वहाँ कोसों दूर रहता है। बाह्य उत्सव, सामूहिक भोज एवं मिलने-जुलने का आनन्द लेकर लोग प्रसन्न हो जाते हैं। धार्मिक आयोजन भी सामाजिक आयोजन का रूप लेते जा रहे हैं। साधु-सन्त भी उत्सवों में रस लेते हैं। किन्तु आगन्तुक को दो-तीन सूत्र तो ऐसे प्राप्त होने चाहिए, जिससे वह अपने जीवन का निर्माण कर सके।

साधु-साध्वी संघ के आचार की रक्षा सुज्ञ श्रावकों पर निर्भर करती है तथा सुज्ञ साधु-साध्वी श्रावक-श्राविकाओं को सन्मार्ग पर बनाए रखते हैं।

जैनदर्शन में प्रयुक्त 'संघ' एक पारिभाषिक शब्द है जो मात्र एक संगठन का सूचक नहीं, अपितु यह आध्यात्मिक विकास में संलग्न व्रतधारियों का प्रेरक समूह है जो एक-दूसरे की साधना में उत्प्रेरक निमित्त होता है। बौद्धधर्म में भी भिक्षु-भिक्षुणियों का आध्यात्मिक संघ होता है, किन्तु आधुनिक युग में अनेक संघ प्रचलित हैं जो आध्यात्मिक नहीं होकर संगठन मात्र के सूचक हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ-राष्ट्र सेवा के लिए संकल्पित संघ है। मजदूर संघ, कर्मचारी संघ आदि कई संघ एक यूनियन या संगठन को इंगित करते हैं, जो किसी उद्देश्य को लेकर निर्मित होते हैं।

यहाँ पर इतना ही निवेदन है कि जैनधर्म में संघ का स्वरूप शुद्ध एवं स्वच्छ रखने के लिए इसका आध्यात्मिक स्वरूप बनाए रखने एवं उसे सामाजिक स्वरूप प्रदान करने से बचने का प्रयत्न आवश्यक है।

आगम-वाणी

डॉ. धर्मचन्द जैन

तवो जोड़ जीवो जोड़ठाणं, जोगा सुया सरीरं कारिसंगं। कम्मेहा संजमजोगसंती, होमं हुणामि इसिणं पसत्थं॥ -उत्तराध्ययनसूत्र, अध्ययन 12, गाथा 44 अर्थ-ब्राह्मणों! (मेरे यज्ञ में) तप अग्नि है, जीव-आत्मा ही अन्निकुण्ड है। मन-वचन-काया के योग कुड़छियाँ हैं, शरीर करीषाङ्ग-कण्डे हैं। कर्म ईंधन है, संयम की प्रवृत्ति ही शान्ति-पाठ है, इस प्रकार के हवन से तप रूप अग्नि को तृप्त करता हूँ, ऋषियों के लिए यह चारित्र्य रूप यज्ञ प्रशस्त (श्रेष्ठ) है।

विवेचन-उत्तराध्ययनसूत्र का बारहवाँ अध्ययन हरिकेशबल नामक जितेन्द्रिय मुनि से सम्बद्ध है। उनका जन्म चाण्डाल कुल में हुआ था, किन्तु एक घटना प्रसङ्ग एवं जातिस्मरण ज्ञान के अनन्तर मुनि बनकर उन्होंने तप संयम के बल पर मुनि जीवन को दीप्त किया। मासक्षण की तपस्या के पश्चात् वे भिक्षा के लिए एक यज्ञवाटिका में चले गए जहाँ ब्राह्मणों ने उन्हें आहार देने के लिए मना कर दिया। यही नहीं, उन्हें ब्राह्मण कुमारों द्वारा प्रताडित भी किया गया। अन्ततः ब्राह्मणों को मुनि की तपस्या का साक्षात् प्रभाव ज्ञात हुआ और सोमदेव ब्राह्मण ने सपत्नीक मुनि से क्षमायाचना की। तब मुनि ने उन्हें जो उपदेश दिया वह तत्कालीन वैदिक कर्मकाण्ड की परम्परा को आघात पहुँचाने वाला है।

मुनि ने उन्हें कहा कि आप लोग जो यज्ञ करते हो वह प्राणियों की हिंसा करने वाला है, अतः यज्ञ में पापकर्म अधिक हो रहा है।

याज्ञिकों ने पूछा-“फिर हम किस प्रकार से यज्ञ करें कि पापकर्म नष्ट हों। ऐसा श्रेष्ठ यज्ञ कौन-सा है?”

हरिकेशबलमुनि ने उत्तर में कहा-“जो षट्काय जीवों की हिंसा नहीं करता, झूठ नहीं बोलता, चोरी नहीं करता, स्त्री का सेवन नहीं करता, परिग्रह नहीं रखता, मान-माया आदि का स्वरूप जानकर त्याग करता है।

प्राणातिपात विरमण आदि पाँच संवरों से संवृत्त होता है, जीवन की आकांक्षा नहीं करता, शरीर के प्रति आसक्ति का त्याग करता है वह श्रेष्ठ यज्ञ करता है।”

पुनः प्रश्न किया गया कि उसे यज्ञ कैसे कहेंगे? उसमें ज्योति स्थान, सुवा (कड़छी), कारीषाङ्ग ईंधन और शान्ति पाठ क्या है?

उत्तर में हरिकेशबल मुनि ने जो कहा वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यज्ञ की भाषा में समझने वालों को मुनिश्री ने यज्ञ के रूपक से सम्पूर्ण जैन साधना को समझाया है, जिसका कथन प्रस्तुत गाथा में हुआ है।

वे कहते हैं इस श्रेष्ठ यज्ञ में बाह्य अग्नि की ज्योति नहीं है, वरन् तप की ज्योति है, तप करने वाला जीव होता है, अतः वह जीव ही उस तपःज्योति का स्थान (अग्नि वेदी) है। इस यज्ञ में हवन करने के लिए मन, वचन एवं काया ही कड़छियाँ हैं, क्योंकि इनके द्वारा ही तपाम्नि में आहुति दी जाती है। शरीर ही कारीषाङ्ग (कण्डे) है, क्योंकि शरीर के सहयोग से ही तपो रूप अग्नि प्रज्वलित होती है। कर्म ही ईंधन है। इस तप के द्वारा कर्मों को जलाया जाता है अर्थात् पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा की जाती है। संयम का पालन ही शान्ति पाठ है, संयम से विकार स्वतः शान्त हो जाते हैं। यह ऋषियों की दृष्टि में प्रशस्त होम (यज्ञ) है, अतः मैं यह यज्ञ करता हूँ।

भगवान महावीर के समय वैदिक कर्मकाण्ड के रूप में यज्ञों का प्रभूत प्रचलन था, जिसमें षट्कायिक जीवों की हिंसा होती थी एवं आध्यात्मिक दृष्टि से स्वयं को कोई लाभ नहीं होता था। प्रायः जो यज्ञ किए जाते थे वे लौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिए या उपद्रवों की शान्ति के लिए किये जाते थे। निर्ग्रन्थ श्रमणधर्म (जैनधर्म) ने इसे एक आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान किया, जिसका उल्लेख उपर्युक्त गाथा में हुआ है।

व्यवहार और निश्चय का सम्बन्ध शरीर और प्राण जैसा

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा.

- ॐ व्यवहार और निश्चय का सम्बन्ध शरीर और प्राण जैसा है। जीवन के लिए इन दोनों धाराओं की जरूरत होती है, क्योंकि शरीर नहीं तो प्राण कहाँ रहेंगे और प्राण न रहे तो शरीर की कीमत क्या? अगर जीवन ढँग से जीना है तो उसमें शरीर भी स्वस्थ रहना चाहिए और प्राण भी अबाधित गति से, निरापद ढँग से सञ्चालित होना चाहिये। तभी जीवन को स्वस्थ समझा जायेगा और अगर दोनों में से एक भी गड़बड़ा गया तो काम नहीं चल सकेगा।
- ॐ जहाँ व्यवहार में कृत्रिमता है वहाँ निश्चय में भी कुछ गड़बड़ है।
- ॐ चाहे लौकिक प्रवृत्ति हो अथवा आध्यात्मिक, उसके दो रूप स्पष्ट हैं एक व्यवहार और दूसरा निश्चय। निश्चय के लिए कोई समाज-व्यवस्था नहीं बनानी पड़ती, लेकिन व्यवहार के लिए समाज-व्यवस्था बनानी पड़ती है। निश्चय में जब प्रकाश पैदा हो जाता है तब वह दूसरों के चलाए नहीं चलता है, स्वचालित यन्त्र की तरह चलता है।
- ॐ जब तक समाज और समाज के सदस्य जीवन-निर्माण के मार्ग में आगे बढ़ने में गति कर रहे हैं, मन की मलिनताएँ और विकार खत्म नहीं हुए हैं तब तक व्यवहार को भी पकड़कर चलना होता है। जब उनका व्यवहार शुद्ध होता है, समाज का भी व्यवहार शुद्ध होता है।
- ॐ आत्म-शुद्धि हमारा निश्चय है। यह हमारा लक्ष्य है। जप, तप, सत्संग आदि धार्मिक प्रवृत्तियाँ जो हम करते हैं, इनका लक्ष्य जीवन में आत्मशुद्धि करना है। इन प्रवृत्तियों में चमक लाना निश्चय की भूमिका है और जब भूमिका यानी व्यवहार हमारा सुन्दर होगा, सुधरा हुआ होगा तो शनैः शनैः गति करते-करते एक दिन हम निश्चय की ठीक स्थिति पर पहुँच जायेंगे। इसलिए साधकों के सामने यह विचार आया कि धर्म केवल सुनने की चीज नहीं है, आचरण की चीज है, अमली रूप में लाने की चीज है। व्यवहार करते समय यह जरूर देखना है कि व्यवहार निश्चय के अभिमुख हो, पराङ्मुख न हो।
- ॐ बाह्य क्रियाकाण्डों की अपेक्षा कषायों को जीतना अधिक महत्त्वपूर्ण है, इसमें दो मत नहीं। किन्तु इससे बाह्य क्रियाओं की निरुपयोगिता सिद्ध करना ठीक नहीं। कषाय-विजय की इच्छा वाले साधक को तामसी भोजन के दुष्ट सङ्ग से और दिमाग को गलत विचारों से बचाने का अभ्यास करना आवश्यक होगा। सात्त्विक आहार, ज्ञानवान् सज्जनों की सङ्गति और शुभ कार्यों में जुड़ा रहना कषाय-विजय के अपेक्षित साधन हैं।
- ॐ अर्जुनमाली जैसा तीव्र कषायी भगवान् महावीर की देशना का निमित्त पाकर, तप-त्याग की भावना से कषायों को जीतकर वीतराग हो गया। सत्सङ्ग और बेले-बेले की तपस्या का व्यवहार उसे भी करना पड़ा।
- ॐ जिनशासन एकान्त व्यवहार या निश्चय का कथन नहीं करता। वह अपेक्षावादी-अनेकान्तवादी है। जिनशासन में व्यवहार और निश्चय दोनों से कार्य की सिद्धि मानी गयी है। निश्चय से साध्य तक पहुँचने में व्यवहार साधन है। ज्ञान मिलाने को शिक्षक के पास जाना पड़ता है। समुद्र पार करने में नाव का आश्रय लेना होता है और रोग मिटाने की दवा खानी पड़ती है। दवा खाने से पूर्व रोग का परीक्षण भी किया जाता है, जो कि सब व्यवहार है।
- 'नमो पुरिसवरगंधहृत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

साधना में आगे बढ़ें, साधना तारने वाली है

परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म. सा.

निमाज के सुशीला भवन में जहाँ आचार्य श्री हस्ती ने संलेखना-संधारा करके मृत्यु को महोत्सव बनाया, उसी स्थान पर गुरु हस्ती पट्टधर गुरु हीरा ने चातुर्मास किया और पर्याप्त समय लेकर प्रवचन करते-करते जन समुदाय को पर्व के दिनों में तो साधना करने की प्रभावी प्रेरणा की। 30 अगस्त, 2016 को फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

अनन्त ज्ञान से स्व-पर प्रकाशक बनने वाले अरिहन्त भगवन्त एवं उसी ज्ञान-परम्परा को आज तक कायम रखने वाले सन्त भगवन्तों के श्रीचरणों में कोटि-कोटि वन्दन!

तीर्थङ्कर भगवान महावीर की आदेश-अनमोल वाणी में अनेकानेक विषयों का कथन करने के बाद भी सार रूप में एक बात रखी कि हमारी यह आत्मा परमात्मा कैसे बने? संसार की जितनी भी कलाएँ हैं, ज्ञान हैं वे सब जीवन चलाने के साधन हैं। जीवन चलाने का ज्ञान अलग है और जीवन-निर्माण का ज्ञान अलग।

जीवन-निर्माण का ज्ञान अतिशयधारी और अनन्त ज्ञानी महापुरुष कह सकते हैं। जीवन-निर्माण के इस अनमोल समय में अनमोल आराधना के क्षण आप-हम-सबको प्राप्त हो रहे हैं। पर्वाधिराज पर्युषण की बात मैं अभी नहीं कहता, पर पर्व क्या, इसे कहने का कुछ मानस बना है।

पर्व क्या? पर्व को जानने-समझने की सबको जरूरत है। पर्व क्या, यह प्रश्न आपके समक्ष है। आपसे मैं पूछूँ-पर्व क्या, तो आपका क्या उत्तर होगा?

आप कोई उत्तर नहीं दे रहे हैं, कोई बात नहीं। आप ध्यान से सुनेंगे तो पर्व का हार्द भली-भाँति समझ सकते हैं। पर्व का अर्थ है-पूर्यति इति पर्व अर्थात् जो सब गुणों से परिपूर्ण करे, वह है पर्व। पर्व की परिभाषा में पवित्रं करोति भी आता है। पवित्रं करोति पुण्य है जबकि पूर्ण करने वाला शब्द पर्व है। वैसे पर्व के कई अर्थ हैं। आपकी-हमारी अंगुलियों में पर्व हैं। एक-एक अंगुली में पर्व हैं। अंगुली में जितने पर्व हैं, उतनी शक्ति है। बाँस

में भी पर्व हैं। पर्व यानी गाँठें। बाँस में जितनी गाँठें हैं, वह बाँस उतना ही मजबूत है।

पर्व से आप-हम-सब परिचित हैं। पर्व सबको प्रिय है। पर्व से सब परिचित भी हैं। पर्व आप सबको पसन्द है तो पर्व करता क्या है?

पर्व में ताकत होती है, तन की मजबूती के लिए कई पर्व हैं। विघ्न-निवारण के भी पर्व हैं। प्रलोभन के भी पर्व हैं। कुछ पर्व सामाजिक हैं तो कुछ धार्मिक। आर्थिक पर्व भी होते हैं तो राष्ट्रीय पर्व भी हैं। संसार में जितने पर्व हैं कहना होगा-वे सब सांसारिक पर्व हैं। सांसारिक पर्व विनाशी होते हैं, परिवर्तनशील होते हैं, सदा एक से नहीं रहते। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व आध्यात्मिक पर्व है। आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज तो पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के तीन विशेषण बताते थे। एक पर्व का विशेषण है-नज़दीक रहना। पर्व का दूसरा कार्य है-दूषण हटाना। पर्व का तीसरा कार्य है-कषायों का शमन करना।

पर्युषण पर्व की ये तीन विशेषताएँ हैं। संसार के अन्य जितने भी पर्व हैं वे सार्वकालिक नहीं हैं। आप चाहे जिस किसी नाम से कहें, वे आज हैं, आगे रहेंगे या नहीं, कहा नहीं जा सकता है। वे चाहे भैरूजी के नाम से हों या माताजी के नाम से अथवा और-और नाम से भी क्यों न हों, वे आज हैं आगे रहेंगे या नहीं, कहना मुश्किल है। दीपावली-होली जैसे पर्वों में भी बदलाव हुआ है। समय के साथ पर्वों में बदलाव स्वाभाविक भी है। पहले दीपावली कैसे मनाई जाती थी और आज?

एक समय था जब दीपावली पर हिसाब-किताब रखा जाता, बही-खाते बदले जाते, लेकिन आज हिसाब-किताब 31 मार्च को किए जाते हैं। क्या यह परिवर्तन नहीं? आपने बही-खातों में परिवर्तन मान्य किया है। होली पहले भी मनाई जाती थी, आज भी मनाई जाती है, परन्तु अन्तर है। पहले बुराई और पापों को जलाया जाता था, आज...? आज होली पर अभद्रता होती है, अच्छाई घटती रहती है। मेरा कहना इतना ही है कि पर्व चाहे जो हो, उसमें परिवर्तन आता रहा है। गोगानवमी-शीतलामाता को भी पर्व के रूप में मनाने वाले हैं, लेकिन इन त्योहारों में भी समय के साथ बदलाव आया है। काली पूजा हो या नागपंचमी इन पर्वों में भी परिवर्तन आया है। आप चाहे हिन्दुओं के पर्व लें या मुस्लिमों के अथवा ईसाइयों और अन्य-अन्य धर्मों के पर्व देख लीजिये, समय के साथ सभी में बदलाव आया है, परिवर्तन देखा जा रहा है।

एक बात यह भी है कि जो पर्व भारत में मनाए जाते हैं, वे चीन में नहीं मनाते। भय या प्रलोभन के वशीभूत अथवा स्वागत-सत्कार की दृष्टि से सांसारिक पर्व समय के साथ बदले हैं और बदलाव की यह प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। मारवाड़ में रामदेवजी का मेला लगता है, देश के दूसरे प्रान्तों में तथा विदेशों में रामदेवजी का मेला नहीं भरता। मतलब साफ है-सांसारिक पर्व समय के साथ बदले हैं, लेकिन पर्वाधिराज पर्युषण पर्व सबके लिए जैसे थे, वैसे आज भी हैं। क्यों? कारण क्या? अरे भाई! बात यह है कि पर्युषण पर्व सार्वकालिक है। आप चाहे छोटे हों या बड़े, स्त्री हों या पुरुष, हिन्दुस्तानी हों या अन्य किसी देश में क्यों न रहते हों, पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना में बदलाव नहीं आया है। जो भी पर्युषण पर्व की साधना करता है, वह आत्मा से परमात्मा बन सकता है। यह नहीं कि निमाज में साधना करने वाला तिरता है और ब्यावर में साधना करने वाला डूबता है। हर गाँव में भगवान का नाम सुबह-सुबह लिया जाता है वह चाहे

राम हो या कृष्ण, वह चाहे बुद्ध हो या महावीर। भगवान जो भी हैं, प्रातः उनका नाम लिया जाता है, किन्तु रावण-दुर्योधन-कंस का नाम कोई नहीं लेता।

एक भाई जेलर था। वह ड्यूटी पर चढ़ते ही रजिस्टर लेकर बैठता और एक-एक कैदी का नाम लेकर हाजरी भरता। नाम चाहे जो हो, पर जेल में चोर हैं, डाकू हैं, दुराचारी हैं, पापी हैं। जेलर ने सोचा-मुझे सुबह-सुबह इन दुराचारियों-पापियों, चोरों-डाकूओं के नाम लेना अच्छा नहीं लगता। जेलर भावुक था, उसने कलम तोड़ दी। बिना हाजरी लिए वह बैठ गया। वह बैठा ही नहीं रहा, अपितु मैं खानदानी और सुबह-सुबह चोर-डाकूओं के नाम क्यों लूँ? उसने नौकरी छोड़ दी, और घर जाकर बैठ गया।

संसार में ऐसे व्यक्ति भी होते हैं। व्यक्ति ही नहीं, ऐसे पर्व भी हैं, ऐसे क्षेत्र भी हैं जो किसी को इष्ट नहीं, परन्तु पर्वाधिराज पर्युषण पर्व सबके लिए हैं, सब क्षेत्रों के लिए भी हैं। इन पर्वों का क्षेत्र विशेष से न जुड़ाव होता है, न लगाव। ऐसा नहीं कि पुष्कर जाओ तो सिद्धि प्राप्त हो जाएगी। हाँ, कुछ तीर्थ या क्षेत्र साधना में सहायक तो हो सकते हैं, पर सहायक भी तभी होंगे जब करणी करोगे। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव सहायक बन सकते हैं, पर करना तो खुद ही को है।

आपने शायद सुना होगा-दुनिया में हर जगह से कोई न कोई सिद्ध हुआ है। वह जगह चाहे समुद्र हो या पहाड़ या फिर गुफा अथवा अन्य कोई स्थान। सब जगह से सिद्ध होते हैं, हुए हैं।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व सार्वकालिक है, सार्वदेशीय है, सार्वजनिक है। जिन्होंने पहले साधना की, उनकी मुक्ति हुई, आज जो भी साधना करेंगे, वे भी मुक्तिगामी हो सकते हैं। साधना के लिए न क्षेत्र, न काल और न व्यक्ति ही बाधक है। जो भी साधक साधना करता है, वह तिरता है। तिरने के लिए ज्ञान चाहिए। ज्ञानपूर्वक साधना है तो फिर बन्धन नहीं रह सकते। आज कई हैं जो कर्म-बन्धनों से जकड़े हुए हैं, सतत

पापकर्म करते रहते हैं, कर्मबन्ध करने में निमग्न रहते हैं, वे तिर नहीं सकते।

संसार से तिरना है तो ज्ञान करो। ज्ञान किसका करना? आज तो कई ऐसे भी मिल जायेंगे जो चाहे ज्ञान की बात हो या साधना की, वे तो भगवान के लिए भी कह देंगे कि भगवान है या नहीं, इसका किसको क्या पता है? आज भक्त भगवान को प्रत्यक्ष देखने की बात कर सकता है। राम हो या कृष्ण या शिव हो या अन्य-अन्य कोई भी भगवान, वह प्रत्यक्ष में देखना चाहता है। अजमेर के कवि जीतमलजी चौपड़ा ने अपनी काव्यधारा में ठीक ही कहा-

महाविदेह अरिहन्त विराजे, कुण देख्या-देखण जासी।
गुरुदेव की शरण लेय तो, तू खुद अरिहन्त बण जासी।।
गुरु भज-गुरु भज-गुरु भज मनवा, गुरु भज्या गुणधन पासी।।
गुरु ने ध्याकर, गुरु ने पाकर, तू खुद अरिहन्त बण जासी।।

भगवान हैं या नहीं, किसने देखा? हाँ, गुरु तो हैं। आप-हम गुरु की शरण ले लें तो बेड़ा पार है। भगवान आज भी हैं। अरिहन्त हैं, सिद्ध हैं। आप चाहे जो कहो-भगवान हैं। वे सिद्ध बुद्ध और मुक्त हैं। आप चाहे ईश्वर कहो या गॉड अथवा खुदा कहो। जिस किसी नाम से कहो, भगवान हैं और सदा रहेंगे। आप गिनती करना चाहो तो अनन्त सिद्ध हो गए, अरिहन्त भी अनेक हैं, आचार्य-उपाध्याय भी कई हैं और साधुओं की तो गिनती नहीं है।

आज ज्ञान नहीं होने से कई लोग भ्रमित हैं। क्यों, तो कोई नमोत्सु णं का जाप बताते हैं तो कुछ कहते हैं लोगस्स का ध्यान करो। कई हैं जो उवसग्गहर, भक्तामर, कल्याणमन्दिर करने की बात कहते हैं। अलग-अलग नाम और अलग-अलग जाप करने की बात से अनेक लोग भ्रमित हुए हैं, होते हैं।

एक भाई आया। वह बोला-बाबजी! मैं तो मन्दिर जाता हूँ। मन्दिर जाकर मैं जो कुछ करता हूँ, वह ठीक है। मन्दिर के भगवान तो मुझे कुछ कहते नहीं, लेकिन मैं जब भी किसी सन्त के पास आता हूँ तो पूछते

हैं-क्या करते हो? आपसे तो मन्दिर के भगवान अच्छे, जो न पूछते हैं न ही कुछ कहते हैं। यहाँ आप तो बिना पूछे रहते नहीं।

देखिये, पंचपरमेष्ठी परम वन्दनीय है, किन्तु सभी साधु एक से नहीं हैं। हम पूछते हैं या व्रत-नियम की कहते हैं वह हमारे लिए नहीं, बल्कि आपके स्वयं के लिए हितकारी होता है। आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज अपने-आपको देखने की बात कहते हैं। अपने-आपको देखने से मतलब है- “आत्मा का आत्मा से ज्ञान करना।” दूसरे शब्दों में कहें तो खुद को खुद से देखना। अपने आत्मस्वरूप को समझना आत्मा का ज्ञान है।

आत्मस्वरूप क्या? आत्मस्वरूप है- अनन्तज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त सुख और अनन्त शक्ति। आत्मा सर्वशक्तिमान है। जैसे सिद्ध और अरिहन्त सर्वगुणी हैं वैसे ही आत्मा को देखने वाला अपने-आपको देखता है। आप अनुमान तो करो कि मैं कहाँ हूँ?

आचार्य भगवन्त ने कहा था-आत्मा अनन्त सुखी है। एक दुःखी आदमी आचार्य भगवन्त के चरणों में पहुँचा। भगवन्त ने बातचीत करते आगत से कहा-तुम तो अनन्त सुखी हो। वह भाई बोला-बाबजी! आप म्हारी क्यूँ हँसी करो? मैं तो पहले से दुःखी हूँ। कभी आत्महत्या करने की सोचता हूँ तो कभी आप जैसे बड़े महाराज के पास आकर दुःख मुक्ति कैसे हो, जिज्ञासा लेकर आता हूँ। आप मुझे सुखी बताकर क्यों मेरे घाव पर नमक-मिर्च छिड़कते हो? मैं तो अपना दुःख दूर करने आपके पास आया, और आप हैं जो जले पर नमक छिड़क रहे हैं।

भगवन्त ने कहा- भाई, तू बाहर देख रहा है। तू यदि अन्तर से अपने-आपको देख ले तो फिर तेरे पास न दुःख रहेगा और न ही अशान्ति। तूने अपने-आपको दुःखी मान लिया है, इसलिए तू दुःखी है। भगवन्त ने उससे कुछ प्रश्न किए। पूछा-भाई तेरे पास मकान है

क्या ?

हाँ बाबजी! छोटा-सा मकान है।

फिर पूछा-घर में बर्तन तो हैं न ?

हाँ, बाबजी! घर में बर्तन भी हैं।

फिर प्रश्न किया-भाई! तेरे पास आँख, नाक, कान जैसी इन्द्रियाँ हैं या नहीं ?

उसका जवाब था-बाबजी! मेरी सभी इन्द्रियाँ बराबर काम कर रही हैं। मैं देख रहा हूँ, सुन रहा हूँ, बोल भी रहा हूँ।

भगवन्त ने कहा-भाई! तेरे पास मकान है, बर्तन हैं, सभी इन्द्रियाँ बराबर काम कर रही हैं, पर हजारों ऐसे लोग हैं जिनकी इन्द्रियाँ काम नहीं करती। इस संसार में हजारों लोग खुले आकाश में सोते हैं जबकि तेरे पास तो अपना मकान है। कई ऐसे हैं जिनके पास खाने को एक दाना नहीं, जबकि तेरे पास खाने के लिए है तो फिर तू अपने-आपको दुःखी क्यों कह रहा है ?

भगवन्त ने आगे कहा-देख भाई! सारी दुनिया के पदार्थ किनको मिले हैं ? क्या वे सब तुम्हारी तरह दुःखी हैं ? दुःख है, तो तृष्णा के कारण से है। तृष्णा के कारण तुमने अपने-आपको दुःखी मान लिया। देख, जिनके एक लाख बराणू हजार रानियाँ हैं फिर भी उसे तृप्ति नहीं, तो क्या वह सुखी है ? रावण के पास क्या कमी थी ? वह क्यों सीता का हरण करके लाया ? बात है-“घर की खाण्ड किरकिरी लागे, चोरी रो गुड़ मीठो, पर नारी रे कारणे जूत पड़न्ता दीठो।”

घर में पत्नी है। वह पतिव्रता है फिर भी आदमी दूसरे की बहू-बेटी को देखे तो कहना होगा-तृष्णा वश अपने-आपको वह दुःखी मानता है। अरे, जो पराई नार को माता-बहिन नहीं समझे, वह अपनी इज्जत खराब करता है। जो भी पराई बहन-बेटियों को छेड़ते हैं, वे भरे बाजार में जूते खाते हैं और बदनाम होते हैं।

आज विडम्बना है कि हर आदमी अपने-आपको दुःखी मानता है जबकि वह ज्ञानपूर्वक विचार करे तो सुखी होने का अनुभव कर सकता है। आप अपने-

आपको दुःखी मानते हो तो दुःखी हो और सुखी मानते हो तो सुखी हो।

ज्ञान आत्मा का निजगुण है। आप सबकी आत्मा में ज्ञान है। ज्ञान भी कैसा ? तो कहा-अनन्त ज्ञान है। आपके पास ज्ञान है, इसलिए आप-सबको ज्ञान का आदर करना चाहिए। आप ज्ञान का आदर करेंगे तो आपका ज्ञान पुष्ट होगा।

आप ज्ञानवान हैं। जड़ में ज्ञान नहीं होता। आपमें ज्ञान है या नहीं, आप स्वयं परीक्षा करके देखें।

मैं आपसे पूछूँ-हिंसा में पाप है या धर्म ? चोरी में पाप है या धर्म ? कुशील सेवन में पाप है या धर्म ? परिग्रह में रचे-पचे रहना पाप है या धर्म ?

आप सब जानते हैं कि हिंसा करना पाप है, झूठ बोलना पाप है, चोरी करना पाप है, कुशील सेवन करना पाप है। क्रोध करना पाप है, मान करना पाप है, माया करना पाप है, लोभ करना भी पाप है। आप ये सब बातें जानते हैं, मानते हैं फिर करते क्यों हैं ?

पूज्य गुरुदेव एक दृष्टान्त दिया करते थे। एक छह महीने का बालक नहीं जानता कि खाने योग्य क्या और नहीं खाने योग्य क्या, पर वह अनजान है इसलिए दूध के साथ खेलते-खेलते दूध चाटता है तो पेशाब के साथ खेलते-खेलते पेशाब भी चाट लेता है। उसे न गन्दगी का ज्ञान है और न ही सफाई का। छह मास का बच्चा शुद्धि-अशुद्धि नहीं जानता। वही बच्चा छह साल का हो जाय तो गन्दगी के पास जायेगा नहीं, और स्वयं होकर गन्दगी साफ करने लग जायेगा।

कदाचित् स्वयं साफ न करे तो माँ से कहता है-यहाँ गन्दगी है, उसे साफ करो। वह ऐसा क्यों कहता है ? उसे गन्दगी पसन्द नहीं।

आप सबको ज्ञान है कि हिंसा करना पाप है। क्रोध, मान, माया और लोभ करना पाप है। चोरी करना, झूठ बोलना, कुशील सेवन करना पाप है। आप कहते हैं, मानते हैं तो फिर करते क्यों हैं ?

आपको जो ज्ञान है उसे जीवन-व्यवहार में

चरितार्थ करने पर पाप-मुक्ति हो सकेगी और पर्युषण पर्व के इन दिनों में आप त्याग-तप के अभियान में आगे बढ़ सकेंगे।

आचार्य भगवन्त दृष्टान्त के माध्यम से कहा करते थे कि वर्षा में रेत गीली हो जाती है। बच्चे रेत से खेलते-खेलते गीली मिट्टी का घर बनाते हैं। क्या वह वास्तव में घर है? वह घर है तो किस काम का? क्या उस घर में रहा जा सकेगा? आप तुरन्त कह देंगे कि वह तो मिट्टी का घर है, रहने वाला घर नहीं।

एक बच्चा नक्शा बनाता है। नक्शे में नदी है, पर्वत है और-और प्रदेश दिखा सकता है। आप मुझे यह बताओ कि नक्शे की नदी का क्या उपयोग? क्या उसका पानी घर के किसी सदस्य के काम आयेगा? जैसे नक्शे की नदी किसी की प्यास नहीं बुझा सकती, वैसे ही हिंसा, हिंसा है और जहाँ हिंसा है वहाँ पाप है। हिंसा कभी धर्म नहीं हो सकती।

आप सब मनुष्य हैं, आप साधना कर सकते हैं, करनी चाहिए। साधना से ही मनुष्य-भव सुधर सकता है अतः आप ज्ञानपूर्वक साधना करें तो ही सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं।

कल एक भाई आया। उससे पूछा-क्या करते हो? वह भाई बोला-बाबजी! एक माला रोज जपता हूँ। जब से मैंने आचार्य भगवन्त से नियम लिया, मैं उस नियम का बराबर पालन कर रहा हूँ। वह भाई वर्षों से माला जपता है। मैं आपसे पूछूँ-आपका लड़का तीन

साल से कक्षा में फेल हो रहा है तो उस बच्चे को स्कूल से तो नहीं निकाला जाएगा?

एक अन्य भाई जो वर्षों से सामायिक करता आ रहा है, पर उसने सामायिक-साधना में वृद्धि नहीं की तो...? आप उसे क्या कहेंगे? इसे दूसरे तरीके से समझने का प्रयास करें। आज के बीसियों वर्ष पूर्व आप पचास रुपये कमाते थे, आज भी वही कमाई है तो क्या आपको उस कमाई से सन्तोष होगा?

आप सब ज्यादा से ज्यादा कमाना चाहते हैं तो फिर धर्म-साधना में सन्तोष करके क्यों बैठ जाते हैं? आप आत्मा हैं, आपको आत्मा से महात्मा और महात्मा से परमात्मा बनना है तो साधना में आगे बढ़ना होगा। त्याग-तप, व्रत-प्रत्याख्यान और साधना-आराधना में चाहे आप स्त्री हों या पुरुष, बच्चे हों या बड़े सबको आगे बढ़ना है। क्यों? तो साधना तारने वाली है।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की साधना में न जाति बाधक है, न क्षेत्र और न ही काल बाधक है। जो करेगा, वह तरेगा। हमारी संगत में आने वाले अनेकों लोगों ने व्यसनों का त्याग किया है। आपके यहाँ प्रायः व्यसन नहीं है, हैं तो भी बहुत कम, आप शेष व्यसन का त्याग करें, व्रत-नियम का पालन करें, सामायिक-प्रतिक्रमण, दया-संवर और साधना-आराधना में पुरुषार्थ का परिचय दें तो साधना से सिद्धि प्राप्त कर सकेंगे।



संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद हेतु प्रस्ताव आमन्त्रित

आगामी साधारण सभा में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर एवं संघीय संस्थाओं के अध्यक्ष का मनोनयन किया जायेगा। मनोनयन हेतु आप अपने प्रस्ताव बन्द लिफाफे में माननीय श्री मोफतराज जी मुणोत (संयोजक-संघ संरक्षक मण्डल), मुणोत विला, वेस्ट कम्पाउण्ड फील्ड लेन, 63-के, भूला भाई देसाई रोड़, मुम्बई-400026 (महाराष्ट्र) के पते पर 10 सितम्बर, 2021 तक भिजवाने का कष्ट करावें।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

साम्बत्सरिक पर्व : वैर की गाँठ गलाने का पर्व

महान् अध्यक्षवसायी श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती महान् अध्यक्षवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा निमाज, जिला-पाली (राज.) में 06 सितम्बर, 2016 को फरमाये गए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह सम्पादक श्री नीरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

क्षमा में जो होते हैं शूर, पापों से हो गए हैं दूर, कर्मों को कर दिया चकनाचूर, ज्ञान से हैं भरपूर ऐसे अनन्त उपकारी तीर्थङ्कर भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात् यतना का यन्त्र और क्षमा का शस्त्र प्रदान करने वाले जिनशासन गौरव, रत्नसंघ की सौरभ अनन्त-अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्.....।

बन्धुओं!

‘मिती मे सव्वभूएसु’ का नन्दी घोष करने वाला सांवत्सरिक महापर्व जिसकी आराधना तीर्थङ्कर भगवन्तों ने की, जिस पर्व की आराधना द्वादशाङ्गी की रचना करने वाले गणधर भगवन्त करते हैं, हम भी उस आराधना को करने के लिए आचार्य भगवन्त के चरणों में उपस्थित हो गए हैं। हमें आज सांवत्सरिक महापर्व की आराधना करने का अवसर प्राप्त हुआ है। हम आराधना के पहले इस बात का चिन्तन करें कि आराधना कौन करता है? आराधक कौन होता है? आराधना कैसे होती है?

आज का पर्व क्षुद्र से विराट्, ससीम से असीम अणु से विभु और अणु से प्रभु बनने का है। आज का पर्व ज्येष्ठ है, श्रेष्ठ है और बेस्ट है। क्योंकि आज पापों के रेस्ट का दिन है। आज ही के दिन कई भाई बारह प्रहर का पौषध करके बैठे हैं तो कोई अष्ट प्रहरिये पौषध की साधना कर रहे हैं। आप रोज पापों में व्यस्त रहते हैं, आज पाप-कार्यों से दूर हैं, इसलिए आज पापों से रेस्ट का दिन है। पाप-कर्म नहीं है, इसलिए इस दिन को श्रेष्ठ कह सकते हैं।

आज क्षमा का पर्व है। आज के पर्व को हम क्रोध-विजय का पर्व भी कह सकते हैं। आज के दिन

व्यक्ति क्षमा करता है, क्रोध नहीं करता, राड़ नहीं रखता, द्वेष के दावानल को भी क्षमा के जल से शान्त करता है, इसीलिए आज का पर्व क्षमा की आराधना का पर्व है। आज का पर्व वैर की गाँठ गलाने का पर्व है। आप प्रतिक्रमण करते हैं तब चौरासी लाख जीव योनि से क्षमायाचना करते हैं।

आज आप क्षमायाचना करेंगे, हम भी क्षमायाचना करेंगे। आज के दिन हम श्रमणों को पाँच आवश्यक काम करने होते हैं। हमारे विधान में प्रतिक्रमण के पहले-पहले लोच करना आवश्यक है। कोई सन्त या सती अस्वस्थ है, बीमार है, चाहे कैसी भी स्थिति में क्यों न हो लोच करना आवश्यक है। हर श्रमण-श्रमणी वह चाहे बाल है, वृद्ध है, रोगी है या नीरोगी, किसी के लिए शक्य है या अशक्य आज के दिन चौविहार उपवास करना आवश्यक है। इसी तरह आलोचना भी आवश्यक है। यह पर्व आत्मा को देखने का है। आलोचना किसकी करनी? हमें अपनी आलोचना करनी है। स्व-आलोचना आवश्यक है। आज अपनी आलोचना के बजाय दूसरों की आलोचना जो भी करता है वह पाप-कर्म से हल्का नहीं हो सकता। आज अपनी आलोचना करनी है। हर वर्ष आलोचना बोली जाती है, किन्तु आलोचना किसे कहते हैं?

आलोचना में एक वर्ण है ‘आ’ यानी मर्यादा। मर्यादा के साथ स्व-दोष देखना आलोचना है। आज औरों की आलोचना ज्यादा होती है, स्वयं की कम। गुरुदेव ने आज के इस पर्व पर हमें स्व-आलोचना करके परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए कहा है। आप और हम

क्षमा में जो होते हैं शूर, पापों से हो गए हैं दूर, कर्मों को कर दिया चकनाचूर, ज्ञान से हैं भरपूर ऐसे अनन्त उपकारी तीर्थङ्कर भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात् यतना का यन्त्र और क्षमा का शस्त्र प्रदान करने वाले जिनशासन गौरव, रत्नसंघ की सौरभ अनन्त-अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्.....।

बन्धुओं!

‘मिती मे सव्वभूएसु’ का नन्दी घोष करने वाला सांवत्सरिक महापर्व जिसकी आराधना तीर्थङ्कर भगवन्तों ने की, जिस पर्व की आराधना द्वादशाङ्गी की रचना करने वाले गणधर भगवन्त करते हैं, हम भी उस आराधना को करने के लिए आचार्य भगवन्त के चरणों में उपस्थित हो गए हैं। हमें आज सांवत्सरिक महापर्व की आराधना करने का अवसर प्राप्त हुआ है। हम आराधना के पहले इस बात का चिन्तन करें कि आराधना कौन करता है? आराधक कौन होता है? आराधना कैसे होती है?

आज का पर्व क्षुद्र से विराट्, ससीम से असीम अणु से विभु और अणु से प्रभु बनने का है। आज का पर्व ज्येष्ठ है, श्रेष्ठ है और बेस्ट है। क्योंकि आज पापों के रेस्ट का दिन है। आज ही के दिन कई भाई बारह प्रहर का

पौषध करके बैठे हैं तो कोई अष्ट प्रहरिये पौषध की साधना कर रहे हैं। आप रोज पापों में व्यस्त रहते हैं, आज पाप-कार्यों से दूर हैं, इसलिए आज पापों से रेस्ट का दिन है। पाप-कर्म नहीं है, इसलिए इस दिन को श्रेष्ठ कह सकते हैं।

आज क्षमा का पर्व है। आज के पर्व को हम क्रोध-विजय का पर्व भी कह सकते हैं। आज के दिन व्यक्ति क्षमा करता है, क्रोध नहीं करता, राड़ नहीं रखता, द्वेष के दावानल को भी क्षमा के जल से शान्त करता है, इसीलिए आज का पर्व क्षमा की आराधना का पर्व है। आज का पर्व वैर की गाँठ गलाने का पर्व है। आप प्रतिक्रमण करते हैं तब चौरासी लाख जीव योनि से क्षमायाचना करते हैं।

आज आप क्षमायाचना करेंगे, हम भी क्षमायाचना करेंगे। आज के दिन हम श्रमणों को पाँच आवश्यक काम करने होते हैं। हमारे विधान में प्रतिक्रमण के पहले-पहले लोच करना आवश्यक है। कोई सन्त या सती अस्वस्थ है, बीमार है, चाहे कैसी भी स्थिति में क्यों न हो लोच करना आवश्यक है। हर श्रमण-श्रमणी वह चाहे बाल है, वृद्ध है, रोगी है या नीरोगी, किसी के लिए शक्य है या अशक्य आज के दिन

सोलह तरह के मूर्ख

संकलनकर्ता : श्री डी. गौतमचन्द्र टोडरवाल

- ❧ दान देने में अन्तराय करने वाला।
- ❧ धर्म चर्चा के समय व्यर्थ बात करने वाला।
- ❧ भोजन करते समय क्रोध करने वाला।
- ❧ बिना कारण के लड़ाई-झगड़ा करने वाला।
- ❧ सज्जन पुरुषों का अपमान करने वाला।
- ❧ दान देकर अहंकार भाव करने वाला।
- ❧ उपकारी का उपकार नहीं मानने वाला।
- ❧ अपनी खूब प्रशंसा करने वाला।

- ❧ शान्त हुए क्लेश को वापस कहने वाला।
- ❧ संकरे मार्ग पर दौड़ने वाला।
- ❧ शक्ति होते हुए भी सेवा नहीं करने वाला।
- ❧ बिना कारण हँसने वाला।
- ❧ मार्ग में चलते हुए खाने वाला।
- ❧ बीती हुई बातों को फिर से सोचने वाला।
- ❧ बिना पूछे बोलने वाला।
- ❧ दो मनुष्य बात कर रहे हों तो बीच में बोलने वाला।

-विद्यानगर, ओसवाल गॉर्डन, थर्ड फ्लोर, आर.
ब्लॉक-301, कोरूकपेट, चेन्नई-600021

शुभयोग : सम्यक्त्व प्राप्ति एवं मुक्ति में साधक

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. द्वारा जोधपुर में वर्ष 2019 के चातुर्मास में 'सुपुण्यशाली की होती धर्म में मति' विषय से सम्बद्ध अनेक प्रवचन फरमाए गए थे। उनमें से इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर द्वारा किया गया है।

-सम्पादक

अशुद्धि को पहचानकर, शुद्धि के महत्त्व को जानकर अशुद्धि का परिपूर्ण समापन करने वाले अनन्त अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त, शुद्धि की ओर गतिशील आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त एवं मुनिप्रवरों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्-

अशुद्धि क्या? किसी में अस्वाभाविकता का आ जाना ही अशुद्धि है। हम में क्या अशुद्धि आ गई? कामना पूर्ति, संकल्प पूर्ति को अपना जीवन मान लिया। जिन मान्यताओं से भेद पोषित होता है, उनमें जीवन बुद्धि स्वीकार करने से कामना उत्पन्न होती है। 'एगो आया' आत्मा एक है। एक जीव से दूसरे जीव के प्रदेशों की संख्या में कोई अन्तर नहीं है। स्वाभाविक गुणों में कोई अन्तर नहीं है। नाम, कुल, रूप, सम्पत्ति आदि से भेद उत्पन्न होता है। इस जड़ में अपना अस्तित्व स्वीकार कर लिया। जड़ को ही जीवन मान लिया। चेतन का महत्त्व घट गया। फिर जड़ की कामना का जाल, संकल्पों का प्रवाह चलता रहा और हम पर के अधीन अर्थात् पराधीन रहे। जड़ के प्रभाव से प्रभावित जीव जड़ से ममता कर बैठता है, जड़ की कामना करने लगता है। यही पाप है, अशुद्धि है।

अशुद्धि के साधन तीन ही हैं-मन, वचन, और काया। चेतन और जड़ की जोड़ के तीन ही माध्यम हैं, इन्हें योग कह दिया। इनकी प्रवृत्ति ही जड़ चेतन का संयोग कराती है। 'संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा' संयोग के कारण ही दुःख परम्परा बताई गई है। जब तक सयोगी अवस्था है, कोई न कोई योग रहेगा ही और अयोगी अवस्था संसार में पाँच लघु अक्षर

से अधिक रह सकती नहीं। उस अयोग दशा की प्राप्ति शुक्ललेश्या में शुक्लध्यान के तीसरे चरण से होती है। उसके पूर्व तक प्रवृत्ति है, आस्रव है, इच्छा नहीं, कषाय नहीं, पर देवता आदि के द्वारा प्रश्न पूछे जाने पर द्रव्य मन की रचना, उपदेश, पृच्छा, उत्तर आदि में वचन योग और आवश्यक प्रवृत्ति में काययोग है। वहाँ केवल नाममात्र का आस्रव है, पूरा शुभयोग है, केवल साता का बन्ध होता है। शेष किसी भी कर्म प्रकृति का बन्ध नहीं होता, बन्ध के कारणभूत कषाय-आस्रव का पूर्ण निरोध है। इसीलिए उनके लिए शुभयोग संवर स्वरूप है। नाममात्र का आस्रव, विपुल संवर।

योग के दो ही भेद हैं-शुभ या अशुभ। सावद्य या निरवद्य तीनों योगों के उपभेद 15 होते हैं। उनमें कौनसे शुभ होते हैं, कौनसे अशुभ? ऐसा कोई विभाग नहीं होता है। जो प्रवृत्ति उदय प्राप्त कषाय आत्मा के अधीन होती है, कषाय से अनुरज्जित होती है, कषाय से प्रभावित होती है वही प्रवृत्ति अशुभ है, बन्धनकारी है। इसे विनय तप के भेदों में भगवान ने बहुत अच्छा फरमाया-

भगवतीसूत्र 25/7 और औपपातिकसूत्र में इसका विवेचन है। औपपातिकसूत्र में-किं तं मणविणए? मणविणए दुविहे पण्णत्ते। तं जहा-1. पसत्थमणविणए 2. अपसत्थमणविणए। से किं तं अपसत्थमणविणए जे य मणे 1. सावज्जे 2. सकिरिए 3. सकक्कसे 4. कडुए 5. पिटठुरे 6. फरुसे 7. अण्हयकरे 8. छेयकरे 9. भेयकरे 10. परितावणकरे 11. उद्धवणकरे 12. भूओवघाइए तहप्पगारं मणो णो पहारेज्जा, से तं अपसत्थमणोविणए।

मनोविनय दो प्रकार के हैं-प्रशस्त-मनोविनय, अप्रशस्त-मनोविनय। अप्रशस्त-मनोविनय क्या है? जो मन (1) सावद्य-पाप या गर्हित कर्म युक्त, (2) सक्रिय-प्राणातिपात आदि आरम्भ क्रिया सहित, (3) कर्कश, (4) कटुक-अपने लिए तथा औरों के लिए अनिष्ट, (5) निष्ठुर-कठोर-मृदुता रहित, (6) परुष-स्नेहरहित-सूखा, (7) आस्रवकारी-अशुभ कर्मग्राही, (8) छेदकर-किसी के हाथ, पैर आदि अङ्ग काट डालने का दुर्भाव रखने वाला, (9) भेदकर-नासिका आदि अङ्ग काट डालने का बुरा भाव रखने वाला, (10) परितापनकर-प्राणियों को सन्तप्त, परितप्त करने के भाव रखने वाला, (11) उपद्रवण कर-मारणान्तिक कष्ट देने वाला, (12) भूतोपघातिक-जीवों का घात करने के दुर्भाव वाला होता है, वह अप्रशस्त मन है। इसके विपरीत प्रशस्त मन असावद्य, निष्क्रिय, अकर्कश, अकटुक-इष्ट-मधुर, अनिष्ठुर-मृदुल-कोमल, अपरुष-स्निग्ध-स्नेहमय, अनास्रवकारी, अछेदकर, अभेदकर, अपरितापन कर, अनुपद्रवणकर-दयार्द्र, अभूतोपघातिक-जीवों के प्रति करुणा, शील-सुखकर होता है। यहाँ भी महापुरुषों ने 7वाँ भेद आस्रवकारी कहा। उसका अर्थ बताया 'अशुभ कर्मग्राही' और इसके विपरीत अनास्रवकारी का अभिप्राय अशुभ कर्म अग्राही अर्थात् अशुभ कर्म रुकने को संवर कहा। शुभ कर्म ग्रहण होने को आस्रव नहीं कहा। इस अपेक्षा शुभ योग संवर है।

वचन विनय के $12 + 12 = 24$ भेद तथा काय विनय के $7 + 7 = 14$ भेद बताए गए। भगवतीसूत्र, शतक 25, उद्देशक 7 में 1. पापक (पापकारी) 2. सावद्य 3. सक्रिय 4. सोपक्लेश 5. आस्रवकारी 6. विकारी (स्व-पर को पीड़ा देने वाला) 7. भूताभिशंकित (जीवों को शंकित करने वाला) ऐसे 7 भेद अप्रशस्त मन के किए। इस प्रकार मन, वचन, काय विनय के $7 + 7 = 14$ भेद बताए।

प्रतिसंलीनता के भेद में अकुशल मन का निरोध और कुशल मन का उदीरण कह दिया। कुशल मन, कुशल वचन, कुशल काया प्रतिसंलीनता तप है, जो बाह्य तप का अन्तिम भेद है। कर्मों की सकाम निर्जरा, अविपाक निर्जरा कराती है। प्रशस्त मन, प्रशस्त वचन और प्रशस्त काया आभ्यन्तर तप है, कर्मों की विपुल निर्जरा कराता है। शुभयोग को पुण्य, संवर और निर्जरा तीनों रूपों में आगमकारों ने स्वीकारा है। जिसे उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन की 10वीं पृच्छा में स्पष्ट कर दिया-वन्दनाएणं णीयागोयं कम्मं खवेइ अर्थात् वन्दना (विनय) से नीच गोत्र का क्षय करता है। वन्दना में मन वचन और काया तीनों का शुभयोग है। शुभयोग से निर्जरा होती है।

भगवतीसूत्र, शतक 18, उद्देशक 7 में, ठाणांगसूत्र के तीसरे ठाणे में दुष्प्रणिधान 24 ही दण्डक में बताया गया। मन का दुष्प्रणिधान संज्ञी पञ्चेन्द्रिय के 16 दण्डक में, वचन का दुष्प्रणिधान त्रस के 19 दण्डक में, काया का दुष्प्रणिधान 24 दण्डक में, किन्तु इन तीनों का सुप्रणिधान केवल और केवल मनुष्य में बताया गया।

उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन की 8वीं पृच्छा में स्पष्ट कह दिया-सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ। अर्थात् सामायिक में सावद्य योग, पापकारी प्रवृत्ति, अशुभ योग, मन, वचन, काया के दुष्प्रणिधान का त्याग होता है। इन तीनों का सुप्रणिधान ही सामायिक है, संवर है।

सुप्रणिधान, गुप्ति और समाधारणता को उत्तराध्ययनसूत्र से देखें। उत्तराध्ययनसूत्र के 24वें अध्ययन में 5 समिति अर्थात् जिसमें सम्यक् प्रवृत्ति है और तीन गुप्ति अशुभ से निवृत्ति है। गुप्ती णियत्तणे वुत्ता असुभत्तेसु सव्वेसु समस्त अशुभ से निवृत्ति गुप्ति है। इन प्रवचन माता की सम्यक् आराधना का फल अन्तिम गाथा में बताया-

एसा पवयणमाया जे सम्मं आयरे मुणी।

सो खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पंडिए।। त्ति बेमि।।

अर्थात् जो पण्डित मुनि इन प्रवचन माताओं का सम्यक् आचरण करता है, वह शीघ्र ही समग्र संसार (जन्म-मरण रूप चातुर्गतिक संसार) से मुक्त हो जाता है। उत्तराध्ययनसूत्र के 30वें अध्ययन की पहली गाथा में कहा-

जहा उ पावगं कम्मं रागदोससमज्जियं।

खवेइ तवसा भिक्खू तमेगगमणो सुण॥

अर्थात् जिस पद्धति से तप के द्वारा भिक्षु राग और द्वेष से अर्जित पापकर्म का क्षय करता है, उस (पद्धति) को तुम एकाग्रमन से सुनो। उत्तराध्ययनसूत्र के 30वें अध्ययन की 2 गाथा में कहा-

पाणिवह-मुसावाया अदत्त-मेहुण-परिग्गहा विरओ।
राईभोयण-विरओ जीवो भवइ अणासवो॥

अर्थात् प्राणिवध, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह से विरत तथा रात्रिभोजन से निवृत्त जीव अनास्रव अर्थात् आस्रव रहित होता है। उत्तराध्ययनसूत्र के 30वें अध्ययन की गाथा 3 में कहा-

पंचसमिओ तिगुत्तो अकसाओ जिइंदिओ।

अगारवो य निस्सल्लो जीवो होइ अणासवो॥

अर्थात् पाँच समिति तीन गुप्ति से युक्त, चार कषाय से रहित, जितेन्द्रिय, गर्व से रहित और निःशल्य जीव अनास्रवी होता है। उत्तराध्ययनसूत्र 30/6 में पापकर्म का अनास्रव होने पर कोटि भव सञ्चित कर्मों की क्षयपणा की बात कही। पहले देख ही चुके हैं कि उत्तराध्ययनसूत्र के 29/7 में प्रशस्त योग से युक्त अणगार के अनन्त घाति कर्मों के नाश का स्पष्ट उल्लेख है।

उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन की 41वीं पृच्छा सद्भाव प्रत्याख्यान, 58वीं पृच्छा कायसमाधारणता, 61वीं पृच्छा चारित्र सम्पन्नता और 73वीं शुक्लध्यान के चतुर्थ पाद में द्रष्टव्य है।

शैलेषी अवस्था में अयोग से चार अघाति कर्म नष्ट हो सकते हैं। ऐसा कहा है, किन्तु 4 घाति कर्मों का नाश प्रशस्त योग में ही होता है। आत्मा के परिणाम से ही घाति कर्मों की निर्जरा होती है। निष्कर्ष यह है-

1. शुभयोग संवर है। क्योंकि पापास्रव को रोकता है (उत्तराध्ययनसूत्र 29/55 से)

2. शुभयोग निर्जरा है, क्योंकि घाति पर्यवों को नष्ट करता है। (उत्तराध्ययनसूत्र 29/7 से)

यत्र शुभयोगस्तत्र नियमेन निर्जरा। शुभयोगः कर्मबंधहेतुरिति न्यायादेव आस्रवभेदे, किन्तु नियमतः अशुभकर्माणि त्रोटयतीति निर्जराकरणं तु समस्त्येव। उदयक्षयोपशमादिकतादृक्कारणद्वय-पूर्वकत्वात् शुभयोगः नानाद्रव्यसंभूतैकौषधेन जायमान-शोषण-पोषणवत् क्षयबंधात्मकः कार्यद्वयसम्पादनार्हः तथा चागमः-‘वन्दणएणं भंते! जीवे किं जणयइ? गोयमा! वन्दणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ, उच्चागोयं निबंधइ इत्यादि। (जैन सिद्धान्त दीपिका चतुर्थः प्रकाशः 27)

अर्थात् जहाँ शुभयोग होता है, वहाँ निर्जरा अवश्य होती है। शुभयोग शुभकर्मबन्ध का हेतु है, अतएव वह आस्रव के अन्तर्गत है, किन्तु वह निश्चित रूप से अशुभ कर्मों को तोड़ने वाला है, अतः निर्जरा का कारण तो है ही। विविध गुणवाली वस्तुओं से बनी हुई एक औषधि से जिस प्रकार रोग का शोषण एवं शरीर का पोषण दोनों कार्य होते हैं, वैसे ही शुभयोग उदय एवं क्षयोपशम आदि कारणद्वयपूर्वक होता है, अतः उससे कर्म का क्षय एवं बन्ध दोनों कार्य हो जाते हैं। जैसे शास्त्रों में कहा है-हे भगवन्! वन्दना करने से क्या होता है? गौतम! वन्दना करने से नीच गोत्रकर्म का क्षय एवं उच्च गोत्र का बन्ध होता है।

3. योग में 3 भेद नहीं होते-अशुभ, शुभ और शुद्ध। ऐसा किसी भी आगम में नहीं। आगम में देखें तो (चार्ट पृष्ठ 22 पर)-

परिणाम में वर्धमान परिणाम शुभ कहलाते हैं, हीयमान परिणाम अशुभ कहलाते हैं। तत्त्वार्थसूत्र (6/3) में भले ही शुभयोग को पुण्य का कारण कहकर आस्रव कह दिया, पर 9/1 में ‘आस्रवनिरोधः संवरः’ आस्रव का निरोध संवर है के पश्चात् समिति गुप्ति को संवर का

(पृष्ठ 21 का चार्ट)				
भगवतीसूत्र 25/6 से	परिणाम	3 प्रकार	हीयमान	अवस्थित, वर्धमान
भगवतीसूत्र 25/7 शतक 24 से गाथा 16, 17	अध्यवसाय	2 प्रकार	प्रशस्त	अप्रशस्त
उत्तराध्ययनसूत्र 34 गाथा 18, 19 एवं 61 से	लेश्या	2 प्रकार	प्रशस्त	अप्रशस्त या
गाथा 56-57 से			धर्म	अधर्म
भगवतीसूत्र 25/7	योग	2 प्रकार	शुभ	अशुभ या
औपपातिक आदि			प्रशस्त	अप्रशस्त
			कुशल	अकुशल
			निरवद्य	सावद्य
जीवाजीवाभिगम, प्रज्ञापना	उपयोग	2 प्रकार	साकार	अनाकार
			(ज्ञान, अज्ञान)	
उत्तराध्ययनसूत्र 31/6, 29/12	ध्यान	2 प्रकार	प्रशस्त	अप्रशस्त

भेद भी कहा (9/2)। समिति गुप्ति में अशुभ योग ही छूटता है, सयोगी अवस्था तक शुभयोग होता ही है अर्थात् तत्त्वार्थसूत्रकार भी शुभयोग को सातावेदनीय के आस्रव की अनिवार्यता से 6/3 में पुण्य का आस्रव कहते हुए भी पाप प्रकृतियों का बन्ध रोकने से, आस्रव रोकने से 9/2 में इन्हें संवर कह ही रहे हैं। वह शुभयोग संवर के साथ निर्जरा का साधन है, यह आगम, कर्मसिद्धान्त से स्पष्ट है।

इन जिनवचनों का अपलाप कर तत्त्वों का अयथार्थ श्रद्धान कर कोई सम्यग्दृष्टि कैसे बन सकता है? उत्तराध्ययनसूत्र 28/15 में कहा-

तहियाणं तु भावाणं, सन्भावे उवएसणं।

भावेण सहहंतस्स, सम्मत्तं तं वियाहियं।।

अर्थात् जीवाजीवादि पदार्थों के सद्भाव में स्वभाव या किसी के उपदेश से भावपूर्वक जो श्रद्धा की जाती है, उसे सम्यग्दर्शन कहते हैं।

आश्चर्य है कि सम्यग्दर्शन के नाम पर जिनवचनों का अपलाप कर अपना अहित किया जा रहा है। सम्यक्त्व जरूरी है तो उसके लिए सुपुण्य भी जरूरी है। द्वात्रिंशिका में क्या ही सुन्दर कहा गया-

किं च दानेन भोगाप्तिस्ततो भवपरम्परा

धर्माधर्मक्षयात् मुक्तिर्मुमुक्षोर्नेष्टमित्यदः
नैव यत्पुण्यबन्धोऽपि धर्महेतुः शुभोदयः।
वह्नेर्दाहं विनाश्येव नश्वरत्वात् स्वतो यतः।।

प्रथम द्वात्रिंशिका, (सिद्धसेन दिवाकर)

दान से क्या प्रयोजन है? भोग की प्राप्ति होगी, उससे भव की परम्परा होगी। पुण्य (धर्म) और पाप (अधर्म) के क्षय से मोक्ष होता है। अस्तु, मुमुक्षु उसको (दान या पुण्य को) नहीं चाहता है। ऐसा नहीं है, क्योंकि पुण्य का बन्ध भी धर्म का हेतु है, शुभ का उदय है। क्योंकि दाह्य (जलने वाले ईंधन या कचरे) के जल जाने से नश्वर होने से अग्नि का स्वतः ही विनाश हो जाता है।

सिद्धसेन जी दिवाकर (जैनधर्म का मौलिक इतिहास, भाग-2, पृष्ठ 523) विक्रम की प्रथम शताब्दी में हुए थे। तीक्ष्ण मेधा से 32 द्वात्रिंशिका की रचना की, उन्होंने भी पुण्य की उपादेयता स्पष्ट की।

शुभयोग किसी भी स्थिति में जीव का संसार नहीं बढ़ाता है। यह कहना कि शुभयोग से पुण्य का बन्ध होगा, उसे भोगने के लिए देवगति में जाना पड़ेगा और इस तरह संसार में अनादि काल से हम रुलते रहेंगे। संसार का प्रमुख कारण है, मिथ्यात्व (विपरीत मान्यता)। यही सबसे बड़ा कारण है, फिर कहें तो मोह और ज्यादा से

ज्यादा व्यापक करें तो 4 घाति कर्म ये सब पाप हैं। पुण्य तो एक मात्र अघाति कर्मों में होता है, जो आयु पूर्ण के साथ पूरा होकर अरिहंत भगवान को सिद्ध भगवान बनाने में सहकार देता है।

गलत धारणा, विपरीत मान्यता, तत्त्वों की गलत श्रद्धा मिथ्यात्व से छुटकारा नहीं दिला सकती। उसी सम्यग्दर्शन के लिए, संयम के लिए, मिथ्यात्व की क्षपणा कर क्षपक श्रेणी और शुक्ल ध्यान के लिए शुभयोग सहकारी, परम उपकारी है।

सूक्ष्म सम्पराय चारित्र 2 प्रकार का कहा जाता है—विशुद्धयमान एवं संक्लिश्यमान। उपशमश्रेणी या क्षपक श्रेणी पर चढ़ते हुए लेश्या की विशुद्धि, प्रशस्त अध्यवसाय और शुभ परिणाम से उत्थान होता है, गुणश्रेणियाँ होती हैं, विशुद्धि अनन्तगुणी बढ़ती है।

किन्तु ग्यारहवें गुणस्थान में अवस्थित परिणाम से उपशम श्रेणी वाला आगे नहीं जा सकता, मोहनीय कर्म को सर्वोपशमना से उपशान्त किया था। उस उपशान्त अवस्था का काल पूर्ण होने पर, सत्ता में विद्यमान सूक्ष्म लोभ के उदय का प्रारम्भ होता है अतः पुनः दसवाँ गुणस्थान प्राप्त होता है। अभी कषाय बढ़ रहे हैं। संज्वलन लोभ सूक्ष्म सम्पराय में है, पर शुक्लध्यान नहीं है। प्रतिसमय अनन्त गुणा संक्लेश (कषाय) बढ़ रहा है, योग शुभ नहीं, अशुभ हो रहे हैं। बँधने वाली 17 प्रकृतियों की स्थिति बढ़ रही है। पाप की 14 प्रकृतियों का अनुभाग बन्ध अधिक अधिक हो रहा है। पुण्य की तीनों प्रकृतियों का अनुभाग कम कम हो रहा है। वहाँ से, पहले गुणस्थान तक गिरने पर प्रायः ऐसा ही होता है। पहले गुणस्थान में जीव को ऊपर उठने का पूरा मौका सन्नी पञ्चेन्द्रिय पर्याप्त भव में ही मिलता है। असन्नी में भव भ्रमण सन्नी की अपेक्षा अनन्त गुणा अधिक ही होता है। प्रत्येक स्थान पर ऊपर उठने की योग्यता का सम्पादन शुभयोग ने ही करवाया, फिर अनेकों भवों में से किसी एक भव में विशुद्धि विशेष होने पर यथाप्रवृत्त करण का अवसर होता है। राग द्वेष की गाँठ तक पहुँचने का सुअवसर श्वेताम्बर

साहित्य में और प्रवृत्तियों को घटाते-घटाते संक्लेश को कम करने रूप अधः प्रवृत्त करण का नाम दिगम्बर आम्नाय में है। इस करण में किसी भी परावर्तमान पाप प्रकृति का बन्ध नहीं करते हुए अपरावर्तमान पाप का अनुभाग घटाते हुए शुभयोग से विकास हो ही रहा था कि परिणामों की धारा टूट गई, भावों में वृद्धि रुक गई, विशुद्धि पर रोक लग गयी। यह कार्य अशुभ योग ने किया। योग का नेतृत्व उपयोग के हाथ से, विवेक की आँख से, प्रज्ञा के नेतृत्व से छूटकर कषाय के हाथ में चला गया। कषाय के अधीन अशुभ योग ने उसे बढ़ने से रोका, पुनः नीचे परावर्तमान पाप प्रकृतियों का बन्ध, पाप का तीव्र अनुभाग, कोटाकोटि सागरोपम से अधिक स्थिति बन्ध आदि आदि जञ्जाल में पहुँचा दिया।

अनन्त बार यथाप्रवृत्तकरण करके भी अपूर्वकरण में नहीं जा पाए, इसका कारण एकमात्र शुभयोग, प्रशस्त अध्यवसाय, विशुद्ध होती हुई लेश्या, शुभ परिणाम की धारा नहीं, अपितु उस धारा का खण्डित होकर इनसे विपरीत में गतिशील होना अशुभ योग है। इस यथाप्रवृत्तकरण में उदारता का रस, शान्ति का रस, स्वाधीनता का रस प्राप्त हुआ। उस शान्ति को वर्धापित कर चिरशान्ति में प्रवेश के साथ प्रीति का रस प्रकट नहीं हुआ इस अशुभता से संसार में रुके रहना पड़ता है, शुभ से नहीं। शुभ की उच्चता के एक निश्चित स्तर की प्राप्ति के पूर्व अशुभता में जाने से आंशिक शुभता सफल नहीं हो पायी। पर संसार परिभ्रमण में वह शुभयोग जिम्मेदार नहीं। अल्पता को यदि बढ़ाते-बढ़ाते विशिष्ट कर लेते, सातिशय पुण्य तक पहुँच जाते तो सम्यग्दर्शन प्रकट होता ही। इसीलिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शब्द है 'सुपुण्णाणं' थोड़ी-सी गरज से, आंशिक पुण्य से उत्थान सम्भव नहीं है। आगम वर्णन करता है कि सम्यग्दर्शन प्राप्त हो गया, देशोन अर्द्ध पुद्गल परावर्तन में मोक्ष का प्रमाण-पत्र भी मिल गया, संयम भी प्राप्त कर लिया, अप्रमत्त अवस्था में आहारक लब्धि प्राप्त कर 14 पूर्वों का ज्ञान भी कर लिया, पर प्रमत्त अवस्था में लब्धि उपयोग कर अशुभ

योग में जाने से, पुनः नहीं सम्भल पाने से, प्रायश्चित्त द्वारा विशुद्धि कर शुभयोग में नहीं आने से अनन्त जीव नीचे गिरकर आज निगोद के रूप में लम्बी अवधि तक, अनन्त अवसर्पिणी, उत्सर्पिणी तक अनन्त भव भी कर सकते हैं, कर लेते हैं। क्यों? अशुभ योग, अप्रशस्त लेश्या, अनन्तानुबन्धी आदि तीव्र कषाय, मिथ्यात्व मोहनीय कर्म, सब अशुभ ही तो हैं।

सम्यक्त्व में आयु बन्धे अर्थात् आयु के बन्ध के समय पाप, आस्रव, बन्ध में हेय बुद्धि तथा पुण्य, संवर, निर्जरा, मोक्ष में उपादेय बुद्धि हो। निर्दोष परमात्मा है, निर्दोषता के लिए सजग महात्मा है, निर्दोष बनाने का मार्ग धर्म है इनका श्रद्धान हो। उदारता, शान्ति, स्वाधीनता के साथ प्रीति का रस हो। शम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था के लक्षण हों, 7 प्रकृतियों का क्षयोपशम, उपशम आदि हो। इतना सातिशय पुण्य होने पर जीव आराधक बनता है। पण्डित मरण का वरण कर वह सीमित भव में मुक्ति का अधिकारी बन जाता है। इस भव से पन्द्रहवें भव तक में छुटकारा मिलने ही वाला है और जीव भवभ्रमण, संसार के दुःखों का अन्त करने का, अव्याबाध सुख प्राप्त करने का अधिकारी बनता है।

मिथ्यात्व की सत्ता सिर्फ और सिर्फ मनुष्य गति में समाप्त हो सकती है, सिर्फ और सिर्फ प्रशस्त लेश्या में समाप्त हो सकती है। सिर्फ और सिर्फ शुभयोग में समाप्त हो सकती है। यदि अगले भव की आयु अथवा जिननाम का बन्ध नहीं किया तो अन्तर्मुहूर्त्त में केवलज्ञान और आयु पूर्ण होने पर मुक्ति। आयु या जिननाम पहले बाँध रखा हो तो अगले कर्मभूमि मनुष्य के भव में अवश्य मोक्ष में जाएगा।

अत्थे गइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ।
सोहीएयणं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ।

उत्तराध्ययन सूत्र 29/1

अर्थात् उसी भव में सिद्ध हो जाते हैं। विशोधि से विशुद्ध होने पर तीसरे भव का अतिक्रमण नहीं करते।

आगम में स्पष्ट है, कर्म साहित्य में स्पष्ट है, व्याख्या ग्रन्थों में स्पष्ट है, दिग्म्बर ग्रन्थों में, प्राचीन उपलब्ध प्रमाणों में स्पष्ट है-परन्तु वाणी का अपलाप कर, जिनवचनों के विपरीत प्ररूपण कर शुभयोग या पुण्य को संसार बढ़ाने वाला कहना उत्सूत्र प्ररूपण है, उन्मार्ग प्ररूपण है। बौद्धिक कसरत से कुछ समता एवं शान्ति दिख सकती है। आत्म हित होने के लिए सही प्ररूपण परम आवश्यक है, अनिवार्य है। इसीलिए चल रहा है- 'जिणवयणे अणुरत्ता।'

दशाश्रुतस्कन्ध की 5वीं दशा चित्त समाधि की अन्तिम गाथा में मोह नाश 'मोहणिज्जे खयं गए'-बहुत अच्छी उपमाओं के साथ मोह नाश से संसार नाश बताया। मोह पाप कर्म है, मोह गया तो अन्तर्मुहूर्त्त में शेष तीन घातिकर्म गये। और आयु के अन्तिम 5 लघु अक्षर तक शुभयोग जीव का पूरा साथ निभा उत्कृष्ट चारित्र में शैलेशीकरण, योग निरोध, अलेश्यी, अनाहारक अवस्था का अधिकारी बनाकर छूट जाता है। योग निरोध से जीव अयोगी बन सिद्ध, बुद्ध मुक्त होने में 5 लघु अक्षर काल पर्यन्त शुक्लध्यान के चौथे चरण को ध्याता हुआ अल्पवेदना महानिर्जरा द्वारा सम्पूर्ण कर्म स्कन्ध अजीव से छुटकारा पाकर शाश्वत धाम में, अपने शुद्ध स्वभाव में प्रतिष्ठित हो जाता है।

पूर्णता में पहुँचाने वाले शुभयोग, यथाख्यात चारित्र, शुक्लध्यान, पुण्य, संवर, निर्जरा, चारित्र आत्मा, वीर्य आत्मा अपना कार्य पूरा कर देते हैं, वे मोक्ष में नहीं है। साधन साध्य को प्राप्त करा देते हैं। साध्य मोक्ष है, लक्ष्य मोक्ष है।

साधन पुण्य, संवर निर्जरा है। साधन में साध्य बुद्धि नहीं रखते हैं, साधन से साध्य प्रकट करने के लिए पुण्य की उपादेयता देख रहे हैं।

सबसे अधिक संसार सुख, सर्वार्थ सिद्ध देव लहे। निर्दोषता, निर्काक्षता, निर्मल मुनि इक वर्ष लँघे। अमृत प्रपा, गुरु की कृपा, मुदिता अनुपम और कहाँ।।



तपसाधना और वृत्ति संक्षेप से निर्जरा

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के शिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. द्वारा 28 जून, 2019 को फरमाए गए प्रवचन का संकलन श्री नौरतनमलजी मेहता, जोधपुर ने किया है।

-सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

जीवन जीने के लिए नित्य-निरञ्जन-निराकार पद की उपासना करने वाले सन्त भगवन्तों को वन्दन!!

कर्म-रज से रहित होने के लिए, जीवन को रमणीय बनाने के लिए प्रत्येक क्षण को श्रेष्ठ बनाने के लिए प्रयासरत साधकों के लिए प्रभु ने निर्जरा की चर्चा की है। प्रभु ने कहा-अगर तुझे हर पल को रमणीय, श्रेष्ठ और सुन्दर बनाना है तो जीव तू निर्जरा के काम में लग। निर्जरा जीव को रमणीय, पापी को पावन बनाती है एवं हर कार्य को उत्तम बनाती है।

निर्जरा कैसे? ज्ञानियों ने समाधान देते कहा-जहाँ-जहाँ और जब-जब तुझे साधना करनी है तो उसमें निर्जरा की आवश्यकता है।

निर्जरा हेतु तप-साधना

निर्जरा की चर्चा हम बारह भावना के माध्यम से पिछले कुछ दिनों से करते आ रहे हैं। ज्ञानियों ने स्पष्ट कहा है-जीव तू निर्जरा की इच्छा करता है तो सबसे पहले आने वाले कर्मों को तो रोक और भीतर में जो-जो कर्म बँधे हैं उन्हें नष्ट कर। ज्ञानियों ने हमें रज-रहित होने की प्रेरणा दी है। जहाँ-जहाँ जीव पाप-कर्म करता है। वहाँ-वहाँ कर्म बन्ध होता है तथा ज्ञानपूर्वक तप से कर्मों की निर्जरा होती है। निर्जरा से कर्म क्षय होता है।

पिछले कई दिनों से चर्चा चल रही है कि बाहर की शुद्धि चाहिए तो अन्तर की शुद्धि भी उतनी ही जरूरी है। निर्जरा के बारह भेद हैं। बारह भेदों के भी छह-छह भेद कर दिए। छह बाह्य भेद हैं तो छह आभ्यन्तर। भगवान जानते थे कि बाहर की शुद्धि तो आदमी कर

लेगा, लेकिन भीतर को शुद्ध बनाना हो तो तप करना आवश्यक है।

तप में तीन बातों का ध्यान

तप करते समय तीन बातों का ध्यान रहना चाहिए। आपको याद होगा-तप करने में तीन बाधाएँ हैं, पहली बाधा है-दुर्ध्यान। तप करते समय भीतर में ध्यान विपरीत नहीं चला जाय, इसका विशेष रूप से ध्यान रहना चाहिए। तप के प्रति मन में दुर्भावना आए यही दुर्ध्यान है। ऐसा तप करने से कोई फायदा नहीं होने वाला। किसी ने उपवास तो कर लिया, अब भूख लग रही है, क्या करूँ? क्या खाना खा लूँ? ऐसे एक नहीं कई विचार आते हैं, वे सब दुर्ध्यान हैं।

दूसरी बाधा है-योग विरुद्ध प्रवृत्ति। योग विरुद्ध तप है तो वह तप नहीं, सन्ताप बन जाता है। योग विरुद्ध प्रवृत्ति का मतलब क्या? इसका सीधा-सा ज़वाब है-मन और वचन में कषाय नहीं हो और काया में प्रमाद नहीं हो।

तीसरी बाधा है-इन्द्रियों पर अधिक दबाव अतः जितनी शारीरिक क्षमता है, उतना तप किया जाना श्रेयस्कर होता है। तप क्षमतानुसार हो। तप करते हुए क्रोध-मान-माया-लोभ आ रहे हैं तो तप जीवन में ताप और सन्ताप बढ़ाने वाला होगा। तप करने वाला सोचे, तप मेरे जीवन के भविष्य को सँवार देगा और मेरे जीवन में जो भी भूलें हो रही हैं उन्हें नष्ट भी कर देगा। इस वृत्ति से जैसा मिला उसमें तप-साधक को सन्तुष्टि होगी। तप वर्तमान के लिए शुभ है तो भविष्य के लिए भी श्रेष्ठ रहेगा। यही तप की विशेषता है।

तप के भेदों की चर्चा चल रही है। अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचरी तप का विवेचन चल रहा है। भिक्षाचरी क्या? भिक्षाचरी में किसी वस्तु की माँग करने की बजाय जो मिला है-जैसा मिला है उसमें सन्तोष करे। साधु के लिए भिक्षाचरी का विधान है। साधु घर-घर घूमकर गवेषणा करता है और जो भी मिल जाय उससे काम चलाता है।

वृत्ति संक्षेप

साधु के लिए भिक्षाचरी है, श्रावक के लिए क्या है? श्रावक घर-घर से माँगकर नहीं लाता। श्रावक के लिए वृत्ति-संक्षेप है। वृत्ति-संक्षेप भी तप है। वृत्ति-संक्षेप घर में तो फिर भी पल जाती है। श्रावक की थाली में जो आ गया उससे ज़्यादा न तो माँगूंगा, न ही लूँगा। कई गृहस्थ हैं जो दुबारा नहीं लेते। एक बार थाली में जो आ गया वह चाहे मीठा है या नमकीन है, रोटी है या सब्जी, एक बार थाली में आ गया उससे सन्तोष कर लें, यह वृत्ति-संक्षेप है। वृत्ति-संक्षेप भी तप है। यह घर पर सहजता से हो सकता है, बाहर तो परोसने वाला गर्मा-गर्म एक-एक फलका परोसता है, इसलिए बाहर के खाने में वृत्ति-संक्षेप कम लोगों से निभता है। घर वालों को तो पता रहता है जबकि बाहर वालों को इस तप का भान तक नहीं रहता।

आदमी घर में रहते वृत्ति-संक्षेप तप करता है, कर सकता है, वह बाहर में आगार रखता है। वृत्ति-संक्षेप केवल खाने-पीने तक ही नहीं, आदमी की जो-जो वृत्तियाँ हैं उनको संक्षिप्त करना तप में शुमार है। आज क्या होता है? कोई खाने पर बैठा है तो एक की जगह दो-तीन सब्जियाँ चाहिए। फिर आचार अलग, चटनी अलग, नीबू अलग से और न जाने कितनी-कितनी क्या-क्या माँग करता है इसका कोई हिसाब नहीं। तप है सीमित करना। जो-जो भी आप सीमित करते जाएँगे उतनी-उतनी मात्रा में निर्जरा होती जाएगी।

आज जीवन-व्यवहार में जहाँ देखो वहाँ व्यक्ति वृत्तियों को बढ़ाता जाता है। शादी-विवाहों में दो सौ-

ढाई सौ पकवान किस बात का संकेत है? शादी-विवाह में पकवान ही नहीं बनते, कई स्थानों पर तो पाँच-पाँच लाख तो पानी पर खर्च हो जाते हैं। छोटे-बड़े सबकी जिद्दा की वृत्तियाँ बढ़ती जा रही हैं। भगवान कहते हैं-वृत्तियाँ सीमित करो।

आज घर-घर में बहुत-सी ऐसी चीज़ें हैं जो काम तक नहीं आती, कम-से-कम उन चीज़ों को तो कम करो। आज कई लोग हैं जो बिना मतलब पाप के साधन बढ़ा रहे हैं। आज खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने, सुख-सुविधा के साधनों में जो भी पाप हो रहा है उसको सीमित करें न कि वृत्तियाँ बढ़ाते चले जाएँ।

आज की युवा पीढ़ी इकट्ठा करने में विश्वास करती है जबकि पुरानी पीढ़ी इकट्ठा करने में नहीं, इकट्ठा रहने में विश्वास करती थी। आज इकट्ठा करने के चक्कर में इकट्ठा रहना कठिन हो रहा है। आज वृत्तियाँ विस्तृत हो रही हैं जैसे ही विचार संकुचित होते जा रहे हैं। ज्ञानीजन निर्जरा की बात कह रहे हैं। आप इस बात को जाने, समझें और जीवन-व्यवहार में चरितार्थ करें।

पंच महाव्रत सञ्चयन, समिति पंच स्वीकार

जीव तूँ निर्जरित होना चाहता है तो यह ध्येय लेकर चल कि अपनी वृत्तियाँ संक्षिप्त हों और विचार विस्तृत। विस्तृत विचार वाला ज़्यादा निर्जरा करता है। विचारों में उदारता से जीवन पवित्र बनता है। आप लक्ष्य बनाएँ कि वृत्तियों का संक्षिप्तीकरण हो। आस्रव की चीज़ें जो मतलब की नहीं हैं उनका तो त्याग करें। घर में चार चाकू से काम चल सकता है और चौबीस हों तो?

असंयम से आस्रव बढ़ेगा। निर्जरा करनी हो तो वृत्तियों को संकुचित करें। भिक्षाचरी में इन्द्रियों को नियन्त्रित रखना पड़ता है। एक सन्त गोचरी के लिए गया। वह इतना दक्ष-इतना पटु कि घर में प्रवेश के साथ रसोई पर नज़र। रसोई में नज़र पदार्थ पर। बहराने वाली बाई पर नज़र तक नहीं। बाहर आकर किसी ने पूछ लिया-बहराने वाली बाई किस अवस्था की थी? क्या वस्त्र पहने हुए थे? शृङ्गार कैसा था? सन्त की केवल

और केवल पदार्थों पर नज़र। बाथरूम, बेडरूम पर नज़र नहीं।

सन्त गोचरी लेता हुआ सजग रहता है। अगर सजगता नहीं तो गृहस्थ फ्रिज खोलकर कोई चीज़ बहरा सकता है। साधु सजग तो रहे ही, जागृत भी रहे। उसकी नज़र खाद्य-पदार्थों पर रहती है।

साधु चोर की तरह चुपचाप आता है और गाय जैसे बाँटे पर नज़र रखती है, वह आजू-बाजू नहीं

देखती, इसी तरह साधु भी चौकन्ना रहता है। साधु के लिए भिक्षाचरी है, श्रावक के लिए वृत्ति-संक्षेप। आप श्रावक हैं इसलिए वृत्तियों को सीमित करें और जीवन में अनावश्यक इकट्ठा नहीं करें। जो अधिक हैं उनका विसर्जन कर दें, त्याग कर दें, आप निर्जरा करके रज-रहित बनने का प्रयास करें।

इसी मंगल मनीषा के साथ.....

सभी जीवों से रखो मैत्री तुम

श्री मोहन कोठारी 'विन्वर'

सभी जीवों से रखो मैत्री तुम, महावीर की वाणी है, इनको भी जीने का हक है, इनकी जान बचानी है। सभी जीवों से रखो मैत्री तुम.....।।टेर।।

घात करो मत इन जीवों की, निरीह जीवों पर रहम करो, धरती की ये शान जीव हैं, तुम इन पर अभिमान करो। पर्यावरण में हैं सहयोगी, बात ध्यान में है, सभी जीवों से रखो मैत्री तुम.....।।1।।

रोको अत्याचार जीवों पर, प्रकृति सुन्दर, सुरम्य होगी, नहीं फैलेगी महामारी फिर, गोद नहीं सूनी होगी। दुनिया के जन-जन में हमको, घट में दया जगानी है, सभी जीवों से रखो मैत्री तुम.....।।2।।

घोर पाप जब बढ़ा धरा पर, 'कोरोना' है प्रकट हुआ, महामारी छा गई जगत् में, चारों ओर हाहाकार मचा। क्षमायाचना करो भूलों की, कहती यह जिनवाणी है, सभी जीवों से रखो मैत्री तुम.....।।3।।

क्षमायाचना से शत्रु भी, दयावान बन जाता है, सद्भावना आती मन में, आक्रोश सभी हट जाता है। आओ मैत्री भाव बढ़ाएँ, फिर से खुशियाँ लानी है, सभी जीवों से रखो मैत्री तुम.....।।4।।

-जन्ता साइरी सेण्टर, फरिश्ता कॉम्प्लेक्स,
स्टेशन रोड, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

भावना दिन रात मेरी

श्री निरपुण डागा (सी.ए.)

(तर्ज :: भावना दिन रात मेरी...)

भक्ति के भाव में डूबकर, अनुभूत ज्ञान का स्वाद हो,
तुम में विलीन हो सकूँ बस,

भगवद् दशा अब प्राप्त हो।।1।।

गुरु आपकी कृपा का, हर पल हमें अहसास हो।
ऊर्जा तुम ही हो, प्राण तुम ही हो,

तुम ही धड़कन श्वास हो।।2।।

भक्ति से हमें शक्ति मिलती, ज्योति की हमें प्यास हो।
गुरु हमारे साथ हो तो, सिद्ध गति में मेरा वास हो।।3।।

आरोग्य बोधि सबको मिले, उत्कृष्ट समाधि में वास हो,
दुःख के समय भी पुण्य बंधे, पाप कर्म का नाश हो।।4।।

सब स्वस्थ रहे जगत में, रोम-रोम में ये भाव हो,
मैत्री की ये किरणों से अब, रोग मुक्त संसार हो।।5।।

धैर्य की प्राप्ति हो, अनित्य भावना का ध्यान हो,
शरण एक बस भगवान तुम्हारी,

दृढ़ आस्था ये साथ हो।।6।।

वैरी रहे ना कोई जगत में, क्षमा का दिल में स्थान हो।
प्रमोद भाव विस्तार हो बस,

निंदा का न स्थान हो।।7।।

-बी 13, शिवालय मार्ग, सेठी कॉलोनी, जयपुर-
302004 (राज.)

जैन जीवनशैली से आध्यात्मिक उन्नति

महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.

आगममर्मज्ञ पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. की शिष्या महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. द्वारा जयपुर प्रवास में 'एक कदम धर्म की ओर' विषय पर प्रदत्त व्याख्यानों के आधार पर जिनवाणी के सहसम्पादक श्री मनोज कुमारजी जैन द्वारा प्रस्तुत व्यवस्थित विचार।

-सम्पादक

अध्यात्म जैन जीवनशैली में परम आवश्यक है। इसकी पालना करने वाले एक समय में 108 सिद्ध हो सकते हैं तो इसे पालन न करने वाले अन्य लिङ्गी एक समय में चार ही सिद्ध हो पाते हैं। मोक्ष में मुख्य बाधक हैं, राग-द्वेष। जैन जीवनशैली में हर प्रक्रिया राग-द्वेष को मिटाकर आत्माभिमुख करती है। जैनधर्म जीते हुआ के द्वारा, जीतने की इच्छा रखने वालों के लिए, जीतने की विधि बताता है। हर प्रवृत्ति के लिए ऐसी विधि बतायी गई है कि नवीन कर्मों का बन्ध न हो। 'जयं चरे, जयं चिद्रे, जयमासे, जयं सए...' दशवैकालिकसूत्र 4/9 द्वारा भगवान ने हर प्रवृत्ति में यतना की प्रेरणा दी। जैन जीवनशैली में मात्र साधना पद्धतियाँ ही नहीं, वरन् जीवन-यापन के लिए जो विधि होती है उसे साधना रूप कैसे बनायें, यह कला सिखाई है। हर क्रिया में अध्यात्म छिपा है, उसे कुछ बिन्दुओं से समझ सकते हैं-

1. **सुबह उठकर 4 लोगस का ध्यान**-इसमें जीव प्रभु की शरण स्वीकार करता है। प्रभु की शरण इसी लक्ष्य से ली जाती है कि प्रभु ने जो हेय बताया, उससे दिनभर छूटे, जो उपादेय बताया, उसका प्रभु आज्ञानुसार अनुपालन हो।
2. **नवकार माला**-नमस्कार मन्त्र के जाप से जीव 18 पापों से उपरत हुए जीवों पर दृष्टि केन्द्रित करता है और यह स्मरण में लाता है कि 18 पापों के त्याग से विरत जीव शुद्ध बनकर कैसे अरिहन्त तथा सिद्ध बन गए। इससे साधक की साध्य पर दृष्टि केन्द्रित होती है।
3. **परस्पर 'जय जिनेन्द्र' से अभिवादन**-आपस में

- 'जय जिनेन्द्र' बोलने से अनन्त जिनेन्द्र भगवन्तों को भी नमन होता है। इसका पुनः पुनः उच्चारण आत्मा के मलिन संस्कार मिटाकर जिनेश्वरों के प्रति समर्पण के सुन्दर संस्कार बनाता है।
4. **नवकारसी आदि के प्रत्याख्यान**-नवकारसी, पोरसी आदि के प्रत्याख्यान से जीव स्व-नियन्त्रण के गुण को पुष्ट करता है। थोड़े-थोड़े समय के लिए किया गया नियन्त्रण अधिक समय तक नियन्त्रण का सामर्थ्य देता है। अध्यात्म रूपी पुण्य आत्मा में तभी प्रफुल्लित होता है जब जीव बाहर से स्वयं को हटाता है।
 5. **अनछने पानी का त्याग**-जैनियों की एक पहचान सुविख्यात है कि वे अनछना पानी नहीं पीते हैं। जल में दो प्रकार के जीव होने की सम्भावना रहती है। पानी ही जिनका शरीर है ऐसे अप्काय जीव और पानी में रहने वाले जीव। पानी छानने के पीछे लक्ष्य पानी में रहने वाले जीवों को बचाने से है। उस प्रक्रिया से भी आत्मा में सर्व जीव दया का गुण पुष्ट होता है। दया, करुणा धर्म और अध्यात्म को परिपुष्ट करती है।
 6. **14 नियम ग्रहण**-व्यक्ति जब अध्यात्म यात्री रूप होता है तो उसके अनेक गुणों में एक होता है-पापभीरुता। चौदह नियमों का ग्रहण पापभीरुता का परिणाम है एवं पाप से बचाता है। पापभीरुता गुण का यह सक्रिय रूप है, इससे भावनात्मक स्तर पर वह गुण और भी बलवान बनता है।
 7. **सामायिक**-सामायिक अर्थात् समता की

- अभ्यासशाला। सामायिक में साधक संकल्प करता है कि 2 घड़ी तक स्वयं को समता में टिकाये रखूँगा। विषमता अध्यात्म की विनाशक है और समता अध्यात्म की प्रकाशक है। सामायिक में समता का अभ्यास किया हुआ साधक सामायिक पारने पर भी उसी समता का आस्वादन करता है।
8. गुरु-दर्शन-गुरु-दर्शन से आत्मा में अध्यात्म की प्यास तीव्र होती है तथा गुरु भगवन्तों से प्राप्त कृपा से साधक अध्यात्म पथ पर स्थिर रहता है तथा अपूर्व-अपूर्व विकास के बल को प्राप्त करता है।
9. जिनवाणी-श्रवण-जिनवाणी-श्रवण से यह स्पष्ट होता है कि अध्यात्म के बाधक और साधक तत्त्व क्या हैं? बाधाएँ आने पर भी कैसे पूर्व महापुरुषों के समान अडोल-अकम्प रहना चाहिए? 'मुझे अध्यात्म शिखर को शीघ्र छूना है।' यह भावना दृढ़-दृढ़तर-दृढ़तम होती है।
10. सुपात्रदान-भावना-आहार करने से पूर्व सुपात्रदान की भावना भाने तथा वैसा अवसर उपस्थित होने पर उत्कृष्ट बहुमान भाव से आहार बहराने से साधक को समाधि प्राप्त होती है। (भगवतीसूत्र 7/1) उस समाधि से क्रमिक विकास करता हुआ जीव बोधि को प्राप्त करता है।
11. वचन-विवेक/मौन-अधिक बोलने वाले को विचार भी अधिक आते हैं। अधिक संकल्प-विकल्प युक्त मनोदशा के रहते आत्मा स्वयं की सम्प्रेक्षा नहीं कर पाती है। ठहरी हुई बुद्धि में ही सत्य प्रकट होता है। अतः वचन-विवेक करने से एवं मौन करने से आध्यात्मिक जीवन को सहयोग मिलता है।
12. हर प्रवृत्ति में यतना-भगवान के उपासक त्रस के प्रति ही नहीं, यावत् स्थावर जीवों के प्रति भी 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की समझ रखने वाले होते हैं। अतः उनके उठने-बैठने-चलने-खाने-पीने-सोने में यतना प्रधान होती है। सर्व जीवों के प्रति आत्मवत् भाव अध्यात्म का ही विस्तार है।
13. दान-सूत्रकृताङ्गसूत्र अध्ययन 1 के अनुसार कुश जितना परिग्रह भी जीव को मुक्त नहीं होने देता। दान उस मोक्षबाधक परिग्रह से मुक्ति का साधन है। आरम्भ और परिग्रह में लगा जीव स्थानाङ्ग, स्थान 2 के सूत्रानुसार केवलप्रज्ञप्त धर्म के श्रवण का भी अपात्र हो जाता है, जो अध्यात्म का धरातल है और जिससे देशना लब्धि होती है। परिग्रह के त्याग से जीव की पात्रता का विकास होता है।
14. स्वाध्याय-साधक को प्रतिदिन जिनवाणी का स्वाध्याय करना चाहिए। जिनवाणी के निरन्तर पान से आत्मगुण पुष्ट होते हैं। जीवन का प्रवाह नकारात्मक दिशा से छूटकर सकारात्मक दिशा में होने लगता है। दोषों का त्याग कर जीव गुणवान बनता है।
15. सेवा-जिनशासन में वैयावृत्य को आभ्यन्तर तप रूप स्वीकारा गया है। ब्रती की वैयावृत्य मोक्ष का कारण है तो अब्रती की सेवा भी पुण्य बन्ध करवाती है। वह पुण्य अध्यात्म-पथ में सहकारी साधन प्रदान करता है।
16. प्रतिक्रमण-साधक उभयकाल प्रतिक्रमण करके आचरित दोषों के प्रभाव से मुक्त होता है। शुद्धीकरण की महत्त्वपूर्ण साधना है प्रतिक्रमण। इसके द्वारा साधक अपने आत्माङ्गन को पावन बना लेता है।
17. क्षमायाचना-जब तक वैर का काँटा रहता है तब तक जीव का किञ्चित् भी आध्यात्मिक विकास नहीं होता। प्रतिक्रमण करके परस्पर क्षमायाचना करने से मैत्री की रोशनी से उसका तथा अन्यो का जीवन भी जगमगा उठता है।
18. प्रायश्चित्त-ब्रतों में लगे दोषों को गुरु के समक्ष अभिव्यक्त करके जीव अपने ब्रतों को पुनः सुरक्षित कर लेता है। पश्चात्ताप के द्वारा भीतर के दोष जलकर भस्म हो जाते हैं और आत्मधरा पर

अध्यात्म की खेती लहलहाती है। एक भी दोष यदि आलोचना बिना रह जाए तो वह साधक बनने नहीं देता।

19. **संधारा-रात्रि-शयन** से पूर्व सभी जीवों से क्षमा-याचना करके साधक चार प्रकार के आहार और 18 पापों को जब तक प्रातःकाल नमस्कारमन्त्र न बोले तब तक के लिए त्याग कर देता है। इस सागारी संधारे में अगर मृत्यु आ जाये, तो जीव का पण्डित मरण हो जाता है। यावत् संलेखना युक्त संधारा तो जीव को आराधक बना मुक्ति का सुरक्षा पत्र ही दे देता है।
20. **प्रभु-प्रार्थना-प्रभु** की प्रार्थना से जीव को आध्यात्मिक बल प्राप्त होता है। शरणागत होने का सुन्दर माध्यम है प्रार्थना। अधिकांश लोगों ने अपने जीवन में अनुभव किया होता है कि प्रार्थना गाते और सुनते भाव बहुत सुन्दर होते हैं। प्रार्थना मलिन भावों से दूर कर श्रेष्ठ भावों में संलग्न कराती है।
21. **पर्व मनाने की विधि-जैन शासन** में पर्व, तप, त्याग, दया, संवर से मनाये जाते हैं। उसमें लक्ष्य होता है कि जीव पुद्गल से छूट कर आत्मभाव में आये। जब तक पुद्गलदृष्टि बनी रहती है तब तक आत्मदृष्टि नहीं बनती। अतः पर्व के दिन पाँच इन्द्रियों के विषयों से छूटकर अन्तर में प्रयाण किया जाता है।
22. **भोजन-विवेक-भोजन** में जमीकन्द, अधिक विराधना से बने पदार्थ, तामसिक (शराब आदि) पदार्थ न हों, भोजन रात्रि में न हो। इस प्रकार का विवेक जीवन में जागृति लाता है। जागृत आत्मा ही अध्यात्म में रमण करती है, सुप्त नहीं।
23. **चातुर्मासिक नियम-चातुर्मास** में साधु-साध्वी विहार नहीं करते। श्रावक-श्राविका भी चातुर्मास में सामूहिक भोज, महारम्भ कार्य जैसे मकान आदि बनवाना, परदेश गमनागमन, विवाह आदि कार्यक्रम नहीं करें, यह प्राचीन परम्परा रही है। इस

तरह श्रमणोपासक के जीवन में भी विश्राम का महत्त्व रहा है। यह विश्राम देह का नहीं, अपितु आत्मा का पापों से विश्राम है। श्रावक-श्राविका अधिक समय स्थानक में व्यतीत करें, जिनवाणी का लाभ लें एवं सन्तों की पर्युपासना करें।

24. **अनेकान्तयुक्त चिन्तन-एक विषय** को अनेक अपेक्षाओं से समझा जा सकता है। जब व्यक्ति दूसरी अपेक्षा को नहीं अपनाता तो उसमें आग्रह, अभिमान, संकीर्णता आदि बढ़ने लगते हैं। अनेकान्तयुक्त समझ ही सम्यक् होती है। यह सम्यक् समझ ही ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप को सम्यक् बनाती है।
25. **कर्मवाद पर श्रद्धा रखकर व्यवहार-जीव** को जो भी अच्छी-बुरी परिस्थिति प्राप्त होती है वह उसके शुभ-अशुभ कर्मों से ही प्राप्त होती है। इस सिद्धान्त की स्वीकृति से किसी के साथ द्वेष-वैर नहीं होता, किसी को सहयोग देने पर अहंकार नहीं आता। यह स्वीकृति अध्यात्म की तलहटी भी है तो शिखर भी।

इन सभी बिन्दुओं से समझना यह है कि धार्मिकता और आध्यात्मिकता दो पृथक्-पृथक् दिशाएँ नहीं हैं, अपितु एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। धार्मिक गतिविधियों का परिणाम अध्यात्म है। कुछ अध्यात्मवादी ऐसा मानते हैं कि धार्मिक गतिविधियों में लगे रहने से किसी को लक्ष्य प्राप्त नहीं होता। आत्महितकारी क्रियाओं को कोरा कर्मकाण्ड मान कर उससे भी निवृत्त होने की प्रेरणा देते हैं।

जैनधर्म जो कि जिनेश्वरों द्वारा प्रतिपादित है उसमें निरर्थक कुछ नहीं है। हर आज्ञा एक दरवाज़े जैसी है जिसमें प्रवेश करने पर प्रतीत होता है कि अन्दर कितना सुन्दर रहस्यमय उपलब्धि पूर्ण जगत् है। इस उपलब्धि से वह ही सम्पन्न बन पाता है जो इसे अपने जीवन का अंग बनाता है। हम जिनेश्वर के उपासकों का कर्तव्य है कि-

भगवान को भी मानें, भगवान की भी मानें।
जिनेश्वरों को भी चाहें,
जिनेश्वरों की आज्ञाओं को भी चाहें।
देवाधिदेव को भी ध्यायें और
उनकी वाणी पर भी प्राण लुटायें।

अरिहन्त-सिद्धों को अपना शीष झुकार्यें,
उनकी देशना को जीवन बनायें।
किसी चिन्तक ने सही ही कहा है-आज तक धर्म
के लिए अनेक बार जीए, एक बार धर्म-पालन में अपने
प्राण भी लुटा देते तो बार-बार जन्म धारण नहीं करना
पड़ता।

ॐ

चातुर्मास का महत्त्व

श्री जस्सरज देवड़ा

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव से लेकर अन्तिम चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के समय से ही वर्षा ऋतु में चार महीने (सावन, भादो, आसोज, कार्तिक) एक जगह ठहरकर धर्म आराधना कराने की परम्परा रही है। चातुर्मास पर्वों का काल होता है। इन चार महीनों में लौकिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार पर्व आते हैं। संवत्सरी, गणेश चतुर्थी, ज्ञान पंचमी, नवपद ओली, जन्माष्टमी, दशहरा, नवरात्रि, दीपावली और अन्य आध्यात्मिक पर्व आते हैं। इन दिनों साधु-साध्वी आत्म-अनुष्ठान हेतु सभी श्रद्धालुओं को समूह में आत्म-उत्थान हेतु धार्मिक आराधनाएँ करवाते हैं। जनसमुदाय की सुप्त चेतना सत्सङ्ग के द्वारा जागृत होती है। साधना, ध्यान, स्वाध्याय, जप-तप आदि की प्रवृत्ति निखर उठती है। पूर्ण अहिंसक धर्म होने से इन चार महीनों में साधु-साध्वी पैदल विहार न करके जीव जन्तु की विराधना से बचते हैं। चातुर्मास व्यवस्थाओं से जैनधर्म को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती मिलती है। जैन साधु-साध्वियों को एक स्थान पर अध्ययन एवं लम्बी साधना करने का अच्छा अवसर मिल जाता है। उपवास नियम, व्रत, रात्रि-भोजन त्याग, पूजा, सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध आदि धार्मिक क्रियाओं हेतु चातुर्मास का समय पूर्णतया अनुकूल होता है। साधु-साध्वी स्वयं त्याग की मूर्ति होते हैं अतः उनका सान्निध्य सभी के लिए श्रद्धा-समर्पण-दान की भावना एवं आत्म-कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। कुछ कारण विशेष से जो श्रद्धालु परिवार, अन्य स्थानों पर सन्त-सतियों के दर्शन करने नहीं पहुँच पाते उनको चातुर्मास के समय

दर्शन, वन्दन, धर्म-आराधना का लाभ अपने ही गाँव, शहर में मिल जाता है। चातुर्मास के दौरान आराधना भवनों में सामूहिक तपस्याएँ कराने की व्यवस्था होती है जिनसे कई श्रावक-श्राविकाएँ व्रत-उपवास एवं विभिन्न अनुष्ठानों से जुड़ जाते हैं।

जैनदर्शन में विहार (पैदल) हेतु भगवान महावीर ने स्पष्ट शब्दों में कहा है-‘गामाणुगाम रियंतं अणगारं अकिंचणं’ अर्थात् जैन साधु-साध्वी नंगे पैर पैदल देशाटन करते हैं, पास में कोई सामान या पैसा न रखना स्वयं भोजन नहीं बनाना, स्वयं गोचरी कर आहार लाकर उसे पूर्ण ग्रहण करना, गर्म किया हुआ अथवा धोवन पानी ही वापरना, लकड़ी के बर्तन (पात्र) आहार-पानी के लिए वापरना, गोचरी हेतु भिन्न-भिन्न घरों से आहार लाना, कभी-कभी दो-तीन दिन लगातार बारीश होने से उन्हें उपवास ही करना होता है। यह नियम श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी और तेरापंथी साधु-साध्वियों के लिए है। दिगम्बर जैन सन्त-साध्वी के लिए चौका लगाते हैं और वे अभिग्रह करके भोजन लेते हैं। चातुर्मास में आराधना हेतु पर्युषण पर्व का अत्यधिक महत्त्व है-भगवान के जन्म वाचन एवं संवत्सरी के पावन दिन प्रत्येक जैनी पूर्ण रूप से धर्म-आराधना से जुड़ जाता है। इन्हीं दिनों में अन्तगडदसासूत्र, कल्पसूत्र वाचन आदि का श्रवण कर पाप कर्मों की निर्जरा की जाती है। सभी जीवों से क्षमा माँगी जाती है।

तन-मन-धन शुद्धि का अनुष्ठान रूप यह कल्पवृक्ष समान पर्व चातुर्मास है। यह धर्म एवं भक्ति का विराट् आयोजन है।

-काचीगुड़ा, हैदराबाद (तेलंगण)

ध्यान के हेतु : एक चिन्तन

उपाध्याय रमेशमुनि शास्त्री

तर्कवाद जहाँ समाप्त हो जाता है, वहाँ अन्तर-दर्शन का प्रारम्भ होता है। जहाँ शरीर, वाणी एवं मन की प्रवृत्तियाँ अवरुद्ध हो जाती हैं, वहाँ अन्तर-दर्शन प्रवृत्त होता है। जहाँ इन्द्रियाँ भी अपने-अपने विषय से विरत होती हैं, वहाँ अन्तर-दर्शन निश्चित रूपेण प्रस्फुटित होता है। यह वह अन्तर-दर्शन है, जो सत्य की उपलब्धि का अमोघ साधन बन जाता है। जिन्हें यह प्राप्त हुआ उनकी भाषा में सत्य आत्मा है। स्वत्व की दृष्टि से आत्मा सत्य है। उसकी उपलब्धि का जो वस्तुतः साधन है, वह भी सत्य है। पदार्थोपलब्धि का साधन 'ज्ञान' है और आत्मोपलब्धि का साधन 'ध्यान' है।

ध्यान योग यथार्थ अर्थ में एकाग्रता और एकनिष्ठता का स्पष्टतः प्रतीक है, जिसका एक विषय अथवा एक आलम्बन अवश्य होता है और निश्चल अग्नि-शिखा के सदृश अवभासमान ज्ञान भी¹ है। 'ध्यान' शब्द के अनेक पर्यायवाची शब्द भी हैं और वे ये हैं-स्वान्तर्निग्रह, अन्तःसंलीनता, अवधान, समाधान, प्रणिधान, समाधि, प्रणिधि और प्रत्याख्यान।² उक्त शब्द शब्द-साम्य से परे हैं, परन्तु भाव की दृष्टि से समानता लिये हुए हैं। ध्यान का अभिप्राय वस्तुतः चेतना का विशुद्ध उपयोग होता है, जिससे चिन्तन में बाहरी शून्यता एवं अन्तर-जागृति आती है। ध्यान आध्यात्मिक भावना और समता का विकास करने वाला, मनोविकारों का क्षय करने वाला तथा मन-वचन एवं कर्म को संयमित करने वाला धर्म व्यापार है।³ यहाँ धर्म व्यापार ही आत्मा को मोक्ष के साथ संयोजित करता है। इस प्रकार हमें स्पष्टतः प्रतीत हो जाता है कि ध्यान की साधना के साथ आत्मिक-विकास की भावना भी सन्निहित है। दूसरे शब्दों में ध्यान का संलक्ष्य बन्धन-

विमुक्ति अथवा आत्म-साक्षात्कार है। इस अध्यात्म-प्रधान साधना के माध्यम से मानसिक-परिष्कार भी स्वतः हो जाता है। क्योंकि मानसिक-विशुद्धता के अभाव में मोक्ष-प्राप्ति कदापि सम्भव नहीं है। ध्यान आत्मा के लिए अतीव हितकारी माना गया है, जिससे आत्म-ज्ञान होता है।⁴ ध्यान की साधना से समत्व की प्राप्ति भी होती है। क्योंकि समता के लिए आत्म-ज्ञान की नितान्त अपेक्षा होती है और आत्म-ज्ञान ध्यान-साधना से निष्पन्न होता है। ध्यान-योग से बहुविध शारीरिक-लब्धियाँ भी प्राप्त होती हैं। जिससे रोग-मुक्ति प्रभृति का अचिन्त्य लाभ होता है।⁵ अतएव पूर्णतः प्रगट है कि स्वाध्याय और सदध्यान में तल्लीन तपस्वी श्रमण का सञ्चित मल तपाये हुए स्वर्ण के सदृश विशुद्ध हो जाता है।⁶ वास्तव में ध्यान संवर और निर्जरा का कारण रूप है।⁷ और वह ऊर्जा का सतत प्रवाही प्रवाह है। यह व्यावहारिक जीवन को सन्तुलित, सुखस्थ एवं प्रामाणिक बनाता है, सामाजिक-जीवन को मर्यादित तथा स्नेह प्रवण बनाता है और आध्यात्मिक-जीवन को वीतराग परिशुद्ध एवं परिबुद्ध बना देता है। इसका क्षेत्र एवं प्रभाव भी सीमित नहीं, असीमित है। इसने जीवन एवं जगत् के बहिरंग एवं अन्तरंग पक्ष को सचेतन बनाया है।

इस सन्दर्भ में यह ज्ञातव्य है कि ध्यान के हेतु के विषय में विविध-विवक्षा के प्रकाश में अनेक-प्रकार के विस्तार से विचार किया गया है। जिनमें कतिपय हेतुओं की प्रचर्चा प्रस्तुत की जा रही है। सर्वप्रथम हेतु के अष्टविध भेद क्रमशः इस रूप में प्राप्त होते हैं।⁸ वे ये हैं-

1. सङ्ग-त्याग- बाह्य परिग्रह एवं कुसङ्ग का त्याग करना।

2. कषाय निग्रह-क्रोध, मान, माया एवं लोभ का निग्रह।
3. व्रत धारणा-अहिंसा, सत्य, अस्तेय प्रभृति का पालन करना।
4. इन्द्रिय-विजय-श्रोत्र, चक्षु, घ्राण आदि इन्द्रियों का संयमन करना।
5. गुरु-उपदेश-सद्गुरु का उपदेश-श्रवण करना।
6. श्रद्धान-प्राप्त उपदेश पर श्रद्धा रखना।
7. अभ्यास-ज्ञान एवं श्रद्धा के अनुरूप अभ्यास करना।
8. स्थिर-मन-मन को चञ्चलता-रहित करना।

ध्यान के हेतु पाँच भी हैं, जो इस प्रकार से प्रतिपादित हुए हैं⁹-1. वैराग्य, 2. तत्त्वज्ञान, 3. असंगता, 4. स्थिर चित्तता एवं 5. परीषह जय।

इसी प्रकार हेतु के पाँच प्रकार इस रूप में भी निरूपित हुए हैं¹⁰, 1. वैराग्य, 2. ज्ञान सम्पत्ति, 3. असङ्गता, 4. स्थिर चित्तता, 5. उर्मि समय सहनता।

ध्यान के अङ्ग के रूप में सामान्य रूपेण चार अङ्गों का स्पष्टतः उल्लेख प्राप्त होता है।¹¹ वे चार अङ्ग ये हैं- 1. ध्याता, 2. ध्येय, 3. ध्यान, 4. ध्यानफल।

ध्याता अर्थात् ध्यान करने वाला, ध्येय अर्थात् आलम्बन और ध्यान अर्थात् एकाग्र चिन्तन है। अतएव ध्यान में इन तीनों का सहयोग नितान्त अपेक्षित होता है और इन के सन्दर्भ में आत्मलीनता, चित्त की स्वस्थता, यतना, जागरूकता, एकान्तवास एवं मौन रहने का अभ्यास भी आवश्यक है। क्योंकि ये सब उपकरण हैं जो ध्यान की सम्पन्नता में अतिशय रूपेण सहायक बनते हैं। ध्यान-साधना की समग्र सामग्री के सन्दर्भ में पर्याप्त रूप से चिन्तन-मनन भी किया गया है। ध्यान के हेतु के सम्बन्ध में जब विचार किया जा रहा है, तब ध्यान के विषय में चिन्तन करना अनिवार्य है और सर्वथा रूपेण प्रासङ्गिक भी है।

जब हम 'ध्यान' शब्द का उच्चारण करते हैं तब

प्रायः हमारा संकेत मन की एकाग्रता की ओर रहता है। प्रवक्ता जब कभी श्रोताओं से यह कहता है कि जरा ध्यान दीजिये अथवा मैं आपका ध्यान इस ओर खींचना चाहता हूँ, तब वहाँ उसका आशय मन के विशेष झुकाव से ही होता है। मन को किसी विषय पर स्थिर करने अथवा किसी महत्त्वपूर्ण विषय की ओर मोड़ने के लिए प्रायः 'ध्यान' शब्द का प्रयोग वहाँ किया जाता है। प्रायः मन की स्थिरता के अर्थ में ही हम उसका उपयोग करते हैं। ध्यान की जो परिभाषाएँ हैं, वे प्रायः एकाग्रता के अर्थ से जुड़ी हैं। चित्त की एकाग्रता को ही 'ध्यान' की संज्ञा दी है।¹² उत्तम संहनन वाले का एक विषय में चित्त-वृत्ति को रोकना 'ध्यान' है, जो अन्तर्मुहूर्त काल तक होता है।¹³ चित्त के विक्षेप का त्याग करना ध्यान है।¹⁴ ध्यान के लक्षण में जो एकाग्रता का ग्रहण है, वह व्यग्रता की निवृत्ति के लिए है। ध्यान को एकाग्र कहा जाता है।¹⁵ किसी एक विषय में निरन्तर रूप से ज्ञान का रहना 'ध्यान' है और वह वास्वत में क्रम रूप ही है, अक्रम नहीं है।¹⁶ इष्ट-अनिष्ट बुद्धि के मूल मोह का छेद हो जाने से चित्त स्थिर हो जाता है। उस चित्त की स्थिरता को 'ध्यान' कहा जाता है। यहाँ 'ध्यान' शब्द से अभिप्राय चित्त की एकाग्रता, एकाग्र-चिन्तन, एक विषय पर केन्द्रित विचार-प्रवाह आदि से है। इसीलिये अशुभ तथा अपवित्र विचारों की लीनता को भी आर्त्त-रौद्र ध्यान में गिना गया है। उक्त विवेचन का अभिप्रेत-अप्रिप्राय यह है कि 'ध्यान' शब्द की परिधि में वह सर्व प्रकार का चिन्तन आ गया है जिसमें एकाग्रता होती है। चाहे वह शुभ हो अथवा अशुभ। इस प्रकार ध्यान का स्पष्टतः अर्थ यही है कि चित्त की एकाग्रता, स्थिर चिन्तन एवं मन की सुलीन दशा है। 'ध्यान' शब्द जब व्यावहारिक क्षेत्र से हटकर शुद्धतम आध्यात्मिक अर्थ में आता है तब वह अपने साथ कुछ नये अर्थ, नवीन स्वरूप एवं अति नव्य-परिवेश भी लेता है। अध्यात्म और योग-साधना के क्षेत्र में ध्यान का अर्थ एवं स्वरूप भी परिवर्तित हुआ।

इसी सन्दर्भ में यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि विषय और विषयी के आधार पर ध्यान-योग का वर्गीकरण अनेक रूपों में किया जा सकता है। तथापि संक्षेप में ध्यान के चार भेद प्रतिपादित हुए हैं।¹⁸ वे ये हैं— 1. आर्त्तध्यान, 2. रौद्रध्यान, 3. धर्म ध्यान, 4. शुक्ल ध्यान।

उक्त चतुर्विध ध्यान में आदि के दो ध्यान अप्रशस्त अर्थात् अशुभ हैं और अन्तिम के दो ध्यान प्रशस्त हैं, शुभ रूप हैं।¹⁹ ज्ञान-धारा को अनेक विषयगामिनी बनाने से रोक कर एक विषय गामिनी बना देना ही 'ध्यान' है। अब यदि वह ज्ञान आर्त्त और रौद्र पर आधृत होगा तो ऐसे ध्यान का परिणाम संसार होगा और यदि वह ध्यान धर्म और शुक्ल स्वरूप होगा तो वही आत्म-कल्याणकारी होगा, जिसका अन्तिम रूप मोक्ष है। ध्यान क्या है? मुझे ऐसा स्पष्टतः प्रतीत होता है कि जो अपने निकट है, उसमें होना ही वस्तुतः ध्यान है। अपने निकट के अतिरिक्त जो और बहुत कुछ है, वह वस्तुतः सबकुछ पड़ौस है। पड़ौस बहिर्वस्तु है। उसके निकट होना भी बहि के निकट होना है। इसे यदि दार्शनिक-शब्दावली में कहें तो कहा जा सकता है कि पड़ौस वास्तव में परिग्रह है। परिग्रही-चित्त कभी ध्यान करने की स्थिति में नहीं हो सकता। जिससे आत्मा आत्म-साधन-स्वभाव की अनुभूति कर सके। निष्कर्ष यही है कि ध्याता का ध्येय में स्थिर होना ही ध्यान है।²⁰ इसी स्थिरता एवं तल्लीनता में दोषों का परिहार हो जाता है।²¹ और यही ध्यान वस्तुतः परम तप है।²² यह तथ्य भी ज्ञातव्य है कि ध्यान-साधना करने के लिये स्थान बदलना, चल-विचल होना अथवा शरीर को जहाँ-तहाँ फैलाना प्रभृति क्रियाओं को रोकना परमावश्यक है। शरीर के चल-विचल होने की क्रिया को रोकने के पश्चात् वचन की क्रियाओं को रोकना अत्यन्त ही आवश्यक है। चिन्तन और भाषण ये दोनों साथ नहीं चल सकते हैं। वाचा को नियन्त्रित करने के लिये मौन का आलम्बन लेना द्वितीय भूमिका निभाना है। मौन ध्यान

का द्वितीय सोपान है। जिस पर चढ़कर आगे बढ़ा जा सकता है। सांसारिक और पारलौकिक इन दोनों पक्षों में वाचा का नियन्त्रण ही ध्यान का आगमन है। यथार्थता यह है कि मौन मानस-मन्दिर की आत्म-प्रतिमा को जागृत करने का घण्टा-निनाद है। मौन बाह्य जागृति से आभ्यन्तर जागृति की ओर बढ़ने का बाह्य रूप आलम्बन है। इस सहारे से ध्यान की ओर शीघ्र गति हो जाती है। वाचा के क्रिया-कलापों को रोकने का अभिप्राय यह है कि शरीर से स्थिर होकर बैठ गया अथवा खड़ा हो गया, किन्तु वाचा से दूसरों को भी चल-विचल नहीं कर सकता। वाचा स्थिर होने से अन्य बाधक तत्त्व दूर हो जाते हैं।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि ध्यान, ध्येय और ध्याता जब ये तीनों पृथक्-पृथक् अनुभव समाप्त हो जाते हैं, तभी वस्तुतः जो है, वह मुखर हो उठता है। यदि ध्यान का अस्तित्व है, तब वहाँ क्रिया है। इसी प्रकार यदि ध्येय है, तब क्रिया है और यदि ध्याता है तब भी क्रिया उपस्थित रहती है। मुझे ऐसा स्पष्टतः विदित होता है कि जब 'जो नहीं है' वह छूट जायेगा, तभी वस्तुतः प्राणी अपनी ध्यान की अवस्था में होगा। निष्कर्ष रूप में यह कथन यथार्थ पूर्ण प्रतीत होता है कि ध्यान का कार्य किसी भी क्रिया-विशेष से प्रारम्भ किया जाए, किन्तु उसकी प्राप्ति अक्रिया-प्रधान है। विचार से सूक्ष्म और कोई क्रिया नहीं है। यदि विचार ही विसर्जित हो जाता है, तब मन की अनुपस्थिति में किसी भी क्रिया का होना सम्भव नहीं हो पाता है। आत्मानुभूति में ध्यान का स्थान महत्त्वपूर्ण है। इसी से सच्चा सुख सदा-सदा के लिये अनुभूत हुआ करता है।

सन्दर्भ:-

1. सर्वार्थ सिद्धि, 9.27
2. (क) अभिधान चिन्तामणि, 6.14
(ख) दशवैकालिक सूत्र, 8.1
(ग) योग दर्शन, नागोजी भट्टवृत्ति, पृष्ठ 207
3. (क) योग बिन्दु, 31
(ख) योग विशिका, 1

4. योग शास्त्र, 4.13-14
5. योग शास्त्र, 1.8
6. दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन 8, गाथा 62
7. तत्त्वानुशासन, 56
8. तत्त्वानुशासन, 75.218
9. बृहद् द्रव्य संग्रह, संस्कृत टीका, पृष्ठ 201
10. ज्ञानांकुश, कल्प 40
11. (क) धवला, 13.5.4, 26.64.5
(ख) चारित्र सार, 167.1
(ग) महापुराण, 21.84
(घ) ज्ञानार्णव, 4.5
(ङ) तत्त्वानुशासन, 37
12. (क) चित्तस्सेगम्या हवद् ज्ञाणं|-आवश्यक निर्युक्ति, 1456
(ख) अभिधान चिन्तामणि, 1.84
13. (क) महापुराण, 21.8
(ख) चारित्र सार, 166.6
(ग) तत्त्वार्थ सूत्र, 9.27
(घ) तत्त्वानुशासन, 56
14. सर्वार्थ सिद्धि, 9.20.435.8
15. तत्त्वानुशासन श्लोक, 59
16. पंचाध्यायी उत्तरार्ध, श्लोक 842
17. अनगार धर्माभूत, अधिकार-1, श्लोक 114,117
18. (क) तत्त्वार्थ सूत्र, 9.28
(ख) भगवती आराधना मूल, 1699-1700
(ग) महापुराण, 21.28
(घ) ज्ञानसार, श्लोक 10
(ङ) तत्त्वानुशासन श्लोक, 34
(च) अनगार धर्माभूत, 7.103, 727
(छ) स्थानाङ्गसूत्र, 4.247
(ज) समवायाङ्गसूत्र, 4
(झ) आवश्यक निर्युक्ति, 1458
(ञ) अध्यात्म सार प्रबन्ध, 5.86
(ट) ध्यान शतक, 5
(ठ) ज्ञानार्णव, 25.20
(ड) षट्खण्डागम पुस्तक, 13, पृष्ठ 70-78
19. (क) राजवार्तिक, 9.28.4.627.33
(ख) धवला, 13.5.4.26.70.11
(ग) महापुराण, 21.27
(ङ) चारित्रसार, 167.3
(च) ज्ञानार्णव, 25.20
(छ) ज्ञानसार, 25.20
20. तत्त्वानुशासन, श्लोक 67
21. नियमसार, गाथा 93
22. षट्खण्डागम, खण्ड 5, पुस्तक 13, पृष्ठ 64

अस्तित्व

श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

न मरा, न मारूँगा,
फिर मरण से क्यों डरूँगा।
जो मरती है वह काया है,
हमें गुरु ने यही समझाया है।
देह में हूँ, पर देह नहीं,
भिन्न भिन्न है घी और दही,
देह में मेरेपन से ही बाँधते हैं कर्म,
देह में परायेपन का भाव ही है धर्म।

व्यवहार में देह को ही जीव कहते हैं,
पर ज्ञानी तो भेद-विज्ञान में रहते हैं।
देह जीव होता नहीं, जीव देह होता नहीं,
जीव कभी अपना अस्तित्व खोता नहीं।
था, हूँ और रहूँगा,
इसे ही अस्तित्व में आस्था कहूँगा।
अपनी शुद्ध शाश्वत सत्ता का स्वीकार ही
सम्यक्त्व है,
इसी से जीव पाता सिद्धत्व है।।

-संकलनकर्ता, श्री धर्मचन्द्रजी जैन, रजिस्ट्रार-
जोधपुर

तमिल साहित्य के संवर्धन में जैनों का योगदान : एक विहंगावलोकन

डॉ. दिलीप धींग

तमिल भाषा, व्याकरण, काव्य, साहित्य और संस्कृति के विकास में जैनों का ऐतिहासिक और अविस्मरणीय योगदान है। जैन मुनियों, साध्वियों और जैन विद्वानों ने गहन अध्ययन, परिश्रम, प्रज्ञा और प्रतिभा से उच्च कोटि के कालजयी तमिल साहित्य की रचना की। जैन मनीषियों द्वारा रचित साहित्य आज भी तमिल भाषा के मुख्य मानक ग्रन्थों के रूप में सर्वपठित और समादृत हैं। विश्वविख्यात नीतिग्रन्थ 'तिरुक्कुरल', सर्वप्राचीन तमिल लक्षण ग्रन्थ 'तोलकाप्पियम', सर्वप्रचलित व्याकरण ग्रन्थ 'नन्नूल', महाकाव्य 'शिलप्पदिकारम्' और 'जीवक चिन्तामणि', चार लघु महाकाव्य आदि जैनों द्वारा रचित अनेक ग्रन्थ आज भी तमिल साहित्य और भारतीय संस्कृति को प्रकाशमान बनाए हुए हैं। ये ग्रन्थ सम्पूर्ण मानवता के पथ को आलोकित कर रहे हैं।

ईस्वी पूर्व तीसरी सदी में उत्तर भारत में बारह वर्षीय भीषण दुष्काल पड़ा था। माना जाता है कि उस समय हजारों जैन मुनि, साध्वियाँ, श्रावक-श्राविकाएँ और विद्वान् दक्षिण भारत आये। लेकिन इससे पूर्व भी दक्षिण भारत में जैनधर्म विद्यमान था। दक्षिण भारत में रहकर जैन श्रमण और गृहस्थ विद्वानों ने कई प्रकार का योगदान किया। उसमें उनका साहित्यिक योगदान भी अत्यन्त गौरवपूर्ण और ऐतिहासिक महत्त्व का है। प्राचीन तमिल ग्रन्थों के प्रमाणों, अन्तःसाक्ष्यों और पुरावशेषों के आधार पर यह सिद्ध होता है कि तमिल साहित्य के उत्कर्ष में जैनों का अति गौरवपूर्ण योगदान है। तमिल

व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थों की रचना में भी जैनों का अभूतपूर्व और ऐतिहासिक योगदान है।

तमिल प्रदेश में रहकर जैनों ने अपने उदात्त विचार, विशुद्ध आचार, प्रामाणिक व्यवहार, व्यापक लोकोपकार और विपुल सेवाओं से राजा और प्रजा, सबके हृदय में अपना स्थान और सम्मान बनाया। यही वजह रही कि जैनधर्म को राज्याश्रय भी प्राप्त हुआ। जैनों ने जनता, समाज और शासन के साथ मिलकर कार्य किया। तमिल साहित्य के सबसे प्राचीन लक्षण ग्रन्थ 'तोलकाप्पियम' को तो ईस्वी पूर्व 1000 से ईस्वी पूर्व 600 तक प्राचीन माना जाता है। उसके बाद उपलब्ध महत्त्वपूर्ण साहित्य की रचना ईस्वी पूर्व तीसरी सदी से लेकर दसवीं शताब्दी तक मानी जाती है। जैनों ने अनेक ऐसे ग्रन्थ रचे, जो तमिल भाषा, व्याकरण, साहित्य और संस्कृति की श्रीवृद्धि में आज भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। जैनों के उस उत्कर्ष काल में काँचीनगरी (काँचीपुरम्) का जीता-जागता वर्णन चीनी यात्री ह्यूवॉन साँग के यात्रा-विवरण से भी हमें प्राप्त होता है।

काव्य-रचना के क्षेत्र में तो जैनों की विरासत अविस्मरणीय है। तमिल साहित्य में अति प्राचीन पाँच महाकाव्यों (ऐम्पेरुम् काप्पियम्) का अत्यधिक साहित्यिक महत्त्व है। ये पाँच ग्रन्थ हैं- शिलप्पदिकारम्, मणिमेखलै, जीवक चिन्तामणि, वलैयापति और कुण्डलकेशी। इन पाँच महाकाव्यों में से चार महाकाव्य जैनों द्वारा लिखे गये हैं- शिलप्पदिकारम्, जीवक चिन्तामणि, वलैयापति और कुण्डलकेशी। इनमें से शिलप्पदिकारम् और जीवक

चिन्तामणि आज भी उपलब्ध हैं, जिनका परिचय आगे दिया जा रहा है। कुण्डलकेशी और वलैयापति आज अनुपलब्ध हैं। लेकिन वलैयापति की सौ पंक्तियाँ वर्तमान में उपलब्ध हैं। शिलप्पदिकारम् के टीकाकार अडियार्क्कुनल्लार की टीका में प्राप्त उद्धरण यह साबित करते हैं कि इस काव्य के प्रणेता जैन धर्मावलम्बी थे। जैनविद्या शोध प्रतिष्ठान के सभापति और तमिल जैन विद्वान श्री एस. श्रीपाल ने 'चूलामणि' जैन महाकाव्य की भूमिका में कुण्डलकेशी को जैन मनीषी द्वारा रचित महाकाव्य बताया है।

तमिल काव्य कृतियों में 'द्रमिला' शब्द मिलता है। इसका शब्दार्थ है-तीन भाषाओं में पाण्डित्य। ये तीन भाषाएँ हैं-तमिल, प्राकृत और संस्कृत। कई विद्वानों का मन्तव्य है कि द्रविड़ शब्द की व्युत्पत्ति द्रमिला से हुई है। प्राचीन तमिल भूमि के अनेक जैन साधु-साध्वी और जैन विद्वान् इन तीनों भाषाओं में समान अधिकार रखते थे। बहुभाषाविद होने के कारण जैन विद्वानों ने तमिल की मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए तमिल को समृद्ध किया। भाषाई और सांस्कृतिक सौहार्द बढ़ाया।

प्राचीन जैन आगम 'प्रज्ञापनासूत्र' में अर्धमागधी प्राकृत भाषा जानने वाले को भाषा आर्य कहा गया है। अर्धमागधी का लेख विधान ब्राह्मी लिपि में 18 प्रकार का बताया गया है, उनमें एक प्रकार है-तामिली, दामिळि या द्राविडी। समवायाङ्ग और विशेषावश्यक सूत्र में भी अठारह लिपियों के अन्तर्गत द्राविडी लिपि का उल्लेख है। यह उल्लेख प्राकृत, तमिल और द्रविड़ भाषाओं तथा ब्राह्मी लिपि के अन्तःसम्बन्धों का बहुत बड़ा प्राचीन प्रमाण है। तमिल-प्राकृत सम्बन्ध का भी यह बहुत बड़ा आधार है। इसी आधार पर महाकवि सुब्रह्मण्य भारती ने भारतमाता को 18 भाषाएँ बोलने वाली कहा है।

यह बात जोर देकर कही जाती है कि तमिल

पर संस्कृत का विशेष प्रभाव है। तथ्य यह है कि संस्कृत का ही नहीं, प्राकृत का प्रभाव भी है। निष्पक्ष दृष्टि से देखा जाए तो तमिल पर प्राकृत का प्रभाव अधिक है। जो संस्कृत शब्द तमिल में स्वीकार किये गये हैं, उनमें भी अधिकांश शब्दों का प्राकृतीकरण किया गया या हो गया है। शब्दों का प्राकृतीकरण और सरलीकरण प्राकृत भाषा की ही विशेषता है। हिन्दी को सरल बनाने में भी प्राकृत का बड़ा योगदान है। यही योगदान सभी भाषाओं को सरल और लोकोपयोगी बनाने में प्राकृत का रहा है।

तमिल भाषा और साहित्य के विकास में जैनों के सुदीर्घ योगदान को रेखांकित करने के लिए कुछ प्रमुख ग्रन्थों की विशेषता, महत्ता, प्रभाव, उपयोगिता और लोकप्रियता के बारे में यहाँ चर्चा की जा रही है। इस चर्चा में दो प्रकार का प्राचीन साहित्य है-(1) जैनों द्वारा रचित तमिल साहित्य एवं (2) जैनों द्वारा रचित तमिल जैन साहित्य।

तोलकाप्पियम्

तोलकाप्पियम् वर्तमान में उपलब्ध तमिल भाषा का सबसे प्राचीन लक्षण ग्रन्थ है। तमिल भाषा में 'तोल' का अर्थ अति प्राचीन और 'काप्पियम्' का अर्थ काव्य (साहित्य) है। इस ग्रन्थ का लाक्षणिक अर्थ है-प्राचीन परम्परा का संरक्षण करने वाला ग्रन्थ। इसके अध्ययन से प्राचीन तमिल साहित्य, संस्कृति और काव्यशास्त्र की विशिष्ट परम्पराओं की पूर्ण जानकारी उपलब्ध हो जाती है।

तोलकाप्पियम् में तीन खण्ड हैं-ध्वनि लक्षण (एँळुत्तु इलक्कणम्), शब्द लक्षण (सोल इलक्कणम्) और काव्य लक्षण (पोरुळ इलक्कणम्)। इनमें प्रथम दो व्याकरण के अन्तर्गत हैं। तीसरे में काव्य के साथ अलङ्कार (अणि) और छन्द (याप्पि) का वर्णन भी सामविष्ट हैं। तोलकाप्पियम् पर विभिन्न कालखण्डों में लिखी गई कई व्याख्याएँ और भाष्य मिलते हैं। तोलकाप्पियम् में खण्ड को 'अदिकारम्' कहा गया है। उल्लेखनीय है कि प्राकृत

भाषा के प्राचीन साहित्य में भी कई ग्रन्थों में खण्ड या अध्याय को 'अधिकार' कहा गया है। 'अदिकारम्' अधिकार का ही तमिल रूप है।

इसके रचनाकार का नाम कवि तोलकाप्पियर है। तोलकाप्पियर तमिल काव्यशास्त्र के प्रथम आचार्य और सबसे बड़े वैयाकरण हैं। कवि के नाम से ही इस ग्रन्थ का नाम पड़ा है। इसमें कवि के लिए 'अंतणर' और 'मुक्कोर भगवर' शब्द प्रयुक्त हैं। ये शब्द श्रमणों (जैन सन्तों) के लिए प्रयुक्त किये जाते थे। तोलकाप्पियम् के रचनाकाल में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। इस ग्रन्थ के आन्तरिक, बाहरी और अन्य साक्ष्यों के आधार पर माना जाता है कि तोलकाप्पियर ईस्वी पूर्व 1000 से ईस्वी पूर्व 600 में रहे होंगे। वे कवि होने के साथ ही वैयाकरण, भाषा वैज्ञानिक, दार्शनिक, इतिहासवेत्ता और समाजशास्त्री भी थे।

कुछ विद्वान् कहते हैं कि तमिल प्रदेश में जैनधर्म का आगमन ईस्वी पूर्व तीसरी सदी में हुआ था। लेकिन तमिल प्रदेश में जैनधर्म पहले भी विद्यमान था। जैन परम्परा के तोलकाप्पियर के कालखण्ड से यह भी सिद्ध होता है कि तमिल प्रदेश में जैनधर्म पहले से ही विद्यमान था। जैनेतर विद्वान भी यह बात स्वीकार करते हैं।

दुष्काल के फलस्वरूप जैनों और बौद्धों का तमिल प्रदेश में आगमन ईस्वी पूर्व दूसरी-तीसरी सदी में हुआ। जैन यहाँ पहले से भी थे, जबकि बौद्धों का आगमन पहली बार था। श्रमण परम्परा की बौद्ध धारा का प्रवाह भगवान महावीर के समकालीन भगवान बुद्ध से हुआ, जबकि जैन श्रमण परम्परा तो प्रागैतिहासिक काल से ही प्रवाहित हो रही थी। लगता है कि विद्वानों ने बौद्धों के तमिल प्रदेश में प्रथम आगमन के साथ जैनों का भी 'प्रथम आगमन' मान लिया। जबकि जैन तो यहाँ पहले भी थे।

दूसरे संगम काल में तोलकाप्पियम् एकमात्र

प्रमुख आधार ग्रन्थ के रूप में स्वीकृत हुआ। इसमें कहीं भी जाति या वर्ण व्यवस्था की चर्चा नहीं है। यह ग्रन्थ मिश्रित संस्कृति का उदाहरण प्रस्तुत करता है। कोई पेशा किसी खास वर्ग का नहीं था। राजा को छोड़कर कुछ भी वंशानुगत नहीं था। ये सारे तथ्य श्रमण परम्परा की समतामयी समाज व्यवस्था से मेल खाते हैं।

तिरुक्कुरल

तिरुक्कुरल के रचनाकार जैन विद्वान् तिरुवल्लुवर थे। ऐसा माना जाता है कि 'तिरुवल्लुवर' रचनाकार का मूल नाम नहीं है। 'तिरु' आदरसूचक उपसर्ग है। 'वल्लुवर' उनकी जाति का सूचक शब्द है। यह जाति निम्न कोटि की मानी जाती थी। जैनधर्म में जाति की बजाय सदैव गुणों को महत्त्व दिया गया। तिरुवल्लुवर इस तथ्य के गौरवशाली महापुरुष हैं। 'तिरु' का अर्थ है-श्री। 'तिरु' शब्द 'श्री' या 'सिरि' का अपभ्रंश या तमिल रूप माना जाता है। ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थों से पता चलता है कि तमिलनाडु में प्राचीन काल में जैनों से सम्बन्धित स्थानों, नगरों, व्यक्तियों और ग्रन्थों के नाम 'तिरु' उपसर्ग या प्रत्यय के साथ जुड़े होते थे। इस ग्रन्थ और ग्रन्थकार के नाम के साथ 'तिरु' भी इनके जैन होने का एक प्रमाण है।

तिरुवल्लुवर को तमिल में 'देवर' माना जाता है। 'देवर' शब्द सामान्यतया जैन सन्तों के लिए गौरवपूर्ण शब्द रहा है। 'देवर' शब्द देव का तमिल रूप है। जैसे हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषाओं में किसी संज्ञा, नाम या सर्वनाम के साथ 'जी' प्रत्यय लगाया जाता है, वैसे ही तमिल में सम्मान दर्शाने के लिए 'अर' प्रत्यय लगाया जाता है। इसी प्रत्यय के प्रयोग से 'देव' का 'देवर' शब्द बना है। वस्तुतः तमिल प्रदेश में जैन सन्तों को देवतुल्य और श्रद्धास्पद माना जाता रहा। वर्तमान में तमिलनाडु के 'नायनार' जैनों के नायनार शब्द का भी कुछ ऐसा

ही अर्थ होता है। यह शब्द न + इना + अर के योग से बना है। न + इना का अर्थ है पापरहित जन एवं 'अर' आदरसूचक प्रत्यय है।

तिरुक्कुरल के पहले ही कुरल (पद) में तिरुवल्लुवर कहते हैं—अगर मुदल एळुत्तेलाम आदि भगवन् मुदट्टे उलगु। इसका अर्थ है—अक्षरमाला के अकार की तरह इस लोक में जिनका पहला स्थान है, उन आदिनाथ प्रभु की मैं वन्दना करता हूँ। प्रथम अध्याय में तिरुवल्लुवर पञ्चेन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाले एवं आठ गुणों से युक्त को ईश्वर कहते हैं। ईश्वर का यह स्वरूप अरिहंत और सिद्ध के रूप में जैनदर्शन में सर्वमान्य है।

जैन महाकाव्य 'नीलकेशी' के व्याख्याताओं ने तिरुक्कुरल को जैनों का शास्त्रग्रन्थ बताया है। तमिल के प्रबुद्ध विद्वान तिरु वि. कल्याणसुन्दरम् (1883-1953), जो जैन धर्मावलम्बी नहीं थे, का सुस्पष्ट मन्तव्य था कि तिरुक्कुरल के रचयिता जैन धर्मावलम्बी थे। अन्य अनेक जैनेतर मनीषी भी इस तथ्य से सहमत थे और हैं कि तिरुक्कुरल की रचना जैन मतावलम्बी विद्वान् ने की। लेकिन कुछ विद्वानों का यह कहना सही नहीं है कि तिरुक्कुरल के रचनाकार आचार्य कुन्दकुन्द थे।

तिरुक्कुरल की विषयवस्तु और कुन्दकुन्दाचार्य की चिन्तन-धारा, भाषा एवं शैली में मौलिक अन्तर है। तिरुक्कुरल में काम पुरुषार्थ पर 250 कुरल (पद्य) हैं; जिनमें ऐहिक प्रेम, दैहिक सौन्दर्य, नायक-नायिका का मिलना, रुठना, विरह, विरह की वेदना, विरह का क्रन्दन, सन्ध्या-सन्ताप आदि अनेक विषय समाविष्ट हैं। कुन्दकुन्द जैसे आध्यात्मिक आचार्य के लिए काम विषय पर ऐसा उन्मुक्त विमर्श सम्भव नहीं लगता है। तिरुक्कुरल के अर्थ पुरुषार्थ में बताई शिक्षाएँ भी कुन्दकुन्द की रचनाधर्मिता से मेल नहीं खाती हैं। तिरुवल्लुवर और कुन्दकुन्द के समय में भी विद्वानों में मतैक्य नहीं है।

न तो तिरुवल्लुवर ने प्राकृत में कुछ रचा और न ही कुन्दकुन्दाचार्य ने तमिल में कुछ रचा। ऐसे अनेक तथ्य यह सिद्ध करते हैं कि तिरुवल्लुवर और कुन्दकुन्दाचार्य, जैन संस्कृति के दो अलग-अलग महापुरुष थे।

तिरुक्कुरल का रचनाकाल ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी से ईस्वी पूर्व की पहली शताब्दी माना जाता है। 'तमिल वेद' या 'तमिल आगम' के नाम से सम्मानित इस नीतिग्रन्थ में 1330 कुरल हैं। इस ग्रन्थ की प्राप्त प्राचीन प्रतियों में कोई पाठ-भेद नहीं है। अर्थात् यह ग्रन्थ अविकल रूप से आज भी प्राप्त है। ग्रन्थ के तीन खण्ड हैं—धर्म, अर्थ एवं काम (अरम्, पोरुळ, इन्बम्)। इनमें क्रमशः 38, 70 एवं 25 अध्याय हैं। हर अध्याय में 10 कुरल हैं। इसमें धर्म (अरम्) के दो भेद इल्लरम् (गृहस्थ धर्म) और तुरवरम् (संन्यास धर्म) बताए गए हैं, जो जैनदर्शन के अनुसार हैं।

तिरुवल्लुवर को जैन, बौद्ध और हिन्दू, इन तीनों परम्पराओं का ज्ञान था। हिन्दू धर्म में होने वाली पशुबलि और हिंसक यज्ञ से समाज को नुकसान हो रहा था। बौद्धों ने वेदस्वीकृत बलि और यज्ञ का निषेध तो कर दिया, अहिंसा धर्म भी स्वीकार किया, लेकिन बौद्ध भिक्षु तक मांसाहार नहीं छोड़ पाए। सामान्यजन की तो बात ही क्या? बौद्धों ने तर्क दिया कि वे अपने हाथों से पशुवध नहीं करेंगे। तिरुवल्लुवर बहुत ही तर्कसंगत तरीके से इन विडम्बनाओं का प्रतिकार करते हैं। वे कोल्लामै (वध-निषेध) पर पूरा जोर देते हैं। हिंसा, यज्ञ और मांसाहार का निषेध करते हैं। वे कहते हैं कि जीवहत्या नहीं करना और मांस-भक्षण नहीं करना, घृत की आहुति देकर किये गये हजारों यज्ञों से श्रेष्ठ है। एक अन्य कुरल में वे कहते हैं कि जिसमें किसी जीव की हिंसा न हो, वैसा धर्म ही सन्मार्ग है। तिरुवल्लुवर कहते हैं कि जब मांसाहार पर अंकुश

लग जाएगा तो पशुवध और मांस के क्रय-विक्रय पर भी विराम लग जाएगा। अहिंसा की भाँति तिरुवल्लुवर पारिवारिक-सामाजिक मूल्यों, राष्ट्रीय आदर्शों और मानवीय आवश्यकताओं का सुन्दर निरूपण करते हैं। सत्य, अचौर्य, दया, दान, तप, शिक्षा, नशामुक्ति, प्रेम, आतिथ्य, मृदुवाणी, कृतज्ञता, न्यायप्रियता, संयम, क्षमा, परोपकार, वर्षा, खेती, सुशासन इत्यादि अनेक बिन्दुओं पर उनका मार्गदर्शन आज भी उतना ही प्रासङ्गिक है, जितना दो हजार वर्ष पूर्व था।

तिरुक्कुरल में किसी कर्मकाण्ड, पूजा-विधि या उपासना पद्धति के बारे में कोई चर्चा या संकेत नहीं है। श्रेष्ठ जीवन का व्यावहारिक मार्गदर्शन है। तिरुक्कुरल में अहिंसामय, आडम्बरमुक्त और समतामय समाज की प्रतिष्ठा का सन्देश दिया गया है। इसी वजह से प्रो. सु. शंकरराजू नायडू ने लिखा, “तिरुवल्लुवर ने वास्तविक भारत को अभिव्यक्त किया है।” सम्पूर्ण तमिल समुदाय में यह ग्रन्थ सर्वमान्य है। इस ग्रन्थ के गौरव की प्रशंसा सभी देशों के श्रेष्ठ विद्वान् कर चुके हैं। इसका अनुवाद हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के अलावा अंग्रेजी, लैटिन, जर्मन, फ्रेंच आदि दुनिया की अनेक भाषाओं में हो चुका है। कई भाषाओं में एक से अधिक अनुवाद भी हुए हैं। विद्वानों ने इस पर अनेक विवेचन और भाष्य भी लिखे हैं। इतिहास एवं पुरातत्त्व के आचार्य वी.आर. रामचन्द्र दीक्षितर के अनुसार तिरुक्कुरल तमिल साहित्य का गौरव है। संस्कृत साहित्य में जो स्थान वेद और भगवद् गीता को प्राप्त है, तमिल साहित्य में वही स्थान तिरुक्कुरल को प्राप्त है।

शिलप्पदिकारम्

तमिल साहित्य में प्राचीन काल के पाँच महाकाव्यों का विशेष महत्त्व है। इनमें ‘शिलप्पदिकारम्’ अथवा शिलप्पदिहारम् तमिल

साहित्य का प्रथम और अति लोकप्रिय महाकाव्य है। इसकी रचना जैन सन्त कवि इलंगो अडिगल ने की। तमिल में श्रद्धास्पद व्यक्ति या सन्त के लिए ‘अडिगल’ शब्द प्रयुक्त होता है। कवि इलंगो अडिगल चेर राजा इमयवरम्वन् के अनुज थे। इलंगो अडिगल अर्हत् मन्दिर में रहते थे। ईसा की दूसरी-तीसरी शताब्दी इसका रचनाकाल माना जाता है। इस महाकाव्य में तीन खण्ड, तीस अध्याय और 5730 पद हैं। इसमें चोल, पाण्ड्य और चेर, इन तीन राजवंशों का उल्लेख है। शिलप्पदिकारम् का शाब्दिक अर्थ है-नूपुर की कहानी। इस काव्य के नायक-नायिका ‘कोवलन’ और ‘कण्णगि’ हैं। दोनों पञ्च परमेष्ठी के प्रति आस्था रखते और जैनसिद्धान्तों का पालन करते हैं। जैन साध्वी ‘कउंति अडिगल’ उन्हें जीवन-धर्म और आत्म-कल्याण का उपदेश देती है।

इस काव्य में नूपुर और कण्णगि घटनाओं के केन्द्र में हैं। नायिका कण्णगि के शील और शौर्य का अनुपम वर्णन है। कण्णगि अपने पतिव्रता धर्म, साहस और सदाचार के कारण सर्वपूज्या बन जाती है। वह साहस के साथ गलती करने वाले राजा को भी दण्डित करती है। अन्तिम समय में वह संलेखना के साथ देह-त्याग करती है। काव्य में जैनदर्शन के कर्मवाद का जीवन्त चित्रण हुआ है। देव और मानव के बीच होने वाले रोचक संवाद विस्मित करते हैं। इस कथा की तीन प्रेरणाएँ हैं—(1) राजा भी अन्याय करेगा तो वह दण्डित होगा, (2) शीलवती और पतिव्रता नारी सर्वपूज्या बनती है, एवं (3) अनिकाचित कर्म अपना फल दिखाते ही हैं।

कण्णगि आज भी तमिल प्रदेश में आदर्श नारी, वीराङ्गना और जननायिका के रूप में समादृत है। कई स्थानों पर कण्णगि की मूर्तियाँ लगी हैं। कई स्थानों के नामकरण भी कण्णगि के नाम से हैं। महाकाव्य में कवि ने तत्कालीन तमिल समाज का

सजीव चित्र प्रस्तुत करने के साथ-साथ समाज में प्रचलित नृत्यों, व्यवसायों, परम्पराओं आदि का भी परिचय दिया है। इस काव्य में राम, कृष्ण, शिव, विष्णु आदि की भी मुक्त प्रशंसा की गई है। यह ग्रन्थ सार्वभौमिक उदारता और सहिष्णुता का आदर्श प्रस्तुत करता है।

जीवक चिन्तामणि

तमिल के पाँच महाकाव्यों में जीवक चिन्तामणि भी एक है। यह जैन मुनि तिरुत्तककदेवर द्वारा रचित नौवीं-दसवीं सदी का जैन महाकाव्य है। इसमें चार पंक्तियों के कुल 3145 पद हैं। इसमें पहली बार विरुत्तम (वृत्त) छन्द का प्रयोग किया गया। परवर्ती तमिल कवियों ने भी इस छन्द का अनुसरण किया। डॉ. एम. शेषन के शब्दों में—“इस काव्य में विशेष सौन्दर्य के कारण तमिल भाषा में एक नई आभा प्रदर्शित हुई। वास्तव में तमिल भाषा और साहित्य के लिए यह एक अमूल्य अवदान माना जाता है। कल्पना की सुन्दरता, विचारों की गहराई, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि काव्यालङ्कारों के सुन्दर प्रयोग से यह एक अतुलनीय काव्य बन गया।”

तिरुक्कुरल की भाँति यह ग्रन्थ भी तीन खण्डों में विभक्त है—धर्म, अर्थ और काम। अन्तिम खण्ड ‘काम’ या ‘प्रेम’ बहुत संक्षिप्त है। इसमें केवल तीस पद हैं। इस काव्य में कवि ने बहुत ही तर्कसम्मत तरीके से जैनसिद्धान्तों की उपादेयता और जैनधर्म की श्रेष्ठता प्रतिपादित की है। इसकी अनेक टीकाएँ उपलब्ध हैं। इसके टीकाकारों ने भी इसे जैन काव्य माना है। धर्मराजर नामक जैन विद्वान ने इसका सटीक विवेचन किया है। तिरुक्कुरल के प्रख्यात टीकाकार परिमेल अळगर ने अपनी टीका में अनेक स्थलों पर जीवक चिन्तामणि के उद्धरण दिये हैं। इसी प्रकार शिलप्पदिकारम् के टीकाकार अडियार्क्कु नल्लार तथा तोलकाप्पियम् के

टीकाकारों ने भी जीवक चिन्तामणि के उद्धरण दिये हैं। इससे इस महाकाव्य की महिमा उजागर होती है।

पेरमकथै

पञ्च महाकाव्यों में नहीं गिने जाने के बावजूद पेरमकथै एक महत्त्वपूर्ण जैन महाकाव्य है। कोंगुनाडु के मुखिया कोंगुवेळिर ने इसकी रचना की। यह तमिल काव्य पैशाची प्राकृत भाषा में कवि गुणादय द्वारा रचित बृहत्कथा पर आधारित है। यह काव्य प्राकृत और तमिल के ऐतिहासिक सम्बन्ध का निदर्शन है।

पाँच लघु महाकाव्य

तमिल साहित्य में पाँच महाकाव्य की तरह पाँच लघु महाकाव्य भी प्रसिद्ध हैं। ये पाँचों ही लघु काव्य जैनों द्वारा रचित जैन काव्य ही हैं। इन पाँच लघु काव्यों के नाम इस प्रकार हैं—उदयणकुमार काव्य, नागकुमार काव्य, यशोधरा काव्य, चूलामणि और नीलकेशी। डॉ. एम. शेषन् ने भी इन पाँचों ही लघु महाकाव्यों को जैन मनीषियों की रचनाएँ माना है। इन पाँच लघु काव्यों में से नौवीं सदी के नीलकेशी काव्य पर समय दिवाकर और वेमन मुनि की टीकाएँ मिलती हैं। प्रो. ए. चक्रवर्ती ने सन् 1936 में नीलकेशी का अंग्रेजी अनुवाद किया।

चूलामणि की रचना जैन मुनि तोलामोलि देवर ने की। इसकी तुलना जीवक चिन्तामणि से की जा सकती है। यह जैनसिद्धान्तों का काव्यात्मक प्रतिपादन करने वाला तमिल का एक श्रेष्ठ महाकाव्य है। श्रवणबेलगोला के कुछ शिलालेखों में भी इस काव्य का उल्लेख मिलता है। इसमें भगवान महावीर के त्रिपृष्ठ वासुदेव के भव का काव्यात्मक वर्णन किया गया है। विद्वानों का मानना है कि चूलामणि आदि जैनों द्वारा रचित ग्रन्थों का कम्ब रामायण पर भी प्रभाव हुआ। उल्लेखनीय है कि 12वीं सदी में कवि कम्बर द्वारा लिखित कम्ब रामायण तमिल भाषा की प्रसिद्ध रामकथा है।

नालडियार

भारतीय साहित्य में सुभाषित ग्रन्थों की समृद्ध परम्परा में तमिल ग्रन्थ नालडियार का विशिष्ट स्थान है। 'नालडियार' या 'नालडिनानूरु' का तात्पर्य है- चार चरण वाले चार सौ छन्द या काव्यपद। इसकी रचना की रोचक कहानी है। उस समय नीलगिरि, क्रॉच, गोवर्धन, श्रीकूट, राँची, अन्नामलै, हेमकूट, विन्ध्य आदि क्षेत्रों में लगभग आठ हजार जैन श्रमण-श्रमणियाँ विचरण कर रहे थे। जब इन क्षेत्रों में अकाल पड़ गया तो वे मुनिसंघ पाण्ड्यप्रदेश में आ गए। पाण्ड्यप्रदेश में राजा और प्रजा, दोनों ने साधु-साध्वियों की साधना और प्रवास में सहयोग दिया। राजा ने उन जैन सन्तों की विद्वत्ता से प्रभावित होकर उन्हें 'सभा-कवि' का सम्मान भी दिया।

समय के साथ दुर्भिक्ष समाप्त हो गया। जैन श्रमणाचार के अनुसार सन्तों को अकारण एक ही स्थान पर अधिक समय तक नहीं ठहरना चाहिये। अतः साधु-साध्वी वहाँ से विहार करने लगे। राजा ने श्रद्धावश उनसे रुकने की विनति की। श्रमण-श्रमणियों को अपने नियम के अनुसार जाना था, इसलिए उन्होंने एक दिन चुपचाप विहार कर दिया। लेकिन विहार से पूर्व उन ज्ञानी-ध्यानी श्रमण-श्रमणियों ने अपने द्वारा रचित आठ हजार उपदेश-पदों की पाण्डुलिपियाँ वहीं छोड़ दीं।

सन्तों के इस तरह अचानक विहार से राजा को बहुत दुःख हुआ। इस दुःख में राजा ने उन आठ हजार पदों को नदी में फेंक दिया। आश्चर्य यह था कि उन पदों में से चार सौ पद नदी की धारा में नहीं डूबे। उन पदों की पाण्डुलिपियाँ चमत्कारिक ढँग से प्रवाह में नहीं जाकर पुनः तट पर आ गईं। इससे राजा विस्मित और श्रद्धाभिभूत हो उठा। राजा ने उन पाण्डुलिपियों को सम्भालकर सुरक्षित रख लिया। सातवीं सदी के जैनाचार्य पदुमनार ने उन पदों को व्यवस्थित वर्गीकृत करके 'नालडियार' नाम दिया।

इसमें संकलित काव्यपद सातवीं सदी से पूर्व के हैं।

तिरुक्कुरल की तरह इस ग्रन्थ में तीन खण्ड हैं-धर्म, अर्थ और काम। धर्म खण्ड में श्रमण (संन्यास) और श्रावक (गृहस्थ) धर्म विषयक अध्याय हैं। इसमें कुल 13 अध्याय हैं। अर्थ खण्ड में 24 और काम खण्ड में 3 अध्याय हैं। जैनाचार्य ने तिरुवल्लुवर की तरह हर अध्याय में विषय के अनुसार दस पद संजोए। इस प्रकार इस ग्रन्थ के कुल 40 अध्यायों में चार सौ पद हैं।

भारतीय संस्कृति में चार पुरुषार्थ बताए गए हैं-धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इस ग्रन्थ में प्रथम तीन पुरुषार्थों का सुरुचिपूर्ण तरीके से निरूपण किया गया है। यह ग्रन्थ सन्देश देता है कि अर्थ और काम पुरुषार्थ धर्मपूर्वक होने से चौथे मोक्ष पुरुषार्थ की साधना तथा प्राप्ति सुगम हो जाती है। मानवीय मूल्यों और मर्यादाओं का यह उत्तम ग्रन्थ है। इसमें बहुत ही सरस पद्धति से जीने की श्रेष्ठ कला बताई गई है। इसमें दार्शनिक चिन्तन, तत्त्वज्ञान और नीतिमय जीवन की अनुपम छटाएँ हैं।

नन्नूल

नन्नूल नामक तमिल व्याकरण की रचना भवन्दि भट्टारक (सन्त) ने की। यह बहुत ही अच्छा व्याकरण माना जाता है। आज भी यह तमिल विद्यार्थियों के लिए पाठ्य पुस्तक के रूप में सर्वमान्य ग्रन्थ है। प्राचीन व्याकरण ग्रन्थ तोलकाप्पियम् के समान ही इसका महत्त्व स्वीकृत है। विषय की व्यापकता और स्पष्टता की दृष्टि से इस ग्रन्थ के समकक्ष परवर्ती काल का अन्य कोई ग्रन्थ नहीं है। इसमें ध्वनि विज्ञान और रूप विज्ञान पर विचार हुआ है।

'याप्पेरुम् कलविरुत्ति' और 'याप्पेरुम् कलकारिकै'

ये दोनों ग्यारहवीं सदी की कृतियाँ हैं। इनकी रचना जैन मुनि अमुदसागर (अमृतसागर) ने की।

इसमें तमिल छन्दों का विस्तृत विवेचन किया गया है। संस्कृत से तमिल में लिखे गये वर्णवृत्त छन्दों के भेदों का विवेचन भी इसमें किया गया है। जैन विद्वान् गुणशेखर ने इन पर सुन्दर टीकाएँ लिखी हैं। छन्द शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक तमिल छात्रों के लिए इन ग्रन्थों का अध्ययन आवश्यक माना जाता है।

पलमोलि नानूरु

जैन मुनि मुन्नुरै अरैयनार ने पलमोलि नानूरु की रचना की। ग्रन्थ के आरम्भ में अशोक वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ अरिहंत परमात्मा की वन्दना की गई है। इसमें संकलित चार सौ पदों में हर एक के साथ एक-एक कहावत (पलमोलि) मिली हुई है।

सिरुपंचमूलम्

यह भी एक नीति ग्रन्थ है। इसके लेखक करियासन एक जैन साधु हैं। इसमें सौ कविताएँ हैं। हर कविता में पाँच-पाँच उपदेश हैं।

एलादि

जैन विद्वान् मणिमतव्यार रचित इस काव्य के 80 पदों में छह-छह उपदेश हैं। एलादि के लेखक ने प्रेम-सिद्धान्त पर भी एक काव्य रचा है, जिसका नाम है- 'तिणै मालै नूट्रैम्बदू'। इसमें 153 पद हैं।

अन्य साहित्य

तमिल साहित्य की श्रीवृद्धि में जैनों द्वारा रचित और भी अनेक ग्रन्थ हैं। जैसे- ऐतिणै एषुपदु (मूवात्तियर रचित), तिरुनूट्टनूदादि (अविरोधीनाथर मुनि रचित), चूडामणि निघंटु (मण्डल पुरुष रचित), अरनेरिच्चार, मेकवर पुराण, किलिविरुत्तम्, नरिविरुत्तम्, एलिविरुत्तम् आदि अनेक कृतियाँ जैन सन्तों या विद्वानों द्वारा रची गई हैं।

इन सब ग्रन्थों के अलावा भी जैनों ने अनेक विषयों और विधाओं में तमिल साहित्य की रचना की। सन् 470 के आसपास वज्रनन्दि राजा के सहयोग से मदुरै में तमिल जैन साहित्य के प्रचार के

लिए तमिल संगम की स्थापना का उल्लेख भी मिलता है। इसी समय कवि अरुणकालन् वैयादर ने 'अरुणकाल चेम्पु' और कवि मुनैप्पाडियार ने 'अरनेरिसारम्' नामक नीतिग्रन्थों की रचना की। 'नेल इलक्कण वायप्पाडु', 'सिरुक्कुषि वायप्पाडु', 'जिनेन्द्रमालै', 'वननूल' आदि ग्रन्थों की रचना भी जैनों ने की।

श्रीपुराण, गद्य चिन्तामणि आदि अनेक गद्य ग्रन्थ भी जैन विद्वानों ने रचे हैं। इन दोनों गद्य ग्रन्थों की तमिल भाषा संस्कृत मिश्रित है। इसे मणिप्रवाल शैली कहा जाता है। तमिल विद्वानों ने इस शैली को ठीक नहीं माना है। उनका मानना है कि इस प्रकार के मिश्रण से तमिल की स्वाभाविकता और सुन्दरता नष्ट हो जाती है। जैनों द्वारा रचित तमिल साहित्य में कई विशिष्ट तथ्य मिलते हैं। जैसे-

1. कुछ कृतियों में रचनाकार का नाम नहीं मिलता है।
2. सांसारिक जीवन की रंग-बिरंगी पगडण्डियों से गुजरती हुई कथा अन्त में संयम के मार्ग पर बढ़ जाती है।
3. इन कथाओं में खलनायक मानव नहीं होता, अपितु मानव द्वारा ही किये बुरे कर्म या पाप होते हैं।
4. सर्वत्र अहिंसा, जीवरक्षा और सहिष्णुता के स्वर गूँजते हैं।
5. सफलता और आत्म-विजय के लिए पुरुषार्थ, तप, आराधना आदि पर बल दिया जाता है।

यदि गौर किया जाए तो किसी भी भाषा के जैन साहित्य या जैन मनीषियों द्वारा रचित साहित्य में इस प्रकार की विशेषताएँ मिल जाती हैं। जैनों ने गणित, ज्योतिष, खगोल-भूगोल, कोष-विज्ञान, वास्तुशिल्प, ललितकला विषयक पुस्तकें रचकर भी तमिल साहित्य-सम्पदा को समृद्ध किया है। समग्र तमिल साहित्य का निष्पक्ष लेखा-जोखा और

शोधात्मक परिशीलन किया जाए तो अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हो सकते हैं।

शिलालेखीय साहित्य

तमिलनाडु में लगभग 600 जैन शिलालेखों का विवरण उपलब्ध है। यदि खोज जारी रखी जाए तो और भी अभिलेख मिल सकते हैं। इस प्रदेश का कोई जिला ऐसा नहीं है, जहाँ कोई जैन अभिलेख उपलब्ध नहीं हो। ये अभिलेख गुफाओं, चट्टानों, मन्दिर की दीवारों, मूर्तियों की पीठिकाओं आदि पर खुदे हुए हैं। ये शिलालेख ब्राह्मी और तमिल लिपि में लिखे मिलते हैं। कुछ शिलालेख ईस्वी पूर्व समय के हैं। ये अभिलेख तमिलनाडु के राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक जीवन पर ऐतिहासिक प्रकाश डालते हैं।

रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनेलॉजी से प्रकाशित पुस्तक 'जैना इंस्क्रिप्शंस इन तमिलनाडु (ए टोपोग्राफिकल लिस्ट)' में तमिलनाडु के 530 जैन अभिलेखों की सभी आवश्यक विवरण के साथ सूची प्रस्तुत की गई है। इस सूची में अनेक अभिलेखों की लिपि ब्राह्मी है। भाषा और लिपि के अलावा हर अभिलेख के स्थान, समय और सन्दर्भ का उल्लेख भी किया गया है। यह पुस्तक तमिलनाडु में जैनधर्म और संस्कृति के व्यापक प्रभाव का उल्लेखनीय अभिलेखीय दस्तावेज है।

इस पुस्तक का शोध तथा पुरातात्विक दृष्टि से बहुत महत्त्व है। इसमें सूचीबद्ध हर अभिलेख महत्त्वपूर्ण है। इस पुस्तक में पाँचवीं-छठी सदी का अभिलेख (क्रमांक 450) तमिल भाषा और ब्राह्मी लिपि में लिखा हुआ है। इसमें मुनि चन्द्रनन्दी के 57 दिवसीय संधारे का उल्लेख है। इसी प्रकार दसवीं सदी के अभिलेख (क्रमांक 451) में इल्लैयपदारर के 30 दिन के संधारे का उल्लेख है। अगस्त-2015 में जब राजस्थान उच्च न्यायालय ने संधारे के खिलाफ फैसला दिया तो मामले को सर्वोच्च न्यायालय में ले

जाया गया। शीर्ष अदालत में संधारे के पक्ष में अनेक सन्दर्भ प्रस्तुत किये गये, उनमें यह पुस्तक भी थी। यह सर्वविदित है कि 31 अगस्त 2015 को उच्चतम न्यायालय ने उच्च न्यायालय के निर्णय पर प्रतिबन्ध (स्टे) लगा दिया था।

मौलिक कृतियों और अभिलेखों के अलावा प्राकृत और संस्कृत साहित्य के तमिल में अनुवाद के द्वारा भी जैन मुनियों, साध्वियों और विद्वानों ने तमिल साहित्य के विकास में उल्लेखनीय योगदान किया। प्राकृत और संस्कृत साहित्य की अनेक विधाओं, कलाओं, कथाओं, विचारों और तत्त्वज्ञान को नई भावभूमि और नई भाषाशैली में तमिल में लाने का कार्य जैन मनीषियों ने किया। उस समय के साहित्य और संस्कृति प्रेमी शासक और श्रेष्ठिजन भी जैनों की साहित्य-साधना में सहयोगी बने।

मध्यकाल में एक समय ऐसा भी आया, जब जैनों के बहुविध उपकारों और बढ़ते प्रभाव को अन्य मतावलम्बी सहन नहीं कर पाए। उस काल में छल-बल, क्रूरता और कायरतापूर्ण तरीकों से जैनों पर अमानवीय अत्याचार हुए। जैन संस्कृति के गौरवशाली प्रतिमानों को अकल्पनीय क्षति पहुँचाई गई। उस बुरे काल में जैनों द्वारा रचित तमिल साहित्य और तमिल जैन साहित्य का भी भारी नुकसान हुआ। अनेक दुर्धर्ष संघर्षों के बावजूद जैनों ने ज्ञान की अलख जगाए रखी, जिसका उजाला आज भी तमिल प्रदेश में बिखरा हुआ है और जन-जन को आलोकित कर रहा है।

सन्दर्भ

1. 'जैना इंस्क्रिप्शंस इन तमिलनाडु (ए टोपोग्राफिकल लिस्ट)'; डॉ. ए. एकांबरनाथन् और डॉ. शिवप्रकाशम् द्वारा संकलित और सम्पादित। रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनेलॉजी, चेन्नई से 1987 में प्रकाशित।
2. 'नालडियार'; संस्कृत और हिन्दी पद्यानुवाद तथा अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर से 1990 में प्रकाशित।

3. 'शिल्पदिकारम्'; आचार्य ति. शेषाद्रि के हिन्दी अनुवाद के साथ भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ से 1990 में प्रकाशित।
 4. 'नीलकेशी'; प्रो. ए. चक्रवर्ती के अंग्रेजी अनुवाद के साथ प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर से 1994 में प्रकाशित।
 5. तोलामोलि देवर रचित 'चूलामणि'; डॉ. पी. पांडियन के अंग्रेजी अनुवाद के साथ दो भागों में रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनेलोजी, चेन्नई से 2003 में प्रकाशित।
 6. 'तमिलनाडु में जैन/बौद्धधर्म एवं तमिल साहित्य की श्रीवृद्धि में योगदान'; डॉ. एम. शेषन् द्वारा लिखित एवं साहित्य सहकार, दिल्ली से 2004 में प्रकाशित।
 7. प्रो. ए. चक्रवर्ती के अंग्रेजी अनुवाद एवं डॉ. रामशंकर मिश्र एवं डॉ. एन. सुंदरम् के हिन्दी अनुवाद के साथ प्राकृत भारती अकादमी से प्रकाशित 'तिरुक्कुरल'। प्रकाशन वर्ष 2006 (द्वितीय संस्करण)।
 8. तेलुगू-हिन्दी साहित्यकार डॉ. बालशौरि रेड्डी, हिन्दी-तमिल विद्वान डॉ. एम. शेषन् आदि मनीषियों के साथ की गई चर्चा।
- निदेशक : अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, 7, अय्या मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600001 (तमिलनाडु)

मेरे हीरा गुरु है महान्

अनुपमा दलपत जैन

मेरे हीरा गुरु है महान्, करलो वन्दन, बारम्बार
ओ मेरे हीरा गुरु हैं महान् करलो वन्दन बारम्बार
तेरे चरणों में वन्दन हजार,
ओ गुरुवर शत शत बार प्रणाम
ओ गुरुवर सौ-सौ बार प्रणाम
किया जग में यह आह्वान,
व्यसन मुक्त हो सारा जहान
हो गुरुवर शत शत बार प्रणाम
जुआ चोरी तुम छोड़ो, मदपान से नाता तोड़ो-2
जीवों की पालो दया,
रे मनवा व्यसनों का कर लो त्याग
रे मनवा व्यसनों का करलो त्याग, किया जग में.....
व्यसन दुर्गुण के भण्डार करते जीवन का है नाश-2
रे मनवा पापों कर करलो त्याग,
ओ मनवा व्यसनों का कर लो त्याग, किया जग में...
गुरुवर हीरा का सन्देश,
पहुँचा दो घर-घर में एक-2
कि व्यसन मुक्त हो सारा देश-2 किया जग में.....

-बी 203, एब्रोल् वास्तु पार्क, एवरसाईन नगर,
मलाड (वेस्ट) मुम्बई-400064 (महाराष्ट्र)

सुभाषित वाक्य

संकलन : श्री कस्तूरचन्द बाफना

1. बहस तय करती है कि कौन सही है, बातचीत तय करती है कि क्या सही है?
2. जमाना भी कितना अजीब है कि नाकामयाब लोगों का मज़ाक उड़ाता है और कामयाब लोगों से जलता है।
3. अगरबत्ती दो प्रकार की होती है, एक भगवान के लिए और एक मच्छरों के लिए। तकलीफ़ यह है कि भगवान आते नहीं और मच्छर जाते नहीं।
4. दुःख में स्वयं की एक अंगुली ही आँसू पोंछती है और सुख में दसों अंगुलियाँ ताली बजाती हैं। जब स्वयं का शरीर ही ऐसा करता है तो दुनिया से गिला-शिकवा क्यों?
5. तन जितना घूमता रहे उतना ही स्वस्थ रहता है, मन जितना स्थिर रहे उतना ही शान्त रहता है।
6. दूसरों का उपकार स्वयं का उपकार है।
7. क्यों घबराते हो दुःख होने से? जीवन का प्रारम्भ ही होता है रोने से।
8. दृष्टि सृष्टि को बदल देती है।

-91, नयनतारा, सुभाष चौक, जलगाँव-425001

Laws, constituents, doctrines and concepts of Jainism

Dr. Narendra Bhandari

I begin with thanking the Institute of Noetic Science for my participation in this conference. As I was coming to this conference, I realised that I have several things common with Edgar Mitchell, the founder of this organisation. I will mention just three of them: The first link is the Moon. Mitchell was the sixth astronaut to walk on the moon and I had the opportunity to analyse the Moon samples he brought from his Apollo 14 trip. The second link is meteorites which contain the 'star dust'. As Mitchell looked at the stars from his space capsule, he had this noetic experience that he is star dust, the grains from the heavens out of which everything in our planet and the sun is made of. I had a chance to isolate these star dust grains from carbonaceous chondrites and analyse them in Physical Research Laboratory, where I worked as a scientist. Two years ago a carbon containing meteorite fell in Jaipur, not far from our place, and we found large organic molecules, called macro molecules with 100 carbon atoms or more and showed that they were formed in the interstellar cloud from which our solar system- the sun, the earth and all the planets were formed. It is amazing that for 4 and a half billion years it remained preserved through various chaotic processes in space and found a way to reach us to tell its story – that these are our common ancestors. The other thing, I want to mention is the deep noetic experience of One-ness of the whole universe, Mitchell had as he was traveling from

the moon to the Earth. I have not felt this kind of unity or universal one-ness of things but had the intense experience of interdependence of everything in the universe from the teachings of Mahavir. This interconnectedness is so intense and real that if I move this pen from here to there, I feel that the whole universe has changed. Mitchell's experienced this one ness on his high speed journey from Fra Mauro, not far from the sea of Tranquility on the Moon and mine is based on Mahavir's realisation during meditation, 2600 years ago, what he called, *Parasparopagraho jivanam*: or rather - I should say, by attaining absolute tranquility through meditation. If I can immerse more deeply, The experience of one-ness of things and interdependence of everything , which I experience every moment of my life , I believe, will become the same. This feeling makes another point: whether you go totally outside, as Mitchell did or deep inside, as Mahavir did, you can experience the Truth behind our existence.

Jain philosophy is not much known in this part of the world. And therefore I will like to briefly discuss its main concepts here. It is probably wrong to call it philosophy, because actually it is not a philosophy or a religion or a faith, but it is a path, path to attain liberation- it is a recipe to attain enlightenment.

What is Jainism all about? It is to do with the 'world view', what they call samyag-darshan. Each one of us has a world view and we act and think according to this personal,

* Based on the talk given at The 18th Noetic Science conference, Santa Clara, (July 18-21, 2019) representing N.L. Kachhara and Samani Chaitanya Prajna.

subjective world view and behave accordingly. Obviously all the views are not correct, in any absolute sense. Jainism is all about having the correct world view. Once one attains the correct worldview, everything falls in place.

In a nut shell Jainism is an atheist philosophy, not subscribing to the idea of GOD the creator. But in a sense it is more theist than all other philosophies, because it poses full faith in the Self, and claims that any one, any ordinary person can become enlightened and omniscient by following certain practices..... practices of cleaning oneself of emotions, attachment, physically and mentally, by practices of self discipline, penance and meditation, which eventually leads to salvation. It is not just a theory but an experiential philosophy, has been enunciated by those who achieved it themselves, by these practices in their life time, we call Tirthankara. It shifts the responsibility of your emancipation from GOD to you, yourself. Thus the onus of attaining liberation is on you, you have to do it yourself and can not out source this goal to GOD.

Jainism propounds that the universe i.e. living and non living both are governed by Laws and not God. The three main laws are Laws of conservation, Law of causality and the Law of coexistence or interdependence. The whole edifice of Jain philosophy has been built upon this basic idea of interdependence of everything, living and non-living. Thus this is a holistic philosophy based on Laws, logic, observations and rationality. Law of coexistence implies that everything depend on everything else, nothing is independent, or can exist in isolation and everything is entangled with everything else and there is nothing like individual existence. Any change in one brings, automatically a change in all the others, intrinsically and spontaneously.

Law of Interdependence or coexistence Leads to the concept of - 1. All life is sacred: our life depends on others 2. Non-violence to all other life forms.

Law of Conservation states that nothing can be created from nothing and nothing can be destroyed. The concept of eternity or immortality arises from this concept that every thing real in this universe exists for ever. This leads to the concept of rebirth because soul can not be destroyed.

The Law of Causality means that for every cause , there is an effect and there is no effect without some underlying cause. One has therefore to face the consequence of his actions and thoughts in appropriate measure and can not escape. Chance, coincidences and miracles have no place in such a theory.

Jainism is not a monistic philosophy, in which there is only one reality (like matter the scientists assume, or Supreme God of theists or Brahm of the vedantists) and everything we see arose from it. But Jainism is a multistic philosophy, requiring 6 entities. The Jain concept of universe, propounds that all space is divided in two parts, a finite lokakash or cosmic space immersed in an infinite Alokakash or supra-cosmic space. There are only five types of independent phenomena that occur in the universe (Lokakash). Living processes involving soul, processes involving matter, motion, rest and processes involving transformation of all these entities. Each of these is due to one independent real entity. Thus we have Space (aakash), Time (kaal), jiva (living), matter (pudgal), agents of motion (dharmastikaya) and Agents of Rest (Adharmastikaya) since none of them can be produced from any other, because of Law of Conservation, i.e. matter can not be produced from space or motion from time or life from matter or vice versa.

Soul, matter and kaal are active and interactive reals and space, dharma and adharmas are passive; only facilitative reals.

A point should be made here about kaal. This is usually taken to mean time but this is not a correct perception. Time is considered to be passive; scientists think that time is an imaginary construct of mind, required only to document change of state. Kaal, in comparison is a forceful real, which acts on other reals, and together with karma brings about changes in conformity with karma.

Besides the three laws, six reals, there are three attributes of the soul - consciousness, intelligence and karma, all interlinked and interrelated. These form the basis of Jain philosophy. These give rise to three bodies of a living being: the physical gross (audarik) body, the metabolic energy (Tejas) body and the Causal, Karman body. Consciousness, intelligence and soul are inseparable; neither can not exist without the other. Soul and matter interact with each other and give rise to Karman (causal, subtle material) body.

These 3 laws, six reals and 3 bodies form the basic components of Jain philosophy. All souls are identical, always the same, full (purna), perfect and never partial, in all living beings, big and small. Consciousness and intelligence are the perennial activities of the souls although manifestation of consciousness (or apparent consciousness) depends on Karma, which in turn depend on development of sensory organs and brain or mind. Dissolution of Karman body leads to emancipation or moksha. This concept of karma and interdependence of karma, intelligence and consciousness is quite unique to Jain philosophy. When karma or the subtle material body is eliminated, Intelligence or what we call *jñāna* and consciousness, what we call *chetana* blooms to perfection.

We now turn to **Properties of Soul and Matter**

- ◆ soul is the basis of life. The identifying characteristic of soul is consciousness (*chetna*), sentience.
- ◆ Consciousness primarily manifests in two ways.
Darshana: The correct perspective or **world view**
Jñāna – intelligence to know and cognize. Other manifestations are: bliss, spiritual energy, etc.
- ◆ Consciousness is eternal, always perfect, full, identical, in all living beings, never partial; only its manifestation is limited because of karma, caused by desires and emotions, and by capabilities of sensory organs and brain.
- ◆ Consciousness is not an emergent property of matter or brain or mind.
- ◆ Matter is insentient: can not give rise to life.
- ◆ Living beings are a combination of soul and karma, a kind of subtle matter. Embodied Soul is in impure state.
 - **Pure souls** are omniscient and have *infinite* consciousness, intelligence and bliss and Free will.
 - **Free will (choice) of the soul to think and act** leads to binding of karmas with soul due to **Law of Causality**. karmas defile the soul, obscuring power of consciousness and enlightenment.
 - **Souls in impure state** experience desires and emotions (e.g. attachment, anger, greed, etc.). The intelligence and power of awareness manifests only to a finite extent (limited by emotional and material impurity).
 - All conscious experiences like pain,

pleasure, will, emotions, awareness (or self-awareness e.g. I am soul), cognitive experiences, love, hate, attitudes, etc., are due to soul and not by the body.

- Matter has no intelligence and no power of awareness.

As mentioned above, the worldly souls are always associated with three bodies: **Karma** or causal body, **Energy** body and physical body. The Soul is the central unit or seed of the system, without it the other three bodies do not exist.

- **1. Karma body** – contains karma that stores information of all activities, mental, vocal and bodily, performed by the soul in the past i.e. all past lives and the present life.
- Karmas are material particles made up of massless subtle matter, *karman-vargana*.
- There is regular inflow, bonding, and outflow, fruition, of karma in the karma body due to activities of the soul.
- Karmas obscure the soul and prevent full manifestation of its powers. The powers we experience depend on the type and intensity of karma.
- 2. **Energy Body** – In side the physical body, exists an Energy body, which provides energy to both the karma and gross body.
- It is made up of massless subtle matter.
- Both the karma body and energy body remain bound to soul when soul transmigrates from one life to another. Thus information acquired during past and present birth is carried forward in re-births.

- Karmas are broadly of two kinds : **psychical** and **biological**. Operation of the psychical karmas decides the psychical performance of the soul that is visible through actions of the body. The biological karmas determine the form of life, structure, operation and maintenance of the gross body, and other subtle bodies.
- Transformation of soul are karma dependent and follows the Law of karma (Causality).
- All components of the system i.e. soul, karma body, energy body and gross body are interconnected and entangled. They continuously exchange information. Any change in one automatically, and spontaneously makes a corresponding quantitative change in the other.
- ◆ Mind develops in humans, and other five sense animals, Mind is made up of massless subtle matter, *manovargana*, and works with manifested powers of the soul.
- ◆ Mind exists all over the body space and is different from brain.
- ◆ Mind contains memories, thinks, imagines, plans, takes appropriate choices out of various options available and decision and is instrumental in feeling and willing.
- ◆ Mind is singular, only one thought at a time, though thoughts may follow in quick succession.
- ◆ Karma is the cause of existence of the other three bodies. When karmas are eliminated all three bodies cease to exist and the soul is set free, liberated.
- ◆ Soul becomes omniscient on elimination of psychical karma.

I will end by saying that Soul is non-corporeal and can not be seen by any physical

technique. Soul can only be seen or experienced by a soul. The correct world view is embedded in the soul. One can attain the correct world view, and realise the nature of self and the universe by techniques of meditation, penance and self discipline. When one has realised the correct world view and lives by it, one is liberated. This is the state of Moksa.

To understand the depth of Jain philosophy, we must include three doctrines, doctrine of multiplicity of modes (Anekantavada) that everything in the universe has multiple modes of existence, the doctrine of 'No-one Absolute Truth (syadvada)' and 'The science of soul (atmavada)', by which soul can be freed of karma.

Thus, in a nut shell :

1. Jain philosophy is an atheist philosophy (not subscribing to God, The Almighty, God the creator) based on three Laws, six entities in the universe and three bodies of living beings.
2. Life is combination of soul and matter, both subtle and gross.
3. All living beings, trees, insects, animals or humans, have an identical soul having the same potential.

4. Our experiences are controlled by karma. Karmas determine the manifestation of consciousness.
5. The activities and performance of a living system is governed by laws, and the power of Free Will of the soul.
6. Any one can attain enlightenment by practicing the prescribed techniques of meditation, self discipline and penances of purification of body, mind and transcending emotions.

Thus we see that the six entities explain all the constituents and functions of the universe, three bodies explain the function of living beings, three laws explain all the processes in the universe and three doctrines explain the nature of the universe.

Further details can be found in

- "Living Systems in Jainism: A Scientific Study", by Narayan L. Kachhara on www.spiritualsciencesg.com and
 - Jainism: an eternal and universal path to Enlightenment by Narendra Bhandari, Prakrit Bharati Academy, Jaipur.
- < www.nbhndari.org > and
< www.scienceandspiritualityri.org >
-804, Yash Aqua, Vijay Char Rasta, Navrangpura,
Ahmedabad-380009 (Gujarat)

मन से मन का प्रेम अब कहाँ

श्री राकेश मेहता (सी.ए.)

मन से मन का प्रेम अब कहाँ है
अपने हृदय को समझें ऐसे भाव कहाँ हैं?
मन को लुभाने वाले गीत अब कहाँ है?
मन को पवित्र कर देने वाला
संगीत अब कहाँ है?
लोग भटक रहे हैं बिना मञ्जिल के,
ऐसा जहाँ क्यूँ है?
संयम नहीं, शान्ति नहीं,

केवल भीड़ का आलम क्यूँ है?
आत्मीय प्रीत की जोत नहीं है,
केवल दैहिक आकर्षण क्यूँ है?
संवेदना नहीं, भाव नहीं, मर्म नहीं,
ऐसा मन क्यूँ है?
सम्भल जाओ अभी भी वक्त का साथ है।
प्रीत की डोर से बँध जाओ, यही नाथ है।

-प्लॉट नं. 8, शिप हाऊस रोड, कायमखानी
हॉस्टल के सामने, धर्मनारायणजी का हत्था,
पावटा, जोधपुर-342006 (राजस्थान)

चातुर्मास : एक स्वर्णिम अवसर

श्री पदमचन्द्र गाँधी

चातुर्मास एक ऐसा सुनहरा अवसर है जिसका श्रावक-श्राविका पूर्ण लाभ उठाते हुये तथा बीते समय की गलतियों को सुधारते हुए अपने आपको धार्मिक क्रियाओं के शुभ चिन्तन में लगाते हैं। यह अध्यात्म का पथिक बनने की प्रेरणा देता है।

जीवन को साधने का स्वर्णिम समय- वर्षा ऋतु को जीवोत्पत्ति की जननी कहा गया है। क्योंकि इस ऋतु में अन्य ऋतुओं की अपेक्षा सूक्ष्म एवं बादर जीवों की अधिक उत्पत्ति होती है तथा उनका आवागमन अधिक होता है। इन जीवों की विराधना न हो, इसलिए श्रमण एक स्थान पर स्थिर हो जाते हैं तथा श्रावक इनके पूर्ण विवेक को ध्यान में रखते हुए स्थिर रहने का प्रयास करते हैं। सभी का उद्देश्य हिंसा से बचाना है। चातुर्मास धर्म आराधना करने का समय है। इस अवधि में साधु-साध्वी धर्म-प्रचार एवं सम्यक् आचरण के लिए, मानवता के संस्कारों के श्रेष्ठ मूल्यों की स्थापना के लिए तथा समाज में सद्भावना कायम करने के लिए श्रावकों में जागृति उत्पन्न करते हैं। इस अवधि में श्रावक एवं श्रमण दोनों को अध्यात्म पथ पर आगे बढ़ने का अवसर मिलता है।

चार माह हमें सन्देश देते हैं। श्रावण कहता है सन्तों को श्रवण करो, भाद्रपद कहता है भद्र और सरल बनो, आश्विन कहता है-आलस्य छोड़ो, कार्तिक कहता है यदि आलस्य नहीं छोड़ा; सन्तों को सुनकर श्रावक नहीं बने, भद्र परिणामी नहीं बने तो कर्म निर्जरा एवं पुण्य अर्जन से वञ्चित हो जाओगे तथा जीवन व्यर्थ चला जायेगा। इसलिए साधु-साध्वी अपनी साधना में, त्याग, तप, जाप,

अनुष्ठान, ध्यान, स्वाध्याय, शास्त्रवाचन आदि को गति देते हैं तथा श्रावक इनका लाभ उठाते हैं। श्रमण भगवन्त श्रावकों को पाप क्रियाओं एवं कषायों से बचने का मार्ग बताते हुये हमें त्याग एवं प्रत्याख्यान की प्रेरणा देते हैं। श्रमण अपने उपदेशों से श्रावकों के अज्ञान के अन्धकार को मिटाकर जीवन में नयी रोशनी लाने का प्रयत्न करते हैं। श्रमण स्वयं अपनी साधना के साथ-साथ समाज एवं जनसमूह हेतु धर्म की प्रभावना के लिए विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से प्रेरित करते हैं जिनका लाभ जनसमूह को सहजता से प्राप्त होता है। चातुर्मास अनुशासन, साधना, संयम तथा आत्म-उन्नति की राह प्रशस्त करता है, जिसकी साधना करते हुये साधक के मानस पटल पर संस्कृति एवं सदाचार प्रस्फुटित होता है।

स्व-मूल्यांकन का पर्व-चातुर्मास उस दर्पण के समान है जिसमें झाँक कर हम जान सकते हैं कि हम धर्म के कितने नज़दीक हैं तथा धर्म का कितना पालन हम कर रहे हैं। वर्ष भर में कितने अकरणीय कर्म किये हैं जिनसे कितने कलंक एवं कालिमा हमारे पर लगी, इन सभी का मूल्यांकन इस अवधि में करना है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान कराने का पर्व भी है, इसलिए इसे संस्कार पर्व भी कह सकते हैं। चातुर्मास में सन्त-सतियाँ मानव में मानवता का संस्कार भरने का कार्य करते हैं। इस पर्व की सार्थकता तभी है जब हम हमारे भीतर में व्याप्त राग-द्वेष को दूर करें, मन की बँधी हुयी गाँठों को खोलने का प्रयास करें तथा दैनिक दोषों का निवारण करें। हम त्रस एवं स्थावर जीवों को कितना बचा रहे है? कितने व्रत नियम प्रत्याख्यानो का पालन कर रहे हैं तथा मन को कितना सरल एवं

सहज बना रहे हैं। इन सबके मूल्यांकन करने का यह सुनहरा अवसर है।

मन, वचन और आत्म-शुद्धि का महापर्व-श्रमण इस अवधि में हमें जिनवाणी का रसास्वादन कराते हैं और हमें नित्य प्रति जीवन को जैनत्वमय बनाने का सन्देश देते हैं। इतना ही नहीं वे हमारे दृष्टिकोण को बदलने का प्रयास करते हैं। विराजित सन्त-सती हमारे आस्रवद्वार बन्द करने तथा संवर में समय बिताने की राह प्रशस्त करते हैं जिससे साधक अपने कर्मों की निर्जरा करता है एवं भीतर में व्याप्त कषायों के विकारों को नष्ट कर के मन, वचन और आत्मा को निर्मल एवं पवित्र बनाने का प्रयास करता है। चातुर्मास आत्मा को सात्त्विक खुराक देने वाला मौसम तथा स्व-कल्याण का सुनहरा अवसर है। इस अवधि में साधक अपनी साधना के प्रभाव से संवेदनाओं को जागृत कर करुणामय बनता है। वह अपने सुख की खोज में दूसरों को सुख से वञ्चित नहीं करता। चातुर्मास हमें आत्मा से परमात्मा की ओर, वासना से उपासना की ओर, अहं से अहम् की ओर, आसक्ति से अनासक्ति की ओर, भोग से योग की ओर, हिंसा से अहिंसा की ओर तथा बाहर से भीतर की ओर आने का अवसर प्रदान करता है, तथा इनको आचरित करके श्रावक श्रेष्ठ बनने का प्रयत्न करता है।

संस्कार जगाने का माध्यम-चातुर्मास के दौरान संस्कार, संस्कृति एवं सदाचार पालन पर विशेष ध्यान दिया जाता है और श्रद्धालुओं एवं अनुयायियों को इन पर चलने के लिए प्रेरित किया जाता है। मानवता के परिप्रेक्ष्य में चातुर्मास की उपयोगिता इसलिए भी अहम् हो जाती है कि सन्त-सती अपने प्रवचन के माध्यम से नियमित रूप से जन समुदाय को प्रेरित करते हैं। इसी अमृतमयी ज्ञान सरिता से जीवन के मन्त्र, जीवन के सूत्र बन जाते हैं। इस अवधि में साधक मन्त्र-साधना एवं स्वाध्याय

करके ज्ञानार्जन करता है। समाज को भी साधर्मिक सेवा एवं सुपात्र दान का अवसर प्राप्त होता है। साधक अपने जीवन का आत्म-बोध प्राप्त कर मिथ्यात्व को मिटाता है। सम्यग्ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं तप के माध्यम से साधक अपने जीवन को संस्कारशील, अध्यात्ममय एवं उत्कृष्ट बनाता है।

स्वाध्याय द्वारा मन को निर्मल करने का अवसर-साधक के लिए चातुर्मास स्वाध्याय करने का स्वर्णिम अवसर लेकर आता है। नियमित स्वाध्याय द्वारा साधक जीवन के सत्य को समझने का प्रयास करता है। भेद विज्ञान को जानने का प्रयत्न करता है तथा सत्य की राह पर चलने के लिए कदम बढ़ाता है, क्योंकि सत्य को समझना सम्यग्ज्ञान है, सत्य की शोध करना तथा उसका ध्यान करना सम्यग्दर्शन तथा सत्य का अनुभव कर आत्मरमण करना सम्यक् चारित्र है। साधक स्वाध्याय द्वारा ऐसा आत्मज्ञान प्राप्त करता है जिससे उसके जीवन की सत्ता में पड़े हुए कर्मों का कैसे क्षय किया जाये, उसको जानने का वह मार्ग खोज लेता है। कर्मों का क्षय करने की कला ही सम्यक् तप है और चातुर्मास हमें तप करने का सुनहरा अवसर प्रदान करता है।

नई पीढ़ी के युवाओं के लिए प्रेरणा-चातुर्मास के माध्यम से युवा पीढ़ी के युवाओं को आसानी से जोड़ा जा सकता है। यदि चातुर्मास के अन्तर्गत पूर्व नियोजित, व्यवस्थित, विषय-वस्तुओं, गोष्ठियों, चर्चाओं इत्यादि कार्यक्रमों को ज्वलन्त समस्याओं के साथ-साथ जोड़कर सम्पन्न किया जाये, शास्त्रों का निरूपण आज के सन्दर्भ में किया जाय तो युवाओं के लिए अधिक कारगर सिद्ध हो सकता है। नई पीढ़ी को धर्म के ज्ञान, अज्ञान एवं विज्ञान की वैज्ञानिकता, प्राकृतिक सामञ्जस्य, सामाजिक सौहार्द की पृष्ठभूमि से अवगत कराये जाने का अच्छा अवसर चातुर्मास ही है। धर्म मुक्ति का मार्ग है। अतः युवाओं में सौहार्द एवं

आध्यात्मिकता पर ध्यान केन्द्रित कर उन्हें जोड़ने का स्वर्णिम समय है। इस प्रकार युवाओं के मन को टटोलकर उन्हें आत्मज्ञान कराने की शिक्षा चातुर्मास काल में आसानी से दी जा सकती है जो कि केवल धर्म से ही सम्भव है तभी उसके जीवन का अधूरापन मिट पायेगा, जिससे युवा पीढ़ी विमुख होने से बच सकेगी।

पर्वों में महापर्व है चातुर्मास-चातुर्मास पर्वों को लेकर आता है। रक्षाबन्धन का पर्व वात्सल्य और संस्कृति का उपदेश देता है। पर्युषण महापर्व इसी वर्षावास में आता है जो आध्यात्मिक क्रान्ति को उजागर कर हमारे भीतर छुपी हुई क्षमता, हमारे भीतरी गुणों को बाहर लाकर 'पर' से 'स्व' का ज्ञान कराता है। सांवत्सरिक महापर्व क्षमा की सीख देता है, कषायों पर विजय पाने का सन्देश एवं अभयदान का पाठ पढ़ाता है तथा सभी जीवों से मैत्री करना सिखाता है। दशहरा जो बुराई पर अच्छाई की विजय होने का प्रतीक माना जाता है तथा अहंकार का त्याग करना सिखाता है। भगवान महावीर का निर्वाण पर्व दीपावली हमारी अज्ञानता को दूर कर ज्ञान के

प्रकाश को फैलाने का सन्देश देता है तथा मर्यादा पुरुषोत्तम राम को वनवास से लौटने का उदाहरण हमें मर्यादाओं में रहने की शिक्षा देता है। ऐसे कई त्योहार जैसे तीज, कृष्ण जन्माष्टमी इत्यादि रिशतों की मिठास को बढ़ाते हैं, सौहार्द एवं भाईचारे को बढ़ाते हैं। इस प्रकार चातुर्मास पर्वों की सौगात लेकर आता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि चातुर्मास वस्तुतः जीवन परिवर्तन, मर्यादा संरक्षण, धर्म और संस्कृति को लुप्त होने से बचाने तथा शास्त्र चर्चा एवं जीवन को उन्नत करने का उपक्रम है। यह सत्य भी है हमारा अध्यात्म उन्नत है तो हमारा जीवन उन्नत है, हमारा खान-पान, हमारा आचरण, हमारी विचारधारा, हमारे रिश्ते तथा हमारी समझ भी उन्नत बन जाती है। इस प्रकार यदि हम चातुर्मास को समझें, जीवन में उतारें तो हमारा मानसिक उत्थान तो होगा ही, साथ ही हम जिन शासन के सच्चे श्रमण उपासक भी बन सकेंगे।

-25, बैंक कॉलोनी, महेश नगर विस्तार-बी,
गोपालपुरा बाईपास, जयपुर-302018 (राज.)

प्रेरणा का पाथेय है मांगलिक

मधुरव्याख्यान्ती श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी
म. सा.

जीवन का आत्मविश्वास है मांगलिक,
प्रभु भक्ति का एहसास है मांगलिक,
शरणागत की आस है मांगलिक,
समाधान का आश्वास है मांगलिक,
आराधकों की प्यास है मांगलिक,

मांगलिक है सद् संस्कारों का शृङ्गार।

मत मानो इसे केवल एक व्यवहार।।

जिनवाणी का विधान है मांगलिक,
तीर्थङ्कर का प्रमाण है मांगलिक,
भक्तों का प्राण है मांगलिक,

भटके हुआओं का त्राण है मांगलिक,

ज्ञानियों का ज्ञान है मांगलिक,

मांगलिक है सिद्धि का दातार।

मत मानो इसे केवल शब्दों की बौछार।।

चार मंगल, चार शरण,

चार लोक में उत्तम है मांगलिक,

पाप निवृत्ति का आदेश है मांगलिक,

साधकों को उपदेश है मांगलिक,

जिनशासन के लिए विशेष है मांगलिक,

मांगलिक है भाव शुद्धि का आधार।

मत मानो इसे केवल एक चमत्कार।।

-संकलनकर्ता, राहुल-स्वाति जैन, सर्वाईमाधोपुर

सकारात्मक सोच और विवेकशीलता आवश्यक

बीजा जैन

कोविड महामारी पूरे विश्व के लिए एक ऐसी चुनौती बनकर उभरी जिसकी कल्पना किसी ने भी नहीं की थी। आरम्भ में कोरोना के यकायक फैलाव ने सभी को बदहवास कर दिया था। कोई समझ ही नहीं पाया कि इसका मुकाबला कैसे किया जाए? पर शीघ्र ही इसके कारण और निवारण के उपायों को खोज निकाला गया। यद्यपि आज महामारी ढलान की ओर है, फिर भी दुनिया का एक बड़ा वर्ग कोरोना की नई लहर के आने की आशंका से डरा हुआ है। आजकल की स्थितियों में धीरज रखना बहुत ज़रूरी है। इसके लिए इस बात की आवश्यकता है कि मनुष्य के अन्दर शान्ति हो तथा समय और परिस्थिति को समझने का विवेक हो। यह विवेक ही समय के सिद्धान्त को बताएगा कि यह समय भी गुजरेगा, चाहे कोई भी परिस्थिति हो उसे गुजरना तो है ही। कोई समय या समस्या स्थायी नहीं होती। विवेकशील व्यक्ति समय की इस चाल को समझता है और धैर्य नहीं खोता। बड़े-बड़े आन्तरिक और बाह्य तूफानों का सामना कर लेता है।

जब इच्छा के अनुकूल सब कुछ होता है तो हम समझते हैं कि अच्छा समय है और इच्छा के प्रतिकूल होता है तो हम उसे बुरा समय कहते हैं। आज 70 फ्रीसदी लोग मानसिक रूप से परेशान हैं। ये मुश्किलें दूसरों ने नहीं दी हैं, बल्कि उन्होंने स्वयं अपनी स्थिति कष्टदायक कर ली है। जब हम अपने पड़ोसी से ईर्ष्या करते हैं, तो यह ईर्ष्या हमारे मानसिक सन्तुलन को खराब कर सकती है। यदि हमारे मन में करुणा और मैत्री के भाव होते हैं, तो हमारे मन में शान्ति रहती है।

जब स्थितियाँ बदल रही होती हैं तो अपने मानसिक और शारीरिक सन्तुलन को बनाए रखना आवश्यक होता है, क्योंकि चारों ओर से हम आपदाओं

के तूफान से घिरे हैं। प्राकृतिक संकट भी चारों ओर विध्वंस करने को तत्पर हैं। कहीं चक्रवाती तूफान, कहीं बाढ़ और कहीं भूकम्प, ऊपर से महामारी की त्राहि-त्राहि।

वर्तमान दौर हमसे इसी सन्तुलन की माँग कर रहा है। मन की आन्तरिक शान्ति को बढ़ाने के लिए हम ऐसे काम करें जो प्राणों में ऊर्जा का सञ्चार करें। शरीर को शक्ति और आत्मा को सुकून दें। मानव चित्त-वृत्तियों के बन्धन में है। चित्त प्रतिपल गतिशील है। यह गतिशीलता ही तूफानी गति से संकल्प-विकल्प, सुख-दुःख, राग-द्वेष, अवसाद-विषाद लाती है। गीता में योग विषय में उल्लेख है कि अस्थिर मन जहाँ-जहाँ भागता है उसे यहाँ-वहाँ से लौटा कर अपने भीतर लाना चाहिए। अन्यथा यह अवसाद का रूप ले लेता है। अमेरिकन साइकेट्रिक एसोसिएशन के अनुसार अवसाद एक सामान्य, किन्तु गम्भीर मनोविकार है जो हमारे भीतर नकारात्मक विचारों और कृत्यों को उत्पन्न करता है।

यदि हम प्रसन्न चित्त रहते हैं, सकारात्मक सोच को लेकर आगे बढ़ रहे हैं; मानसिक, भावनात्मक और बौद्धिक रूप से सन्तुलित हैं तो जीवन में आने वाले बड़े से बड़े तूफान और चट्टान जैसी मुसीबतों को, सागर की लहरों की तरह टक्कर दे सकते हैं। अब तो यही अरमान है-

क्या करूँ मैं मौत का मुमकिन सफ़र

आज उसका दे पता ए ज़िन्दगी

तो आज आवश्यकता इस बात की है कि हम व्यर्थ एवं नकारात्मक चिन्तन से दूर रहें। हमें रोजाना एक लक्ष्य निर्धारित करने की आवश्यकता है। इसके लिए दिनचर्या को अनुशासित रखना बहुत आवश्यक है।

जीवन में लक्ष्य या उद्देश्य का होना कितना आवश्यक है, जैस्मिन खुराना कहती हैं—जीवन में उद्देश्य होने से, हम उसके अनुसार ढलते जाते हैं। वह हमारी आदत में शुमार हो जाता है। निश्चित समय पर व्यायाम, लेखन, पढ़ना, किसी की मदद करना या नई चीज़ सीखना सम्भव हो जाता है। व्यक्ति के जीवन में लक्ष्य या उद्देश्य का होना किसी अलार्म घड़ी की तरह काम करता है, जो रोज़ सुबह यह एहसास दिलाता है कि थककर या हारकर बैठना नहीं है वरन् अपने लक्ष्य को प्राप्त करना है। हम किसी के बारे में कोई निर्णय नहीं कर सकते, पर विफलता हाथ लगने पर प्रयास को बीच में नहीं छोड़ना चाहिए।

आज की परिस्थितियों ने मानव को झकझोर कर रख दिया। बेरोज़गारी, परिवार के सदस्यों की बीमारी, बच्चों की पढ़ाई, सब तरह की परेशानियों को झेलना पड़ रहा है। अपने किसी परिजन का बिछुड़ना, कोरोना सम्बन्धी सूचनाएँ, हर समय मोबाइल और दूरदर्शन देखना और सुनना मनुष्य की मानसिक स्थिति को बहुत प्रभावित कर रहा है। मन का सबसे बड़ा अवरोध डर है। आज चारों तरफ़ भयंकर तूफ़ान हमें कम्फर्ट जोन से निकालने के लिए तैयार खड़ा है। सदियों से इंसान की फ़ितरत रही है कि वह पैसे, रुतबे तथा अन्य शक्तियों से आसपास के माहौल को नियन्त्रित करना चाहता रहा है। लेकिन आज मन के अन्दर-बाहर अनिश्चितता व्याप्त है। जीवनशैली बदल चुकी है। मानव नई चुनौती का सामना करने में अपने को अक्षम महसूस कर रहा है।

वास्तव में हम दो तरह की दुनिया में निवास करते हैं। एक है बाह्य दुनिया जिसमें लोग, परिस्थितियाँ और दूसरों का व्यवहार शामिल है। दूसरा हमारा आन्तरिक संसार जिसमें संकल्प, भावना, उद्देश्य, यादें इत्यादि हैं। दोनों में से एक भी हमारे नियन्त्रण में हो तो जीवन खुशहाल हो सकता है।

हमने सदियों से बाहरी दुनिया को नियन्त्रित करने की कोशिश की है, क्योंकि बाहरी दुनिया में जो भी होता

है उसका असर हमारे मन पर होता है। यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, पर इसे पूर्णतः सत्य नहीं माना जा सकता। परिस्थिति यह निर्णय नहीं ले सकती कि हमें क्या करना है?, क्या सोचना है?, यह कार्य हमारे मन का है। हम जितने समर्थ संकल्पों का निर्माण करेंगे, उतना ही बाह्य परिस्थितियों से अप्रभावित रह सकेंगे। आज समय आन्तरिक संकल्पों पर ध्यान देने का है। हम परिस्थिति नहीं बदल सकते, मनःस्थिति तो बदल सकते हैं। हमें आज चुनौतियों के बीच ही अवसर खोजने होंगे।

इन दिनों चुनौतियाँ बहुत ज्यादा हैं। किसी को स्वास्थ्य सम्बन्धी दिक्कतें हैं, किसी को आर्थिक कठिनाइयाँ प्रभावित कर रही हैं। जीवन स्वयं एक चुनौती है। लेकिन चुनौतियों के प्रति हमारा नज़रिया क्या है, यह अधिक महत्वपूर्ण है। मेरी दृष्टि में, इस सम्बन्ध में यह कहानी जो मैं प्रस्तुत कर रही हूँ, वर्तमान परिस्थिति को चरितार्थ करती प्रतीत हो रही है—

एक बार दो गधे कहीं जा रहे थे। रास्ते में दोनों एक बड़े गड्ढे में गिर गए, जिसे भरने के लिए ऊपर से मिट्टी डाली जा रही थी। पहला गधा खुद को कोसने लगा कि मेरी तो किस्मत ही खराब है कि मैं यहाँ फँस गया हूँ। जबकि दूसरा गधा शान्त चित्त, संयम से सोच रहा था कि समस्या है तो कोई न कोई रास्ता निकालना होगा। वह गधा हाथ-पैर मारकर मिट्टी हटाते-हटाते ऊपर निकल आया।

अतः चुनौतियों के बीच आज हमें अवसर खोजना होगा। इस सकारात्मकता के लिए हमें रोज़ प्रयास करने होंगे। नकारात्मक सोच से कोई फायदा नहीं होगा। अच्छी चीज़ें सोचें, अच्छी चीज़ें देखें और उन लोगों की ओर देखें जो अच्छा कर रहे हैं। वह डॉक्टर-नर्स, जो अपने परिवार और बच्चों को छोड़ सेवा में लगे हुए हैं, वे भी तो चुनौतियों से घिरे हुए हैं।

उद्यमी बालचन्द्र के जीवन का एक ही मूल मन्त्र है, जो करना है, बस करना है। यदि चुनौतियाँ जीवन में न आएँ तो काम में मजा ही नहीं है। हाँ! इसके लिए

आवश्यक है एक स्पष्ट दृष्टि (Vision)। अपने सपनों का पीछा करना नहीं छोड़ना चाहिए, वरन् हमें अच्छी आदतों का संकल्प, मानसिक सक्रियता, जीवन में स्पष्टता को स्थान देना चाहिए। लेकिन जीवन रूपी कार्य योजना का दर्पण आशंकाओं की धूल से भरा होगा, तो हमें अपना लक्ष्य नहीं दिखेगा। इसके लिए आवश्यक है कि हम व्यस्त रहें, श्रम करें, उचित आहार लें, जिससे शरीर सशक्त हो और हर झंझा और तूफान को झेलने की क्षमता हो।

अस्तित्व का नियम है कि जिस का आरम्भ होता है उसका अन्त निश्चित होता है। आज जो विपदाएँ आदमी झेल रहा है इससे उसमें ताकत और सामर्थ्य में वृद्धि होगी, आदमी फिर से खड़ा होगा। यह देश, समाज आगे बढ़ेगा। इस सब के लिए परमात्मा का स्मरण सबसे बड़ी औषधि है। आज मनुष्य को हमदर्दी भी चाहिए और हिम्मत भी। फिर भी हमें अच्छे समय की ओर आगे बढ़ना है, बुरे समय को पार करना है।

-आर.के. हार्डवेयर, रामघाट रोड़, अलीगढ़
(उत्तरप्रदेश)

करुणा भावना

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

संवेदना के तीव्र भाव हैं भावना करुणा
अनुकम्पा सङ्ग जीना ही है जीवन की अरुणा
करुणा का पुनरपि पुनः अभ्यास है
कारुण्य भावना
निष्ठुर के प्रति अनिष्ठुरता की ही तो है साधना
वेद-विकार कषायों से शुभ भाव रहते हैं निरुद्ध
शुभ भाव विघातक मोहनीय
से बनता नहीं जीव समृद्ध
अशुभ भावों को तोड़ने के लिए करें
सद्भाव अभ्यास
मन भटके तो ले आवें फिर
शुभ भावों में सप्रयास
अनुकम्पा भी है समकित का ही एक लक्षण
समकित से ही होता है जीवों का संरक्षण
लक्षण से लक्षित भाव ही होते हैं उत्पन्न
सर्वज्ञ प्रज्ञप्त में श्रद्धा से जीव होते हैं
समकित सम्पन्न
करुणा, अहिंसा का मुख्य आधार है
अहिंसा ही समस्त साधना का सार है
जीव रक्षा का भाव रहे
नित हो षट्काय का रक्षण

मिथ्यात्व कषाय को छोड़कर,
सद्वृत्ति के करें करण निष्पाप प्रवृत्ति,
निःस्वार्थ करुणा से होता साता का बन्ध
भव पाता उत्तम, शुभनाम कर्म,
उच्चगोत्र शुभायु सङ्ग
उद्यम करें ऐसा हो सर्व जीव उद्धार
धर्म के सन्मुख रहें सदा हम,
हो करुणामय व्यवहार
हृदय में जो ध्याते हैं,
जीवों के दुःखों के प्रति प्रतिकार
वे ही पुण्यानुबन्धी पुण्य से,
पाते हैं सुख निर्विकार
अकरुणा को परे हटाकर,
दया भाव में रमण करें
शुभ प्रवृत्ति में रत रहकर,
निजस्वरूप में भ्रमण करें
अप्रमत्त हो 'करुणा भावना' है भाई
अनुप्रेक्षा से आचरित कर त्वरित मुक्ति है पाई
'करुणा भावना' की अनुप्रेक्षा कर ले
रे भवी प्राणी!
दिखला रही मार्ग हमको 'मुदित' जिनवाणी।

-1101 बुड साइड, जी साउथ गोरखले रोड़,
प्रभादेवी, मुम्बई-400025 (महाराष्ट्र)

व्यावहारिक जीवन के नीति वाक्य (7)

श्री पी. शिखरमल सुराणा

25. अपने घटिया नज़रिये का अहसास हो जाने पर भी हम उसे बदलते क्यों नहीं...? वास्तव में यह मानव प्रवृत्ति है कि हमें कभी भी अपनी कोई भी कमी दिखाई नहीं देती। हम हमेशा दूसरों में ही कमियाँ ढूँढ़ते रहते हैं। यह और कुछ नहीं वरन् हमारा अपना अहं है...जो हमेशा स्वयं को स्थायी रूप से सही और दूसरों को गलत समझता है। इस खोखले और झूठे अहंकार के कारण ही हम अपनी स्वयं की कमियों का पता चलने पर भी उनके लिए ...दूसरों पर दोषारोपण हेतु उसके कारणों को भी बाहर ही ढूँढ़ते हैं। यह प्रवृत्ति ही हमारे नकारात्मक होने का प्रमाण है और अपने में विद्यमान इसी नकारात्मकता का हमें विरोध करना है। अपने आपसे लड़ना हैअपनी कमियों एवं दोषों को पहचानना हैउनका विश्लेषण करते हुए आत्मचिन्तन तथा अन्तर-अवलोकन करना है। अपने स्वयं के दोष ढूँढ़ना यद्यपि सबसे कठिन कार्य है....किन्तु सबसे अधिक साहसिक और सराहनीय कार्य यही है।
26. एक सकारात्मक चरित्र का व्यक्ति जब कोई ऐसा कार्य करता है जो सर्व-समाज के हित में हो, तो वह उसका श्रेय लेने की न तो आकांक्षा रखता है और न ही इसके लिए कोई प्रयत्न ही करता है। इसके उल्टे वह समाज और राष्ट्र के हित के लिए कार्य करने का प्रयास करते हुए अपना सर्वस्व दाव पर लगा देता है। जो लोग सिर्फ श्रेय लेने की चेष्टा में रहते हैं, वे प्रगति की राह में अवरोध ही पैदा करते हैं....क्योंकि उनकी उपलब्धियाँ सिर्फ श्रेय लेने तक ही सीमित रहती हैं। उसके आगे के लक्ष्य को देखने हेतु न तो उनमें बुद्धि एवं विवेक होता है और न ही दृष्टिकोण एवं संस्कार। अब यह स्वयं हमारे ऊपर निर्भर करता है ...कि हम किस वर्ग में रहना चाहते हैं।
27. हमारे जीवन में घटित होने वाली कोई भी घटना अपने साथ कोई न कोई कारण या उद्देश्य लेकर ही आती है...और हमारे जीवन पर अपना प्रभाव छोड़कर जाती है। हमको हर घटना से कुछ न कुछ सीखना है तथा तदनुसार अपने भविष्य की सभी योजनाओं को भी बनाना है। घटित होने वाली हर घटना से हमें सबक लेना होगा एवं भविष्य के लिए तैयारी भी करनी होगी, ताकि हम फिर से ऐसा कोई नकारात्मक कार्य न करें...जिससे हमको पुनः कोई कष्ट या हानि हो। इसके विपरीत सुखद घटनायें.... सुख, समृद्धि तथा प्रसन्नता प्रदान करने वाली होती हैं एवं उनको उत्पन्न करने वाले मूल कारण जीवन में पुनरावृत्ति के योग्य होते हैं। अतः होने वाली हर घटना का समान रूप से आदर करें एवं उसको समान तथा सकारात्मक भाव से लें....चाहे वे कोई कष्ट या हानि देने वाली हों....अथवा सम्मान और खुशी प्रदान करने वाली।
28. स्वयं के कार्यों एवं भावनाओं पर हमारा स्वयं का ही नियन्त्रण होना चाहिए। हम अपने हृदय की दुर्बलताओं तथा शक्तियों को स्वयं पहचानें और उन पर हमारा अपना नियन्त्रण हो। किसी अन्य के हाथ में अपने मन की चाबी (नियन्त्रण) क्यों दें? अपने जीवन में आने वाली भिन्न परिस्थितियों का सामना हमको ही करना है। यह किस तरह करना है....इसका निर्णय हमारा स्वयं का होना चाहिए। कोई दूसरा इसको क्यों और कैसे नियन्त्रित कर सकता है? अपनी संवेदनाओं और कर्म पर हमारा अपना नियन्त्रण होना चाहिएताकि हम आत्मनिर्भर रहें। किसी दूसरे के हाथ की कठपुतली क्यों बनें?



देने की कला और विज्ञान

श्री सुरेश जैन

1. अनेकान्त दृष्टि और समग्रता से विचार करें तो यह मिथक सही नहीं है कि लालच से ही सफलता प्राप्त होती है। अपितु यह सही है कि देना ही सफलता का नुस्खा है। अतः परोपकारी और उदार लोग अपने जीवन के पथ पर कभी पिछड़ते नहीं हैं। वे परोपकार के शाश्वत जीवन मूल्यों को अपनाते हुए चतुर्मुखी सफलता प्राप्त कर लेते हैं। सामान्य जन से प्रभावी संवाद करके भी उन्हें खुशी प्राप्त होती है। देने की कला और विज्ञान के व्यावहारिक सिद्धान्त उन्हें सफलता की सर्वोच्च ऊँचाई पर पहुँचा देते हैं।
2. दूसरों को कुछ देना ही आगे बढ़ने का मूलमन्त्र है। दूसरों के प्रति उदारता व्यक्तित्व को परखने की हमारी क्षमता में वृद्धि करती है। सच्ची मदद बड़ी अच्छी होती है। ऐसी मदद करने वाले और पाने वाले दोनों यह सोचकर हैरान हो जाते हैं कि वास्तव में सच्ची मदद किसने किसकी की है? हम सबकी सहायता करते हुए विविध प्रकार की अच्छी सफलताएँ प्राप्त कर सकते हैं। अतः हम देने की क्षमता बढ़ाएँ। अपना समय, ज्ञान और धन उदारता पूर्वक बाँटते रहें। 'पहले मैं' की मानसिकता छोड़कर 'पहले आप' की मानसिकता विकसित करें। लोगों को कुछ देने के लिए सदैव तत्पर और जागरूक रहें।
3. देने की प्रक्रिया सामाजिकविज्ञान की आधारभूमि और भौतिक सफलता की पृष्ठभूमि है। दूसरों को सहयोग देने से दोनों पक्षों को पारस्परिक लाभ प्राप्त होता है। अतः दूसरे लोगों की मदद करते हुए अपनी मेहनत, तकदीर और प्रतिभा के साथ हम बड़ी से बड़ी कामयाबी हासिल कर लेते हैं।
4. ऐडमग्रांट, जो चालीस वर्ष से कम उम्र के सर्वश्रेष्ठ बिजनेस प्रोफेसर हैं, द्वारा अंग्रेजी में लिखित मूल पुस्तक 'गिव एण्ड टेक' का हिन्दी संस्करण 'आदानप्रदान की कला' हम अवश्य पढ़ें और उनकी सीख अपने जीवन में उतारें। न्यूयार्क टाइम्स के इस बेस्टसेलर 'गिव एण्ड टेक' को पढ़कर हमें बहुत कुछ सीखने को मिला है। सफलता की कहानियों से ओतप्रोत यह पुस्तक ही नहीं जन-जन के जीवन का वर्तमान समयोचित प्रकाश स्तम्भ है। यह पुस्तक हमें उत्कृष्टता और बुद्धिमत्ता पूर्वक सफलता प्राप्त करने के अच्छे पाठ पढ़ाती है। स्वार्थ और परोपकार की मूलभूत समझ विकसित करती है। हमारे समक्ष आदर्श व्यवहार के प्रकृष्ट प्रतिमान प्रस्तुत करती है। सर्वोच्च सफलता की मनमोहक कहानियाँ सुनाती है। हिमालय की यात्रा पर जाते समय अन्य लोगों को अपने साथ ले जाने के लिए प्रेरित करती है। इसे पढ़ने से हमें अनुपम आनन्द की अनुभूति होती है।
5. यह पुस्तक हमें आगे बढ़ने के लिए बहुत उपयोगी जानकारी प्रदान करती है। यह पुस्तक हमें सिखाती है कि अपनी ज़िन्दगी बेहतर बनाने, अपना काम बेहतर तरीके से करने, ज्यादा सशक्त और सार्थक जीवन जीने के इच्छुक व्यक्ति अन्य लोगों की मदद कर सरलता से बड़ी-बड़ी सफलताएँ प्राप्त कर लेते हैं। यह पुस्तक सार्थक और सतत बदलाव करने के आकांक्षी और पुरुषार्थी व्यक्तियों के सम्यग्ज्ञान का संवर्द्धन करती है। उनका मनोरञ्जन करती है। युवा उद्योगपतियों की क्षमता को उभारती है।
6. इस पुस्तक के पढ़ने से युवाओं में छिपी हुई

उद्यमशीलता स्वयमेव ऊपर आकर छलकने लगती है। अतः अपने व्यक्तित्व को बेहतर बनाने के इच्छुक व्यक्तियों को तथा अपने निहित स्वार्थों से ऊपर उठकर काम करने के अभिलाषियों को यह पुस्तक पढ़ना चाहिए। ऐसा प्रतीत होता है कि विदेशी लेखक ने भारतीय शाश्वत जीवन मूल्यों की व्यावहारिकता और सामाजिक वैज्ञानिकता के तत्त्वों को आधुनिक उच्चस्तरीय भाषा में भलीभाँति मिश्रित कर इसे प्रभावी एवं आकर्षक स्वरूप प्रदान किया है।

7. जो व्यक्ति अपने घर, परिवार, समाज और कार्यालय में अधिक उत्पादक, अधिक खुश और प्रसन्न रहना चाहते हैं, उन्हें देने की कला सीखना चाहिए। देने की कला सीखकर हम अधिक अच्छे व्यक्ति बन सकते हैं और अपने समीपस्थ व्यक्तियों को अच्छा बनाकर खुशी प्राप्त कर सकते हैं। जो लोग दूसरों से बिना कुछ अपेक्षा किए उन्हें कुछ देते रहते हैं, वे निश्चित ही ऐसा करके चतुर्मुखी विकास के पथ पर आगे बढ़ सकते हैं।
8. लेनदेन की दुनिया में हम स्वार्थरहित लेनदेन करें। यदि हम अपना कोई सपना पूरा न कर सकें तो दूसरों के अपने जैसे सपने पूरा करने में मदद करें। ऐसा कर हम हारकर भी जीत जाते हैं। जो कुछ अच्छा आपके पास है, उसे बाँट दें।
9. परोपकार करते समय लुट जाने का भी अपना ही आनन्द है। यह दुःखद है कि हमारी भौतिकता की वृद्धि की गति के अनुरूप हमारी सहनशीलता और धैर्य में वृद्धि नहीं हुई है। परिणामस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति अपेक्षित मात्रा में सन्तोष और शान्ति प्राप्त नहीं कर पा रहा है। सच्चे दान से सच्चे और अच्छे पुण्य प्राप्त होते हैं। दान के प्रसङ्ग में हम महादानी रहीम और तुलसीदास का संवाद स्मरण रखें। रहीम जब भी किसी को कुछ देते थे तो उनकी नज़र जमीन पर जमीं रहती थी। वे बड़ी विनम्रता के साथ

दान देते थे और कभी दान लेने वाले की ओर देखते भी नहीं थे।

10. तुलसीदासजी ने रहीम को आँखें नीची कर दान देते हुए देखकर उन्हें निम्नांकित दोहा लिखकर भेजा था—

‘ऐसी देनी दैन ज्युँ, कित सीखे हो सैन।

ज्यों-ज्यों कर ऊँच्यो करो, त्यों-त्यों नीचे नैन॥’

इस का सामान्य शब्दों में अर्थ यह है कि हे महामानव! आपने दान का यह अद्भुत तरीका कहाँ से सीखा? दानदाता को देने के लिए हाथ ऊपर उठते ही आपकी आँखें नीचे की ओर झुक जाती हैं। रहीम ने इसका पूरी विनम्रता पूर्वक उत्तर देते हुए लिखा था कि—

‘देनहार कोउ और है, भेजत सो दिन रैन।

लोग भरम हम पे करें, तासों नीचे नैन॥’

देने वाला कोई और है जो दिनरात देता ही रहता है। यह तो दुनिया वालों का भ्रम है कि दानदाता रहीम है। इसलिए शर्म के मारे हम अपनी नज़र नीची कर लेते हैं।

11. हम अनावश्यक सञ्चय न करें। आदर्श जीवन जिएँ। हम जब भी किसी का भला कर सकें तो जरूर करें। सम्मान और प्रशंसा की इच्छा के बिना दूसरों की मदद करें। शुद्धतम भावना से दान देकर असीम आनन्द प्राप्त करें। ऐसे दान देने वाले सोचते हैं कि उन्हें दान देने का अच्छा अवसर मिला। उन्हें दान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। ऐसे दान देने वालों से पूरा समाज गौरवान्वित होता है।
12. जो लोग दूसरों पर खर्च करते हैं वे उन लोगों से कहीं ज्यादा खुश रहते हैं जो कमाई का मोटा हिस्सा खुद पर लुटा देते हैं। पूरी दुनिया में दान कर आनन्द प्राप्त करने की अनुभूति सभी को होती है। यह ऐसी खासियत है जो प्रत्येक मानव स्वभाव में मौजूद रहती है। घी और शक्कर खाने की सामान्य आदत की भाँति ही दूसरों की मदद करने की हमारी प्रवृत्ति

- होती है। हमारे समाज में रोज दान देने की सुखद परम्परा रही है। हम रोज दान देने की इस प्रवृत्ति को बढ़ावा दें। गैर परिचितों की ऐसी मदद हमें बड़ी प्रसन्नता प्रदान करती है। प्रभु से प्रार्थना है कि यह परम्परा सदैव जीवन्त रहें। हम अपनी संस्कृति की समन्वयात्मक परम्परा की पहचान बनाए रखें। मैत्री और करुणा की आधार भूमि को सिञ्चित, पल्लवित और पुष्पित करते रहें।
13. हम कभी भी दूसरों के बारे में बुरी और घृणित बातों की चर्चा न करें। अनजाने में अपने भीतर द्वेष और घृणा को पनाह न दें। किसी का तिरस्कार न करें। उससे नफ़रत न करें। एक-दूसरे के साथ गाली-गलौच न करें।
14. यह स्वाभाविक है कि हम सबसे पहले अपना समय और पैसों का दान अपने परिचितों को, जो हमारी तरह है, जिन पर हमें भरोसा है, को ही प्रदान करते हैं। हम सबने कभी न कभी अनजान व्यक्ति के दयालु और परोपकारी व्यवहार को महसूस किया है। अतः हम अनजानों की भी भलाई करें। मुश्किलों में फँसे अनजानों की मदद करें। उनके साथ रहें। जैनदर्शन अनजानों की मदद के उदाहरणों से भरा पड़ा है।
15. हमारे समाज में दान देने वाले बहुत अधिक हैं। नौकरी में छोटे-छोटे पदों पर रहते हुए हमने जो समय और पैसा दूसरों को दिया वह वृद्धावस्था में दिए जा रहे बड़े-बड़े दान से कहीं ज्यादा महत्त्वपूर्ण है। हर दिन छोटी-छोटी मदद करने वाले लोग बेहद अमीर और परोपकारियों से ज्यादा ताकतवर हैं। कुल मिलाकर उनका दान अधिक है। इस विषय में किए गए अध्ययन से पता चला है कि वर्ष 2017 के एक वर्ष में आमलोगों ने 34,000 करोड़ रुपये दान किए हैं। यह दान देश के सभी अरबपतियों द्वारा दिए गए दान से बहुत अधिक है। छोटा-छोटा दान देने वालों की इच्छा और दान देने की प्रवृत्ति अधिक शक्तिशाली होती है। हर रोज दान देने की आदत हमारे अकेलेपन को दूर करती है। हम एक-दूसरे से जुड़ते हैं। जैन समाज की सफलता का यही एक महत्त्वपूर्ण राज है।
16. मध्यम वर्ग के दान के सहारे ही अनेक सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक कार्य सम्पन्न हो पाते हैं। हमारा अधिकांश समाज धीरे-धीरे मध्यम वर्ग में शामिल होता जा रहा है। मध्यम वर्ग के लोग अपनी दम पर जीवन जीते हैं। वे किसी सरकारी मदद पर निर्भर नहीं रहते हैं। वे कम संसाधनों में कड़ी मेहनत कर अपने जीवन स्तर को ऊपर उठाते हैं। वे अपनी छोटी-छोटी उपलब्धियों पर गर्व करते हैं। मध्यम वर्गीय समाज का सभी प्रकार से सशक्तीकरण करना आवश्यक है।
17. दुनिया के सबसे अमीर बिलगेट्स, वारनबफे और अजीम प्रेमजी सबसे बड़े दानदाता बनकर उभर रहे हैं। हमारे देश में परोपकार के क्षेत्र में महिला दानदाता पुरुष दानदाताओं से आगे आ रही हैं। इनमें रोशनी नाडर, रोहिणी नीलेकणी, किरण मजूमदार शा और डॉ. सुधामूर्ति सम्मिलित हैं। ये महिलाएँ बड़ी मात्रा में अपने धन का दान कर रही हैं। उनकी परोपकार में भागीदारी बढ़ रही है। उनमें दान देने की बड़ी अच्छी आदत विकसित हो रही है। वे दुनिया में पुरुषों की तुलना में दोगुनी राशि स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में दान कर रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि अगली पीढ़ी में दानदाताओं में सबसे अधिक संख्या महिलाओं की होगी। महिलाएँ ही दानदाताओं की अगली पीढ़ी का नेतृत्व करेंगी।
18. हम चुपचाप बैठकर चमत्कार होने की अपेक्षा नहीं कर सकते हैं। हमारा भविष्य बहुत कुछ हमारे हाथों में ही होता है। परोपकार और करुणा से हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है। हमें शान्ति प्राप्त होती है। हमारी बुद्धि बेरोकटोक काम करती है। हम ऐसा कार्य करें, जो नैतिक और उपयुक्त हो। हम सार्थक और सहयोगी व्यक्ति का जीवन जिएँ। अपने

- व्यक्तित्व के बेहतर पहलुओं को प्रभावी बनाएँ। अपने साथियों की सेवा करें। जब भी सम्भव हो अन्य लोगों की मदद करें। यह सदैव प्रयास करें कि हमारे किसी कार्य से किसी को कोई नुकसान न पहुँचे। किसी के प्रति दुर्भावनापूर्ण व्यवहार न करें। प्रत्येक व्यक्ति से प्रेम और करुणापूर्वक व्यवहार करें। सभी के साथ हमदर्दी रखें। सभी से गर्मजोशी के साथ मिलें।
19. सत्कर्म और परोपकार ऐसा विज्ञान है जिसकी व्याख्या करना सम्भव नहीं हो पाता है। परोपकार की प्रवृत्ति व्यक्तिगत और व्यावसायिक सम्बन्धों को सुदृढ़ करती है। हमारे पारस्परिक सम्बन्ध और क्रियाएँ हमें सफलता और आनन्द की अनुभूति प्रदान करते हैं। हमारी शाश्वत सफलता के मूल
- बिन्दु अपने समीपस्थ सभी व्यक्तियों को सफल बनाने की हमारी प्रवृत्तियों में छिपे रहते हैं। 'सत्त्वेषुमैत्री' सभी से मित्रता और सभी को सहयोग देने की प्रवृत्ति बेहतर मानव बनाती है।
20. दान देने और सेवा करने से हार्थों में अद्भुत शक्ति पैदा होती है। हाथ स्वयं ही पवित्र होकर कल्पवृक्ष बन जाते हैं। पुष्प एकत्रित करने वाले माली के हाथ सदैव सुगन्धित रहते हैं। दूसरों की ज़िन्दगी रोशन करने से हमारी ज़िन्दगी खुद रोशन हो जाती है। बादलों की भाँति सज्जन भी देने के लिए ही लेते हैं। अतः देने के लिए अपने मन को उदार बनायें। मन्दिर और विद्यालय को कभी व्यवसाय न बनायें। किसी साधु का अपने स्वार्थ के लिए दुरुपयोग न करें।
- 30 निशात कॉलोनी, भोपाल-462003 (मध्यप्रदेश)

इच्छा पूर्ति की भेंट चढ़ गए

श्री प्रकाशचन्द्र नागौरी

अनन्त काल के भव भ्रमण में, हमने किया ही क्या
इच्छा पैदा करने और, पूरी करने के सिवा?
इच्छा आकाश के समान अनन्त है,
भगवान तो फरमा गए
लेकिन हमारी सभी पुण्यवानी, सभी पुरुषार्थ और
एक दो दस नहीं,
अनन्तान्त भव इस इच्छा पूर्ति की भेंट चढ़ गए॥1॥

धार्मिक क्षेत्र में जब-जब भी
बड़ी हार और जीत के हमने पैमाने गढ़े
मौलिक साधना को छोड़, संवर निर्जरा को छोड़
मनगढ़न्त जीत की ओर बढ़ गए
एक दो दस नहीं,
अनन्तान्त भव इस इच्छा पूर्ति के भेंट चढ़ गए॥2॥

बढ़ा ले चाहे ऋद्धि कितनी भी,
पुद्गल कैसे बन सकते हैं

आत्म की समृद्धि चाहे जड़ हो या चेतन
बात यही नीति सम्मत,
जो निजगुण से सम्मत है वही सम्पन्न
बिन निज गुण की प्रतीति कैसे,
धन का सम्बर्धन वह तो है पुद्गल की पर्याय,
जिससे हम करते हैं अपनी श्रेष्ठता का आकलन
निज गुण से रीतते रहे, फिर कैसे हम सम्पन्नता में बढ़ गए
एक दो दस नहीं,
अनन्तान्त भव इस इच्छा पूर्ति के भेंट चढ़ गए॥3॥

बात यही ज्ञानी सुखी
जो जितना कषाय टाले, वह उतना सुखी
जो जितना कषाय पाले वह उतना दुःखी
और विषय, यह तो है साता में सुख की भ्रान्ति
या निज को निज से विमुख करने की शक्ति
इन मोह-माया के चक्कर में पड़ गए
एक दो दस नहीं,
अनन्तान्त भव इस इच्छा पूर्ति की भेंट चढ़ गए॥4॥

-सिंगोली, जिला-नीमच (मध्यप्रदेश)

कोरोना का प्रभावशाली उपचार : शिवाम्बु चिकित्सा

डॉ. चंचलमल चोरड़िया

स्वास्थ्य का अमूल्य खजाना : मानव मूत्र

शिवाम्बु घर का दवाखाना है, जहाँ प्रायः सभी रोगों की दवा उपलब्ध होती है। शिवाम्बु घर का अस्पताल है जहाँ अधिकांश रोगों का प्रभावशाली उपचार होता है। शिवाम्बु घर का डॉक्टर है, क्योंकि उसमें रोग के अनुसार दवा का परामर्श देने का चिकित्सकीय गुण होता है। घर में ही रोग निदान केन्द्र है, क्योंकि शिवाम्बु उपचार करते समय रोग के निदान हेतु परीक्षणों की आवश्यकता नहीं होती। शिवाम्बु स्वयं द्वारा स्वयं के स्वास्थ्य का सुरक्षा कवच है, क्योंकि शिवाम्बु के सेवन से वायरस प्रभावहीन हो जाते हैं। वृद्धावस्था के लक्षण समय के पूर्व प्रकट नहीं होते। बच्चों को रोग निरोधक टीके लगाने की आवश्यकता नहीं होती।

मानव शरीर अपने आप में परिपूर्ण होता है। इसमें अपने आपको स्वस्थ रखने की क्षमता होती है। आवश्यकता है अपनी क्षमताओं को पहचानने, समझने की तथा आवश्यकतानुसार उसका सही उपयोग करने की। अज्ञान अथवा अधूरा ज्ञान एवं उसके साथ एक पक्षीय ज्ञान का पूर्वाग्रह तथा अपनी-अपनी पद्धतियों पर सम्यक् चिन्तन के अभाव में आवश्यकता से अधिक विश्वास, अधिकांश असफल उपचारों का मुख्य कारण होता है।

रोग अनेक दवा एक

दुनिया में रोग मुक्त करने के लिए हजारों दवाइयाँ उपलब्ध हैं, जिनका रोगों की रोकथाम, उपचार एवं परहेज के रूप में उपयोग किया जाता है। सभी दवाओं का शरीर के अङ्गों पर अपना अलग-अलग प्रभाव अथवा दुष्प्रभाव पड़ता है। आँख के रोगों की दवा कान

में नहीं डाली जा सकती। नाक में डालने वाली दवा मुँह से नहीं ली जा सकती। परन्तु शिवाम्बु बिना किसी दुष्प्रभाव के, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली, स्वयं के द्वारा स्वयं के शरीर से अनेक रोगों की आवश्यकतानुसार निर्मित ऐसी दवा है, जिसका उपयोग चाहे कान हो या आँख, नाक हो या मुँह, त्वचा के रोग हों अथवा शुद्धि के लिए दिए जाने वाला एनिमा ही क्यों न हो अथवा स्वस्थ अवस्था में रोगों के बचाव हेतु और रोगावस्था में उसके निवारण के लिए सभी परिस्थितियों में बेहिचक किया जा सकता है। इसी कारण शिवाम्बु का नियमित सेवन करने वाला किसी भी संक्रामक रोग से प्रभावित नहीं होता। फिर वह रोग प्लेग, चेचक, चिकनगुनिया, स्वाइन फ्लू, एन्थ्रेक्स या इबोलो एवं कोरोना जैसा अन्य कोई रोग।

शिवाम्बु हानिकारक तत्त्व नहीं

आज वैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि शिवाम्बु शरीर से गुदों द्वारा रक्त के शुद्धिकरण से प्राप्त जीवनोपयोगी जल का वह भाग है, जिसमें शरीर के लिए उपयोगी सैकड़ों ऐसे तत्त्व होते हैं, जो रक्त में होते हैं, परन्तु जिनका शरीर तत्काल उपयोग नहीं कर पाता और उनका सञ्चय करने तथा रखने के लिए शरीर में अलग व्यवस्था नहीं होने से उसको विसर्जित करना पड़ता है। ऐसे उपयोगी तत्त्व जो आवश्यकता से ज्यादा होते हैं, शिवाम्बु के माध्यम से शरीर के बाहर चले जाते हैं।

शिवाम्बु गंदा, खराब, विषैला, हानिकारक, विजातीय तत्त्व नहीं है, अपितु स्वास्थ्यवर्द्धक, जीवनोपयोगी, शरीर द्वारा निर्मित रासायनिक प्रयोगों

द्वारा बना जल है। शिवाम्बु में सैकड़ों उपयोगी खनिज, रसायन, हारमोन्स, एन्जाइम्स, विटामिन, क्षार, पोषक तत्त्व, विष नाशक पदार्थ तथा रोग निवारक, पीड़ा को शान्त करने वाले, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता और ताकत बढ़ाने वाले तत्त्व होते हैं, जो निष्क्रिय अङ्गों को सक्रिय बनाने, रक्त के शुद्धिकरण, पाचन एवं श्वसन तन्त्र जैसे विभिन्न शारीरिक क्रियाओं को सुव्यवस्थित, नियन्त्रित और सन्तुलित रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

दवाओं के उत्पादन में शिवाम्बु का प्रयोग

शिवाम्बु में उपकारक तथा रोग प्रतिकारक ऐसे निर्दोष रासायनिक तत्त्व मिले हैं जो रोगी और नीरोगी दोनों के लिये उपयोगी होते हैं। फलस्वरूप विश्व के आधुनिक दवा निर्माताओं ने शिवाम्बु से प्राप्त जीवनोपयोगी आवश्यक तत्त्वों तथा अन्य भौतिक तत्त्वों के योग से कैन्सर, एड्स, टी.बी., हृदय रोग, दमा, नपुंसकता, गुर्दा आदि के असाध्य रोगों के उपचार हेतु बहुमूल्य प्राणदायिनी दवाइयों और इन्जेक्शनों का व्यापक पैमाने पर निर्माण प्रारम्भ कर दिया है। हृदय रोगियों को दिया जाने वाला Urokinase, जो महिलाएँ गर्भवती नहीं होती, उनके लिए दी जाने वाली Profasi तथा अन्य असाध्य रोगों के लिए उपयोगी Serocruption, Bromocriptione, Meptrate, Ukidon, Pergonal (11mg) Metrodin HP Urofollitrophin (FHS) आदि अनेक दवाइयों के निर्माण में शिवाम्बु का प्रयोग होता है।

क्या वायरस ही रोग का मुख्य कारण हो सकता है?

आधुनिक चिकित्सा पद्धति रोग का मुख्य कारण शरीर में वायरस अथवा रोग के कीटाणुओं को मानती है। मानव अनन्त शक्तिशाली होता है। उसमें अनन्त क्षमता होती है। क्या लाखों चूहे मिलकर किसी शेर को परेशान कर सकते हैं? हाँ यदि शेर को अपनी क्षमता का खयाल न हो, वह प्रमादी हो अथवा गहरी निद्रा में सोया हुआ हो, तो निश्चित रूप से उसे परेशानी हो सकती है।

अन्यथा चूहे उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते। ठीक उसी प्रकार यदि हमारी प्रतीकारात्मक शक्ति अच्छी हो तो वायरस और कीटाणु हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं? गन्दी बस्तियों में रहने वाले, रोजाना पाखाना और गटर, नालियों की सफाई करने वाले व्यक्ति और प्रतिदिन अस्पताल में असाध्य एवं संक्रामक रोगियों के बीच रह कर सेवायें देने वाले चिकित्सकों और नर्सों आदि को तो इस मान्यतानुसार सदैव रोग ग्रस्त ही होना चाहिये? परन्तु इसमें कितनी वास्तविकता है, जन साधारण से छिपी नहीं है।

आधुनिक दवाइयाँ कितनी हानिकारक?

क्या बाजार में उपलब्ध दवाइयों अथवा इन्जेक्शन रोगी विशेष के अनुरूप बनाए जाते हैं? दवा कैसे बनती है? कौन-कौनसे आवश्यक और कम उपयोगी अथवा अनावश्यक तत्त्व कितनी-कितनी मात्रा में होते हैं? इस बात का ज्ञान अथवा जानकारी उपचार करने वाले चिकित्सक को प्रायः नहीं होती है। क्या डॉक्टर दवा से पड़ने वाले दुष्प्रभावों का सही आकलन कर सकते हैं? क्या दवा में आवश्यकता से विपरीत कम या अधिक तत्त्वों की मात्रा शरीर में असन्तुलन तो पैदा नहीं करेगी? क्या दवाइयों का परीक्षण एक जैसे रोगियों, वातावरण और परिस्थितियों में किया जाता है? दवाइयों के परीक्षण में ऐसा असम्भव ही होता है। जब रोग का कारण रोगी का चिन्तन, मनन, सोच, स्वभाव, तनाव, खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार, जीवनशैली आदि प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग होती है, तो लक्षणों के आधार पर किया गया निदान, परीक्षण और उपचार कैसे सटीक और वैज्ञानिक हो सकता है? प्रत्येक रोगी के लिए दवा का निर्माण उसके स्वयं की आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए। बाजार से उपलब्ध दवा शत-प्रतिशत कैसे सही हो सकती है? ऐसे परिणाम कभी भी एक जैसे नहीं हो सकते। जब तक दवा का निर्माण रोगी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं होगा तो उपचार कैसे पूर्ण, प्रभावशाली, स्थायी हो सकता है? मात्र प्रमुख लक्षणों को दबा कर

रोग में राहत पाना ही उपचार का ध्येय नहीं होता। दवाइयों के अनावश्यक सेवन से शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति क्षीण होने लगती है। अतः ऐसा उपचार प्रायः अधूरा ही होता है।

प्रभावशाली स्वावलम्बी अहिंसक चिकित्सा पद्धति : शिवाम्बु

अच्छी चिकित्सा पद्धति सहज, सरल, सस्ती, स्वावलम्बी, सर्वत्र, सभी समय उपलब्ध, अहिंसक, प्रभावशाली एवं स्थायी उपचार वाली होती है, जिसमें किसी भी प्रकार के दुष्प्रभावों की सम्भावना नहीं होती। यह रोग में न केवल राहत ही देती है, अपितु विधिपूर्वक ली जावे तो चन्द दिनों में ही स्थायी समाधान करने में सक्षम होती है। स्वमूत्र चिकित्सा पद्धति में न तो रोगी की नाड़ी देखनी पड़ती है और न ही एक्स-रे अथवा एम.आर.आई., सीटी स्केन अथवा सोनोग्राफी आदि कराने पड़ते हैं, न थर्मामीटर लगाना पड़ता है और न दवाओं अथवा उससे बने इन्जेक्शनों के लगाने की भी आवश्यकता होती है। यह पद्धति स्वस्थ एवं रोगी दोनों के लिए उपयोगी होती है। रोग चाहे जो हो, उसकी अवस्था चाहे जो हो, उसका कारण कुछ भी हो, रोग का निदान हो अथवा न हो, आहार-विहार, चिन्तन-मनन द्वारा प्रकृति के सनातन नियमों की साधारण जानकारी एवं थोड़ी-सी सावधानी रखकर शिवाम्बु द्वारा अधिकांश रोगों का उपचार आत्मविश्वास के साथ कर मुक्ति पाई जा सकती है। स्वमूत्र चिकित्सा का आधार होता है प्रकृति के सनातन सिद्धान्त एवं अनुभूतिपरक अन्तिम सुखद परिणाम। स्व-मूत्र उपचार अच्छी

चिकित्सा के सभी तथ्यों पर शत प्रतिशत खरा उतरता है।

किसी बात को बिना सोचे समझे स्वीकार करना यदि मूर्खता है तो अनुभूत सत्य को सम्यक् चिन्तन एवं तर्क की कसौटी पर कसे बिना, प्रचार-प्रसार के अभाव में पूर्वग्रसित गलत धारणाओं के कारण अस्वीकार करने वालों को कैसे बुद्धिमान कहा जा सकता है? जिस प्रकार रत्न की पहचान डॉक्टर, वकील, नेता अथवा सेनापति नहीं कर सकता, उसके लिए जौहरी की दृष्टि चाहिए उसी प्रकार शिवाम्बु के बारे में प्रतिक्रिया करने से पूर्व आधुनिक चिकित्सा प्रेमियों को अपना पूर्वाग्रह छोड़ उससे सम्बन्धित तथ्य परक, तर्क संगत, सम्यक् साहित्य का अध्ययन करना चाहिए।

शिवाम्बु के प्रति जन जागरण

जिस घर में स्वमूत्र चिकित्सा को पारिवारिक चिकित्सा के रूप में मान्यता मिल जाती है अर्थात् सभी परिजन अपना लेते हैं, वह परिवार बड़ा भाग्यशाली होता है। उस घर में चिकित्सकीय खर्च बन्द हो जाता है, उपचार हेतु समय का दुरुपयोग समाप्त हो जाता है। घर के बालक-बालिका, प्रौढ़-प्रौढ़ा-वृद्धा सभी रोग मुक्त हो दीर्घायु को प्राप्त करते हैं।

आज सैकड़ों आधुनिक चिकित्सा विशेषज्ञ, राजनेता, फिल्म अभिनेता, शिक्षाविद् शिवाम्बु के प्रति जन जागरण कर अपने स्वास्थ्य हेतु स्वमूत्र पान कर रहे हैं।

-चोरड़िया भवन, जालोरी गेट के बाहर, जोधपुर-342003(राज.)

Guiding Words

Jagarit Dinesh Jain

- ☒ Most of the time a change of self is needed more than a change of scene.
- ☒ Don't forget that when sickness is unavoidable, relax and enjoy it.
- ☒ If you are upset over what you do not

have you are wasting what you have.

- ☒ Man who says it cannot be done should not interrupt one doing it.
- ☒ The quality of our thoughts determines our own personal degree of happiness.

-17/729, CHB, Jhodhpur-342008 (Rajasthan)

संसारचक्रसूत्र

श्री हेमन्त लोढ़ा

अधुवे असासयम्मि, संसारम्मि दुक्खपउराए।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं, जेणाऽहं दुग्गइं न गच्छेज्जा।।।।।
थिर शाश्वत है जग नहीं, भारी दुःख भण्डार।
कर्म करूँ मैं कौन-सा, दुर्गति मिले न द्वार।।

In this world which is unstable, impermanent and full of misery, is there any thing by the performance of which I can be saved from taking birth in lower grade of life.

खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा,
पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया,
खाणी अणत्थाण उ काम भोगा।।2।।

सुख क्षणिक पर दुःख लम्बवत, सुख कम दुःख अति जान।
काम शत्रु है मुक्ति का, बिना अर्थ की खान।।

Sensuous enjoyments give worldly pleasure, but prolonged misery, more of misery and less of pleasure and they are the obstructions to salvation and is the mine of misfortunes.

सुट्ठुवि मग्गिज्जंतो, कत्थ वि केलीइ नत्थि जह सारो।
इंदियअविसएसु तहा, नत्थि सुहं सुट्ठु वि गविट्ठं।।3।।
केले के ज्यूँ पेड़ में, दिखे न कोई सार।
विषय वासना भी लगे, दुःख का ही व्यापार।।

As there is no essence in a banana tree, there is no real happiness in sensual pleasures.

नरविबुहेसरसुक्खं, दुक्खं परमत्थओ तयं बिंति।
परिणामदारुणमसासयं च जं ता अलं तेण।।4।।
सुख चाहे हो इन्द्र का, परम अर्थ दुःख राग।
फल दुःखदायी है सदा, उचित दूर तू भाग।।

The pleasures/enjoyments of great emperors, kings of gods (Celestial-beings) are

ultimately pains. Such pleasures are momentary; and their consequences are. Hence, it is appropriate to remain away from them.

जह कच्छुल्लो कच्छुं कंडयमाणो दुहं मुणइ सुक्खं।
मोहाउरा मणुस्सा, तह कामदुहं सुहं बिंति।।5।।
खुजलाने से सुख मिले, जैसे खुजली भाय।
काम मोह में जो फँसे, दुःख को सुख समझाय।।

Just as a person suffering from itching considers the scratching of his body to be a pleasure though really it is painful similarly people who are under the spell of infatuation consider the sensuous enjoyment to be pleasurable.

भोगा-मिस-दोस-विसण्णे, हिय-निस्सेयसबुद्धि-वोच्चत्थे।
बले य मंदिण मूढे, बज्झई मच्छिया व खेलंमिं।।6।।
रत हो भोगविलास में, बुद्धि भ्रमित हो जाय।
मन्दबुद्धि की मूर्खता, मक्खी मल लिपटाया।।

He who is immersed in sensual pleasures becomes blind in knowing what is beneficial to spiritual welfare, becomes ignorant, dull and entangles himself in his own aramas like a fly caught in phlegm.

जाणिज्जइ चिन्तिज्जइ, जम्मजरामरणसंभवं दुक्खं।
न य विसएसु विरज्जई, अहो सुबद्धी कवडगंठी।।7।।
समझे चिन्तन का विषय, जनम-मरण दुःख काल।
अचरज! विषय विरक्त नहीं, सुदृढ़ माया जाल।।

Everyone knows about the pains of birth, old age and death, and yet no one develops disregard for the objects of sensual pleasures.

Oh : how strong is this knot of dectet?

-(गाथाओं का हिन्दी दोहों में रूपान्तरण एवं अंग्रेजी अनुवाद श्री हेमन्त लोढ़ा, नागपुर ने सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'समणसुत्तं' में किया है।)

‘कैसे करें भाव सुधार’ एवं ‘साधना का शिखर संलेखना’ विषयों पर वेबिनार

डॉ. धर्मचन्द जैन

आचार्य हस्ती-स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रतिमाह निरन्तर ऑनलाइन वेबिनार का आयोजन किया जा रहा है। 14वीं वेबिनार 13 जून, 2021 को ‘कैसे करें भाव सुधार’ विषय पर आयोजित हुई। वेबिनार की मुख्य वक्ता ध्यान साधिका सुश्री नेहाजी चोरड़िया, जलगाँव थी। उन्होंने कहा कि अध्यात्म की उन्नति का आधार है भाव। मोक्षमार्ग के चार द्वारों में भी भाव का विशेष महत्त्व है। दान, शील एवं तप भी बिना भाव के महत्त्व नहीं रखते हैं। पुण्य के साथ भी भाव का महत्त्व है। भावों में शुद्धि किए बिना जीव गुणश्रेणी नहीं चढ़ सकता है। भावों की शुद्धि के लिए सम्यग्दर्शन के आठ अङ्ग हमें बहुत सुन्दर प्रेरणा करते हैं। निःशंकित, निष्कांक्षित, निर्विचिकित्सा एवं अमूढ़ दृष्टि आन्तरिक शुद्धि के लिए प्रेरित करते हैं तो उपबृंहण, स्थिरीकरण, वात्सल्य एवं प्रभावना ये चार बहिरंग संवर्धक हैं। इन आठों अङ्गों के आधार पर, इच्छा-जय के आधार पर और मैत्रीभाव के आधार पर उन्होंने भाव शुद्धि की बात कही।

उन्होंने कहा कि जब हम पर पदार्थ से जुड़ते हैं तब भाव मलिन होते हैं, निःशंकित होकर आत्मभाव से जुड़ेंगे तो स्वभाव में, समता में रहेंगे। तब पुण्य, संवर एवं निर्जरा की कमाई होती है। आत्मगुणों का पोषण होता है। निष्कांक्ष होने पर चाहना समाप्त हो जाती है। दूसरों के गुणों को देखकर ईर्ष्या करने की अपेक्षा प्रमोद भाव होना चाहिए। गुणों के प्रति बहुमान होना चाहिए। भाव सुधारने के लिए नकली मुलम्मे को हटाना होगा एवं दोषों को स्वीकार कर उन्हें दूर करना होगा। दोष असह्य

लगने लगे तब निर्विचिकित्स होकर भाव-शुद्धि कर सकते हैं। अमूढ़ दृष्टि होने पर देवमूढ़ता, गुरुमूढ़ता एवं धर्ममूढ़ता दूर होती है। बाहर की परिस्थिति को नहीं परिणामों को बदलना है। उपकारियों का उपकार मानें, अशुभ से शुभ में आने के प्रति जागृत रहें, सबको मंगल मैत्री देकर शुभ भावों में रह सकते हैं। भावों को सुधार कर ही भव को सुधार सकते हैं।

प्रोफेसर धर्मचन्द जैन ने इसी विषय को विस्तार देते हुए कहा कि भाव सुधार करने के लिए पहले हम जानें कि हमारे भाव कैसे हैं? भावों को जानकर ही उनमें सुधार सम्भव है। भावों में मलिनता है, क्रोध का भाव है, अशुभ भाव है तो उनको जानकर सुधार करने के लिए जागरूक बनें। किसी परिस्थिति को देखकर मेरी चेतना में किस प्रकार का भाव उत्पन्न होता है यह विचार करें। किसी का बंगला देखकर मेरे मन में किस प्रकार का भाव उत्पन्न होता है? वैसा बंगला देखकर ईर्ष्या पैदा हो तो, यह सोचता हूँ कि मैं भी ऐसा बंगला बनवाऊँगा, या यह भाव पैदा होता है कि ये पैसे वाले तो इसी प्रकार धन का दुरुपयोग करते हैं, या यह भाव उत्पन्न होता है कि यह मकान मात्र पुद्गलों का वृहद् ढेर है। मेरे में उत्पन्न भाव ही मेरे सुख-दुःख के कारण बनते हैं। उन्होंने कहा कि बारह भावनाएँ भी भावों को शुद्ध बनाने में सहायक हैं। संसार में सब कुछ अनित्य है। संयोग के साथ चिपकना कितना उचित है, इसका हम निर्णय करें। कितना भी पैसा खर्च कर दो, परिवार के व्यक्ति को कोई बचा नहीं पाता है। कोई शरणभूत नहीं है। कोरोना में हमने यह सत्य देखा है। हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन आदि के भावों को लाकर मैं दुःख को क्यों आमन्त्रित करता हूँ। हमें अठारह प्रकार के पापों का त्याग करना है तो सामायिक करें। शास्त्रों का

अध्ययन करने के साथ जीवन का अध्ययन करें। मुझमें उत्पन्न होने वाले भावों को देखूँ। क्या ऐसा भाव उत्पन्न होता है कि दूसरे की प्रतिष्ठा उतनी नहीं होनी चाहिए जितनी मेरी हो। प्रतिक्रमण भी हमारे भावों को परिमार्जित करता है। सन्त-सतियों के प्रवचन सुनने से, उनके सान्निध्य में बैठने से भी शान्ति का अनुभव करते हैं एवं हमारे भावों में सुधार होता है। हम धार्मिक क्रियाओं को करते हुए भी मान बढ़ाने में लगे रहते हैं। हमारे अन्तर में क्या है, उसके अनुसार भाव प्रकट होते हैं। दृष्टि बदलकर हम निरन्तर भाव-शुद्धि का कार्य कर सकते हैं। भावों का सुधार करना अन्तर में सब चाहते हैं। बड़ा आनन्द आता है जब भाव-सुधार होता है, व्यर्थ की चिन्ताओं से मुक्त हो सकता है। हमारा अच्छा-बुरा भाव भी दूसरों पर प्रभाव डालता है।

अतिथियों का स्वागत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत ने किया। कार्याध्यक्ष श्री विनयचन्द्रजी डागा ने नेहाजी चोरड़िया का हार्दिक आभार व्यक्त किया। साथ ही कहा कि आगे बढ़ने के लिए भाव शुद्धि आवश्यक है। शुभ भावों से कर्मों की निर्जरा होती है। वेबिनार का सुचारु सञ्चालन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा ने किया।

11 जुलाई, 2021 को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा आचार्य हस्ती व्याख्यान माला वेबिनार-15 का प्रातः 11 बजे 'साधना का शिखर : संलेखना संथारा' विषय पर आयोजन किया गया, जिसके प्रमुख वक्ता अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी डागा ने उद्बोधन देते हुए कहा-संलेखना-संथारा मरण की श्रेष्ठ कला होने के साथ साधना का शिखर है। उन्होंने जैन जीवनशैली की चर्चा करते हुए कहा कि 'सुख' भोग में नहीं 'त्याग' में है। जो इन्द्रियों को वश में रखता है उसके कर्मों के रस, अनुभाग सब टूटते चले जाते हैं। इन्द्रियों को वश में करना है तो अनशन बहुत सहयोगी होता है। जीवन का जब

सन्ध्याकाल आता है तो अनशन पूर्वक संलेखना-संथारा जीवन को सफल बना देता है। आयुष्य पूर्ण होने के पूर्व आराधना आवश्यक है, क्योंकि अधिकतम 8 आकर्ष में नये आयुष्य का बन्ध हो जाता है। अतः आ रही मृत्यु का निर्भयता पूर्वक सामना करने की तैयारी संलेखना संथारा है। संलेखना का उल्लेख दिगम्बर ग्रन्थों में भी है।

संलेखना में आहार एवं कषाय को कृश किया जाता है। आहार को कम करना द्रव्य संलेखना है एवं कषाय को कृश करना भाव संलेखना है। ऐसा साधक सबके प्रति क्षमाभाव अपनाता है, जिसको कुछ देना है तो देता है, कायोत्सर्ग में आगे बढ़ता है एवं समाधिस्थ होता है। आत्मभाव एवं समभाव में जीता है। वह आन्तरिक रूप से कषायों को कृश करता है एवं बाहर से शरीर को कृश करता जाता है। संलेखना का एक अर्थ है-शल्यों को निकालना। शल्यों को देखकर बाहर निकालना।

संथारा तीन प्रकार का हो सकता है-भक्त प्रत्याख्यान, इंगिनी मरण एवं पादपोपगमन मरण। निमाज में पूज्य आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. का संथारा हमने पादपोपगमनवत् देखा। उन्होंने उच्चतम न्यायालय के वकील सुशीलजी का हवाला देते हुए कहा कि वे जब कुछ संथारा करने के बारे में विशेष चर्चा कर रहे थे तो मेरे मुख से निकला कि पूज्य आचार्यश्री ने संथारा के पूर्व पाँच महाव्रत धारण किए थे। एडवोकेट सुशीलजी खुशी से उछल पड़े और बोले मैं यही तो जानना चाहता था। संथारा में अनशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्य का त्यागकर साधक इष्ट शरीर को वोसिराता है। वह छूटती हुई देह से ममत्व का त्यागकर समत्व में जीता है। वह किसी प्रकार की आकांक्षा किए बिना शरीर को वोसिराता है। वह अरिहन्त आदि की शरण में जाता है। उसे मृत्यु मात्र वस्त्र पलटने की तरह दिखाई देती है।

संलेखना सविचार एवं अविचार के भेद से दो प्रकार की है। सागारी संथारा भी होता है, जैसे कि सेठ सुदर्शन ने अर्जुनमाली को आते देखकर सागारी संथारा ग्रहण किया था और अनगर संथारा भी होता है-जैसे कि

पूज्य आचार्यश्री हस्ती ने किया था। बालमरण 12 प्रकार का बताया गया है, जो गिरिपतन, जलप्रवेश आदि के रूप में है। यह मरण संसार में रुलाने वाला होता है।

संलेखना आत्महत्या नहीं, आत्मलीनता है। संलेखना की प्रवृत्ति समत्व के लिए एवं कर्मों से छुटकारा पाने के लिए है। आत्महत्या में कुण्ठा, निराशा, आवेश आदि कारण होते हैं। सैनिकों के मरण को भी आत्महत्या नहीं कहा, उसे बलिदान कहा गया है। शील रक्षा हेतु कृत मरण को बालमरण नहीं माना गया।

उन्होंने कहा कि संविधान हमारी भावना को समझे एवं संथारा संलेखना को उच्च साधना का अङ्ग माने। यह तो श्रावक का तीसरा मनोरथ है।

विषय को आगे बढ़ाते हुए जिनवाणी के सम्पादक प्रोफेसर धर्मचन्द्र जैन ने कहा कि जैनधर्म में अति प्राचीनकाल से ही संलेखना संथारा की साधना का उल्लेख प्राप्त होता है। प्रथम अङ्ग सूत्र आचाराङ्गसूत्र इसका साक्ष्य है, जिसमें समाधिमरण की साधना का वर्णन प्राप्त होता है। आचाराङ्ग में तीन प्रकार के समाधिमरण का उल्लेख प्राप्त होता है—भक्तप्रत्याख्यान, इंगिनीमरण एवं पादपोपगमन मरण। प्रकीर्णक साहित्य में मरण समाधि-प्रकीर्णक, आतुर प्रत्याख्यान, महा प्रत्याख्यान आदि में भी समाधिमरण की खूब चर्चा हुई है। आराधना पताका, भगवती आराधना आदि में भी इस मरण का विवेचन है। प्रकीर्णकों में इस समाधिमरण को पण्डितमरण कहा गया है एवं कहा गया है कि जब मरना ही है पण्डितमरण से क्यों न मरा जाए। मरण के वहाँ तीन या पाँच प्रकार भी कहे गए हैं—पण्डितमरण, बाल-पण्डितमरण एवं बालमरण। जो पंच महाव्रतधारी साधु-साध्वी हैं वे जब संलेखना-संथारा पूर्वक मरण को प्राप्त होते हैं तो वह पण्डितमरण है तथा हम अणुव्रती या बारहव्रती श्रावक तथा सम्यग्दृष्टि जीव संलेखना-संथारा पूर्वक मरण को प्राप्त होता है तो वह बाल-पण्डितमरण है। अज्ञानी जनों का मरण बालमरण है। केवलियों के लिए पण्डितमरण को 'पण्डित-पण्डित' मरण कहा गया है तथा घोर मिथ्यात्वी जीवों का मरण

बाल-बाल मरण है।

भक्तप्रत्याख्यान या भक्तपरिज्ञा मरण में आहार का त्याग किया जाता है। एक होता है संलेखना पूर्वक, जो सविचार भक्तपरिज्ञा मरण कहलाता है तथा जो मरण संलेखना पूर्वक न हो वह अविचार भक्तपरिज्ञा मरण है। संलेखना में आहार को एवं कषाय को तनु किया जाता है। यदि इस मरण की पूर्व तैयारी नहीं है तो अविचार भक्त प्रत्याख्यान मरण सम्भव है। संथारा तृणमय शिलामय हो सकता है। साधु को लगे उसका जीवन अधिक शेष नहीं है तो वह भक्त प्रत्याख्यान या इंगिनीमरण का वरण कर सकता है। इंगिनीमरण में दूसरे की सेवा का सहयोग नहीं लिया जाता है। पादपोपगमन मरण में दूसरे की सेवा का सहयोग नहीं लेने के साथ शरीर को हिलाया डुलाया भी नहीं जाता है। इसमें साधक वृक्ष की भाँति एक स्थान पर अडोल रहता है। सबसे क्षमायाचना कर, मन की समाधिपूर्वक यह मरण स्वीकार किया जाता है। पहले पंचमहाव्रतों को पुनः धारण किया जाता है। मृत्यु के समय हम लेश्या को सुधार कर बिना उद्वेग के मरण को प्राप्त करना चाहें तो उसके लिए संलेखना संथारा अतीव उपयोगी है। अस्पताल में बेहोशी की अवस्था में समाधिमरण नहीं होता। जो स्वयं जाग्रत रहकर उसे स्वीकार करता है उसका ही संलेखना संथारा सार्थक है। अतः घर पर रहने पर भजन, प्रार्थना आदि के द्वारा साधक की लेश्या को विशुद्ध बनाया जा सकता है।

मरण के समय संक्लिष्ट लेश्या न होकर पर्यवजात लेश्या (विशुद्ध) होना चाहिए। प्राचीनकाल के सैंकड़ों शिलालेख मिलते हैं, जिनमें श्रवण बेलगोला में चन्द्रगुप्त मौर्य का संलेखना विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

उद्बोधन के पश्चात् प्रश्नोत्तर भी हुए। प्रारम्भ में प्रमुख वक्ता का स्वागत सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत ने किया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री श्री अशोक कुमारजी सेठ ने आभार ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम का सुन्दर सञ्चालन मण्डल के कोषाध्यक्ष श्री रितुलजी पटवा ने किया।

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं



नूतन साहित्य



श्री गौतमचन्द जैन

तत्त्वार्थसूत्र-(रचयिता-वाचक उमास्वाति)
व्याख्याकार-उपाध्याय श्री केवलमुनि। सम्पादक-
श्रीचन्द सुराना 'सरस।' प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल-श्री
कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ, No. 157, Huriyopet,
Chickpet, Bengaluru-560053 Tel. 080-
43718830, Shantilal A. Bohra, 111,
Diagonal Road, V.V.Puram, Bengaluru-
560054, Tel. 080-22420786, Mob.
9448304725, संस्कारण-पंचम संस्करण, विक्रम
संवत् 2076, फरवरी, 2020, पृष्ठ-619, मूल्य-
100 रुपये।

प्रस्तुत ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र के रचयिता वाचक उमास्वाति हैं, जो दिगम्बर परम्परा में उमास्वामी के नाम से प्रसिद्ध हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ 'तत्त्वार्थसूत्र' संस्कृत भाषा में सूत्रात्मक शैली में मोक्षमार्ग का सुन्दर, सरल, सुबोध एवं क्रमबद्ध रूप से संक्षेप में सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत करता है। तत्त्वार्थसूत्र ग्रन्थ पर अनेक विद्वानों ने टीकायें और भाष्य भी लिखे हैं और स्वयं ग्रन्थकार वाचक उमास्वाति ने भी इस पर स्वोपज्ञभाष्य लिखा, जो तत्त्वार्थाधिगम भाष्य के नाम से प्रसिद्ध है।

तत्त्वार्थसूत्र का आधार आगमों को बनाया गया है। इससे सामान्य पाठक को भी सरलता से जैनदर्शन, तत्त्वज्ञान (नवतत्त्व), श्रावकव्रत, कर्मसिद्धान्त, साधु-धर्म, लोक के स्वरूप, चार गति एवं मोक्षमार्ग की जानकारी हो जाती है और शुभ कर्म करके सम्पूर्ण कर्मों का क्षय करके मोक्ष प्राप्त करने की प्रेरणा मिलती है।

'तत्त्वार्थसूत्र' को श्वेताम्बर एवं दिगम्बर जैन दोनों ही स्वीकार करते हैं और इसे तत्त्वार्थाधिगमसूत्र या मोक्षशास्त्र के नाम से भी जानते हैं। सभी जैन इस ग्रन्थ के प्रति श्रद्धाभाव रखते हैं। इस प्रकार से यह ग्रन्थ सभी जैनियों में लोकप्रिय ग्रन्थ है।

हिन्दी एवं गुजराती भाषा में अनेक विद्वज्जनों ने

भी 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रन्थ पर व्याख्याएँ लिखी हैं, जो प्रकाशित हुई हैं। परन्तु प्रस्तुत 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रन्थ के व्याख्याकार उपाध्याय श्री केवलमुनिजी की पुस्तक में अनेक विशेषताएँ हैं। यह पुस्तक पहले ब्यावर एवं पूना से भी प्रकाशित हुई थी, अब बेंगलोर से कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ द्वारा प्रकाशित की गई है। प्रस्तुत पुस्तक के दस अध्यायों में प्रत्येक अध्याय के प्रारम्भ में मुनिश्री ने प्रस्तुत सूत्र से सम्बन्धित आगम सूत्रों का सन्दर्भ दिया है और उसका हिन्दी अर्थ भी प्रस्तुत किया है। इससे पाठक को सूत्र को विस्तार से समझने का अवसर मिलता है। मुनिश्री ने सूत्र में वर्णित विषय को विस्तार से सरलतापूर्वक समझाया है और कठिन शब्दों के अर्थ एवं परिभाषाएँ भी लिखी हैं, जिससे विषय स्पष्ट हो जाता है। सूत्रों से सम्बन्धित विषय के भेद-प्रभेद आदि का भी और प्रासङ्गिक विषयों का भी विस्तृत विवेचन किया गया है। मुनिश्री ने स्थान-स्थान पर चार्ट बनाकर भी विषय को स्पष्ट रूप से सरलता पूर्वक समझाने का सफल प्रयास किया है। जहाँ पर किसी विषय में मतभेद है, उसका भी मुनिश्री ने स्पष्ट उल्लेख करते हुए प्रमाणपुरस्सर अपना मन्तव्य प्रकट किया है। कतिपय विषयों के सन्दर्भ में मुनिश्री ने आधुनिक विद्वानों एवं वैज्ञानिक खोजों का भी उल्लेख किया है, जो प्रासङ्गिक है और उनसे जैनदर्शन की प्राचीनता एवं प्रामाणिकता सिद्ध होती है। पुस्तक इतनी रोचक एवं सरस शैली में लिखी गई है कि पाठक को उसमें निरन्तर रसास्वादन होता रहता है और ज्ञान प्राप्त होता रहता है।

प्रस्तुत पुस्तक के अन्त में प्रथम परिशिष्ट में 'तत्त्वार्थसूत्र' के दस अध्यायों के मूल पाठ सूत्र रूप में उल्लिखित हैं जो कि सूत्रों को कण्ठस्थ करने के लिए एवं सन्दर्भ खोजने के लिए अत्युपयोगी हैं। पुस्तक के द्वितीय परिशिष्ट में शब्दसूची प्रस्तुत की गई है जिसमें विशिष्ट शब्द आदि का विस्तृत विवरण अंकित है।

प्रस्तुत 'तत्त्वार्थसूत्र' ग्रन्थ सभी जिज्ञासु पाठकों के लिए पठनीय है।

शाश्वत शान्ति-लेखक-इमैनुअल कांट।
अनुवादक-संजय कुमार शुक्ला। **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन 0141-2524828, 2520230, ISBN No. 978-81-946417-9-7, Email : prabharati@gmail.com, Website : www.praakritbharati.net, **प्रथम संस्करण**-2021, **पृष्ठ**-88, **मूल्य**-200 रुपये।

प्रसिद्ध दार्शनिक इमैनुअल कांट की रचना 'परपेचुअल पीस : ए फिलॉसॉफिकल स्केच' का हिन्दी अनुवाद श्री संजय कुमारजी शुक्ला ने 'शाश्वत शान्ति' शीर्षक के रूप में किया है। यह कृति विभिन्न देशों और राज्यों के बीच शान्ति-व्यवस्था कायम करने के सम्बन्ध में है। प्रस्तुत पुस्तक में युद्ध के कारणों और शान्ति की मूलभूत शर्तों का सम्यक् विश्लेषण किया गया है, जो वर्तमान में अत्यन्त प्रासङ्गिक है।

प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम खण्ड में विभिन्न राज्यों से सम्बन्धित शाश्वत शान्ति के प्राथमिक अनुबन्धों का विवेचन किया गया है। जैसे कि कोई भी ऐसी शान्ति सन्धि वैध नहीं हो सकती है, जिसमें भविष्य के युद्ध की सम्भावना निहित हो। स्थायी सेनाओं का एक निश्चित समयावधि में उन्मूलन किया जाना चाहिये। द्वितीय खण्ड में विभिन्न राज्यों से सम्बन्धित शाश्वत शान्ति के निर्णायक अनुबन्ध का वर्णन किया गया है। जैसे कि प्रत्येक राज्य का नागरिक संविधान गणतन्त्रीय होना चाहिए। इसके पश्चात् प्रथम सम्पूरक में शाश्वत शान्ति को सुनिश्चित करने के सन्दर्भ में तीन प्रमुख बिन्दुओं पर चर्चा की गई है। द्वितीय सम्पूरक में शाश्वत शान्ति के लिए गुप्त अनुच्छेद का वर्णन किया गया है। दो परिशिष्ट भी पुस्तक में दिये गये हैं जिनमें शाश्वत शान्ति के सन्दर्भ में नैतिकता एवं राजनीति में असहमति के बारे में विस्तार से बताया गया है। द्वितीय परिशिष्ट में सार्वजनिक अधिकार के अतीन्द्रिय प्रत्यय के अनुसार 'राजनीति का नैतिकता से सामञ्जस्य' के सन्दर्भ में

विचार एवं सुझाव प्रकट किये गये हैं। अन्त में शाश्वत शान्ति (परपेचुअल पीस) के सन्दर्भ में कांट ने राजनीति-दर्शन को प्रस्तुत किया है जिसमें तीन नीति-सूत्रों का प्रतिपादन किया गया है। इसके साथ ही विश्वबन्धुत्ववाद के सिद्धान्त का भी प्रतिपादन किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक का हिन्दी भावानुवाद सरल, सुबोध एवं सुगम है तथा हिन्दी भाषी क्षेत्र में दर्शन के अध्येता, विद्यार्थी, अध्यापक और सभी प्रबुद्धजनों के लिए उपयोगी है।

हन्ना आरेंट : हिंसा का उत्खनन-लेखक-अम्बिकादत्त शर्मा और विश्वनाथ मिश्र। **सम्पादक**-नन्दकिशोर आचार्य। **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-प्राकृत भारती अकादमी, 13 ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.), फोन 0141-2524827, 2520230, ISBN No. 978-81-946417-8-0, Email : prabharati@gmail.com, Website : www.praakritbharati.net, **प्रथम संस्करण**-2021, **पृष्ठ**-199, **मूल्य**-400 रुपये।

महात्मा गाँधी की 150वीं जयन्ती के अवसर पर प्राकृत भारती अकादमी द्वारा स्थापित अहिंसा शान्ति प्रकोष्ठ की एक प्रमुख परियोजना अहिंसा-शान्ति ग्रन्थमाला का प्रकाशन है। इस अहिंसा-शान्ति ग्रन्थमाला प्रकाशन योजना के अन्तर्गत यह अहिंसा-शान्ति ग्रन्थमाला का 9वाँ पुष्प प्रकाशित है।

प्रस्तुत पुस्तक 'हन्ना आरेंट : हिंसा का उत्खनन' महान् विदुषी हन्ना आरेंट के राजनीति एवं शक्ति के वास्तविक अर्थ को प्रकट करने के लिए उनके विचारों को आधार बनाकर लिखी गई है। इसमें ग्रीक, बाह्लिक और अबाह्लिक परम्परा में राजनीति एवं शक्ति तथा हिंसा का विश्लेषण करते हुए आधुनिक सभ्यता की उन तथ्यात्मकताओं को परत-दर-परत अनावृत्त करने का प्रयास किया गया है, जो शक्ति को छोड़कर हिंसा की ओर अग्रसर होने के लिए मार्ग उपलब्ध कराते हैं। हिंसा

के आयाम इतने विस्तृत होते हैं कि जब तक उसका एक छोर पकड़ में आता है, तब तक दूसरा छोर पकड़ से बाहर चला जाता है। ऐसे में मनुष्य नहीं चाहते हुए भी हिंसा का समर्थन कर बैठता है और नहीं समझते हुए हिंसा को सहन करता रहता है। यह मानवीय परिस्थिति मानवता के लिए 'लॉस ऑफ होप' जैसी है। इसके पुनर्लाभ के लिए शक्ति को प्रामाणिक भूमिका में प्रतिष्ठित होना आवश्यक है, जिसे हिंसा ने विस्थापित कर दिया है। लेखक द्वय की यह पुस्तक इसी उद्देश्य और दिशा में की गयी एक आत्मचेतन पहल है।

प्रस्तुत पुस्तक में महान् विदुषी हन्ना आरेंट और महात्मा गाँधी के राजनीति और अहिंसा विषयक सिद्धान्तों का सम्यक् निरूपण किया गया है। इसके साथ-साथ अहिंसा के सम्बन्ध में धार्मिक परम्पराओं, मान्यताओं और दर्शन का सम्यक् परीक्षण एवं विवेचन प्रस्तुत किया है। यह समझाने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार से हिंसा की भावना को जड़ (मूल) से मानव के हृदय से बाहर निकाला जा सकता है और सम्पूर्ण विश्व में एक अहिंसक एवं शान्त वातावरण का साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है।

लेखक द्वय ने प्रस्तुत पुस्तक के छह अध्यायों में विभिन्न शीर्षकों से विषय को प्रस्तुत किया है। सम्बन्धित अध्याय के साथ में ही सन्दर्भित साहित्य की भी सूची उपलब्ध करायी गई है, जो प्रासङ्गिक एवं समीचीन है।

प्रस्तुत पुस्तक सभी प्रबुद्धजनों के लिए अत्यन्त उपयोगी है और पठनीय तथा विचारणीय है।

पारिवारिक शान्ति के सूत्र-लेखक-अरुण पितलिया-चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट। **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**-82, गोपाल पार्क, शोभागपुरा सर्किल, उदयपुर-313001 (राज.), मो. 9414233294, **संस्करण**-2020, **पृष्ठ**-48।

प्रस्तुत लघु पुस्तिका में लेखक ने पारिवारिक शान्ति के सूत्र प्रस्तुत किये हैं। प्रारम्भ में स्पष्ट किया है

कि पारिवारिक शान्ति क्यों और कैसे? इसके साथ ही पारिवारिक शान्ति के सुपरिणाम बताये हैं। तत्पश्चात् पारिवारिक शान्ति के सूत्रों का वर्णन किया है, जिसमें सूत्रों को पाँच भागों में बाँटा है-भावात्मकसूत्र, व्यवहारगतसूत्र, व्यवस्थागतसूत्र, साधनागतसूत्र और विविधसूत्र। सभी सूत्रों को संक्षेप में परन्तु स्पष्ट रूप से कथा के दृष्टान्त देकर समझाने का प्रयास किया गया है। अन्त में निष्कर्ष के साथ परिशिष्ट भी दिया गया है। पारिवारिक शान्ति के लिए सभी को यह पुस्तक पढ़नी चाहिये और उसमें वर्णित सूत्रों को जीवन में उतारकर शान्ति प्राप्त करना चाहिये।

क्रोध-शान्ति के सूत्र-लेखक-अरुण पितलिया, चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट। **सम्पादक**-डॉ. दिलीप धींग। **प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थल**- 'अनुप्रेक्षा', 82, गोपाल पार्क, शोभागपुरा सर्किल, उदयपुर-313001 (राज.), 94142-33294, Email : arunpitliya@gmail.com, **प्रथम संस्करण**-जनवरी 2020, **पृष्ठ**-72 + 8 =80, **मूल्य**-क्रोध पर नियन्त्रण करें।

लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक उदयपुर में विराजित विद्वान् मुनि डॉ. विनोद कुमारजी 'विवेक' के पावन सान्निध्य और मार्गदर्शन में लिखी है। प्रस्तुत पुस्तक के लेखन का लेखक का उद्देश्य यही है कि पाठकों के जीवन में क्रोध कम हो और परिवार में तनाव घटे तथा खुशियाँ बढ़ें।

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक ने सर्वप्रथम क्रोध का स्वरूप बताते हुए उसके लक्षण, प्रकार, स्तर और कारणों का स्पष्ट, वैज्ञानिक और कर्मसिद्धान्त सम्मत वर्णन प्रस्तुत किया है। तत्पश्चात् क्रोध के दुष्परिणामों का विवेचन विविध रूपों में किया है। यथा-शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, आध्यात्मिक, व्यावहारिक, पारिवारिक, सामाजिक और व्यक्तिगत दुष्परिणाम। लेखक ने पाठक को क्रोध-शान्ति के लिए साधनागत, व्यवहारगत और विविध-सूत्र बतलाये हैं। साधनागत सूत्रों में योग-साधना, आसन और प्राणायाम के बारे में

विस्तार से समझाया है। ज्ञानमुद्रा, खेचरी मुद्रा और योगमुद्रा की विधि का भी सचित्र प्रदर्शन किया गया है। महाप्राण ध्वनि और ध्यान को भी क्रोध-शान्ति का प्रमुख साधन बताया है। इसके साथ-साथ मन्त्र-साधना, तन्त्र-साधना, यन्त्र-साधना और संगीत-साधना का भी वर्णन क्रोध-शान्ति के परिप्रेक्ष्य में किया गया है। व्यवहारगतसूत्र के अन्तर्गत संकल्प, मुस्कान, वाणी संयम, खाद्य संयम, पित्तशमन, स्वास्थ्य, स्थान परिवर्तन, क्षमा, तटस्थता और विधायक चिन्तन आदि को क्रोध-शान्ति के अमोघ-साधन के रूप में निरूपित किया है। अन्य महत्त्वपूर्ण उपाय धैर्य, विनम्रता, घटना

की वैज्ञानिक समीक्षा, समय प्रबन्धन आदि के बारे में भी सम्यक् प्रकार से समझाया है। अन्त में कतिपय प्रभावकारी सूत्र भी क्रोध-शान्ति के लिए दिये गये हैं। परिशिष्ट में बौच फ्लावर दवाइयाँ और सुजोक चिकित्सा का वर्णन करते हुए कतिपय प्रभावक सूक्तियाँ और प्रेरक कथाएँ एवं निष्कर्ष दिये गये हैं।

निश्चय ही प्रस्तुत पुस्तक में दर्शाये गये सूत्रों का पालन करके पाठक क्रोध को शान्त कर प्रसन्न, स्वस्थ एवं सुखी जीवन यापन कर सकेंगे।

-पूर्व डी.एस.ओ., 70, 'जयणार', विश्वकर्मा नगर-
द्वितीय, महाराजगी फॉर्म, जयपुर (राजस्थान)

'तहत्ति तहत्ति' बोले ये मन

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

(तर्ज : संयम संयम गाये ये मन)

वीर प्रभु के अमृत वचन, प्रवचन जैसे शीतल चन्दन कानों से सुनके आगम वचन, तहत्ति तहत्ति बोले ये मन भावों से कटते सारे बंधन... तहत्ति तहत्ति बोले ये मन वाणी तेरी समता भरी ...सरगम बहें पापों से पीछे हटना है ... आगम कहें आगम के सागर का है मन्थन

तहत्ति तहत्ति बोले ये मन॥1॥

जो भी कहा जिनवाणी ने...तथ्य वचन प्राणों से स्वीकारें हम ...सत्य वचन आज्ञा की खुशबू...महके उपवन ...

तहत्ति तहत्ति बोले ये मन॥2॥

प्यास बुझी है भव भव की ...सुनकर तुझे
आस जगी है मुक्ति की ...चुनकर तुझे
साँसों में सिद्धि ...ऐसा यतन ...

तहत्ति तहत्ति बोले ये मन..॥3॥

मुक्ति को पाकर ही पूरी है ...कहानी मेरी
हित की शिक्षा देती है ...वाणी तेरी
मेरे हितैषी ...मेरे भगवन

तहत्ति तहत्ति बोले ये मन॥4॥

देशना ये दिव्य है ...प्रभुवर तेरी
साधना ये भव्य है ...गुरुवर तेरी
तीर्थ को तारे ...पावन वंदन

तहत्ति तहत्ति बोले ये मन॥5॥

- 'जिनशासन' बी 102, वीतरागसिटी, जैसलमेर
बाईपास रोड़, जोधपुर (राजस्थान)

ध्यान-चिन्तन

डॉ. रमेश 'मयंक'

ध्यान-चिन्तन पारिवारिक-सामाजिक
और-राष्ट्रीय जीवन में सदुपयोग का सार
किन्तु आध्यात्मिक जीवन में धर्म का प्रवेश द्वार
ध्यान चिन्तन करने वाला
सञ्चित पुण्य अशुभ कर्मों को नहीं बढ़ाता

रोगों को मिटाकर शक्ति-सामर्थ्य बढ़ाता
वीतराग-ध्यान करने से साधकों को
उत्साह, उमङ्ग स्फूर्ति बढ़ जाती
देह की क्षमता बढ़ पाती, एकाग्रता की स्थिति
दुःखद परिस्थितियों से बचाती
आचरण को श्रेष्ठ बनाती॥

-बी-8 मीरा नगर, चित्तौड़गढ़-312001 (राज.)

समाचार विविधा

पीपाड़ में पूज्य आचार्यप्रवर का 17 वर्षों के पश्चात् चातुर्मास ज्ञानाराधन और धर्मारधन का सुन्दर वातावरण

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग एवं व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-6 पीपाड़ के श्रीमती शरदचन्द्रिका मुणोत स्वाध्याय भवन में चातुर्मास हेतु विराजित हैं। व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 श्री जयमल महिला स्वाध्याय भवन में विराज रहे हैं।

चातुर्मास में धर्मसाधना एवं आराधना का सुन्दर वातावरण बना हुआ है। सन् 1997 के पश्चात् पूज्य आचार्यप्रवर के चातुर्मास का यह विशेष संयोग प्राप्त हुआ है। पीपाड़सिटी के श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, युवती मण्डल सभी में धर्मोल्लास व्याप्त है एवं सुरक्षित व्यवस्था के प्रति सजगता के साथ धर्मध्यान कर रहे हैं। 13 जुलाई से श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के तथा 25 जुलाई से श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. के उद्बोधन के पश्चात् महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. प्रवचन फरमा रहे हैं। प्रातःकाल श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा. प्रार्थना करवाते हैं। प्रवचन के पश्चात् 10 से 11 बजे तक एवं दिन में 3 से 4 बजे तक थोकड़ों की कक्षा तथा रात्रि में प्रतिक्रमण के पश्चात् 8.45 से 9.45 तक बोधिशाला कथामाला कक्षा श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा उद्बोधन पूर्वक गतिशील है।

व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में श्री जयमल महिला स्वाध्याय भवन में दिन में 12.45 से 1.45 तक विभिन्न थोकड़ों की कक्षा एक साथ चल रही है। महासती श्री खुशबूजी म.सा. तपाराधना में आगे बढ़ रहे हैं। 26 जुलाई तक उनके 16 की तपस्या स्वास्थ्य समाधि के साथ चल रही थी। संघ मन्त्री श्री नमनजी मेहता ने अठाई तप के साथ चातुर्मासिक पर्व का शुभारम्भ किया है। उपवास, आयम्बिल, एकाशन, तेला आदि की लड़ी चल रही है।

जैन संस्कार पाठशाला के बालक-बालिका ज्ञानार्जन के साथ सायंकाल समूह में पूज्य गुरुदेव के दर्शन-वन्दन करते हैं। प्रतिदिन एक-एक घर में प्रातःकाल 8.00 बजे से सायंकाल 6 बजे तक अखण्ड नवकार का जाप चल रहा है। श्रावक एवं युवक गुरुचरण सन्निधि में तथा श्राविकाएँ, युवतियाँ महासती मण्डल की सन्निधि में संवर साधना कर रहे हैं। 23 जुलाई को चातुर्मास का शुभारम्भ हुआ एवं 24 जुलाई को गुरुपूर्णिमा के पावन प्रसङ्ग पर ओसवाल, पोरवाल, पल्लीवाल क्षेत्रों के अनेक ग्राम-नगरों से श्रावक-श्राविकाओं ने गुरु-दर्शन, वन्दन एवं मांगलिक श्रवण के साथ धर्म साधना और व्रत-प्रत्याख्यान का सुन्दर लाभ लिया।

परम आराध्य गुरुदेव पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. 83 वसन्त पार करने के पश्चात् भी ऊर्जा के साथ गहन मौन एवं मितभाषी होकर ब्रह्ममुहूर्त से लेकर रात्रि-विश्राम तक दैनिक साधना-आराधना के साथ सतत स्वाध्याय लीन रहते हैं। जिनके दर्शन कर श्रद्धालुओं में भी ऊर्जा का सञ्चार होता है। महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. पूज्य आचार्यप्रवर की साधना-आराधना, संघीय व्यवस्था एवं दैनिकचर्या के हर कृत्य में सेवाभावना के साथ सतत सन्नद्ध है। इसके साथ प्रवचन, वाचनी, गोचरी आदि के लिए भी अप्रमत्तभाव से तत्पर रहते हैं।

जुलाई मास के प्रारम्भ तक तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. पीपाड़ में संघनायक पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा में रहकर ज्ञान की गंगा प्रवाहित करते रहे और 2 जुलाई को ठाणा-4 से आपने चातुर्मास स्थल गोटन की ओर विहार किया। 1 जुलाई को व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा., महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 का पीपाड़ में पदार्पण हुआ। गुरु चरणों में दर्शन-वन्दन, सेवा-साधना-आराधना एवं मार्गदर्शन का लाभ लेकर 10 जुलाई को गोटन चातुर्मास हेतु विहार हुआ। व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-3 का 12 जुलाई को पीपाड़ पदार्पण हुआ तथा चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश 13 जुलाई को श्री जयमल महिला स्वाध्याय भवन में हुआ।

जब से परमाराध्य पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि चारित्रात्माओं का पीपाड़ की पावनधरा पर पदार्पण हुआ है तब से ही पीपाड़ श्रीसंघ में उत्साह, उमङ्ग, भक्ति-भावना, सेवा उत्तरोत्तर वृद्धिगत होने से धर्म गङ्गा प्रवाहित हो रही है।

पीपाड़ श्रीसंघ के श्रावकसंघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद्, बालिका मण्डल सभी सर्वतोभावेन सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य, श्रद्धाभक्ति-भावना, धर्मध्यान, तप-त्याग में अनवरत सहभागिता एवं धर्मोल्लासपूर्वक गतिशील हैं।

-गिर्राज जैन

जयपुर में तीन चातुर्मास : धर्मप्रभावना का जगा विश्वास

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक परम पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3, किरणपथ, मानसरोवर स्थित 'महावीर भवन' में, साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-13, महारानी फार्म स्थित, उत्तम स्वाध्याय भवन में एवं व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 बारह गणगौर, चौड़ा रास्ता स्थित 'महावीर भवन' में चातुर्मासार्थ प्रवेश पश्चात् सुखे-समाधे विराज रहे हैं।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 का 13 जुलाई को प्रातः 9.30 बजे न्यू सांगानेर रोड़ स्थित 'पोरवाल भवन' से किरण पथ, मानसरोवर स्थित 'महावीर भवन' में बिना पूर्व सूचना के चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हुआ। चातुर्मास प्रवेश से ही यहाँ पर कोविड गाइडलाइन के अनुसार प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी, सायंकालीन प्रतिक्रमण एवं ज्ञानचर्चा आदि निरन्तर गतिमान हैं।

श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. पहले ही फरमा चुके हैं कि यह केवल मानसरोवर का चातुर्मास नहीं, बल्कि सम्पूर्ण जयपुर का चातुर्मास है। परिणामस्वरूप मानसरोवर से ही नहीं, अपितु जयपुर के उपनगरों से भी अनेक श्रावक-श्राविकाएँ नित्य प्रवचन-श्रवण हेतु पधारते हैं। प्रवचन के दौरान श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह देखते ही बनता है।

18 जुलाई से श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के सान्निध्य में युवक-युवतियों हेतु प्रत्येक रविवार को प्रातः 7 से 8 बजे तक विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें "Celebrate Life with Sprituality" 'सुखी जीवन का आधार : व्रत पचकखाण स्वीकार' आदि विषयों पर युवा पीढ़ी को दिशा प्रदान की जा रही है। 17 जुलाई को तपस्वीराज श्री नवरत्नजी लुंकड़ ने 27 में 4 मिलाकर अपने 31वें मासखमण तप के प्रत्याख्यान ग्रहण किये। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने 23 जुलाई को उपस्थित चातुर्मासिक पर्व को संवत्सरी पर्व के बाद सबसे बड़ा पर्व बतलाते हुए इस पर्व को 108 पौषध के साथ मनाने का लक्ष्य रखने के भाव फरमाए, जिसमें लगभग सभी श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह के साथ बढ़-चढ़कर लक्ष्य से अधिक पौषध एवं संवर तप की आराधना की। 25 जुलाई को श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में जयपुर के सभी उपनगरों के पदाधिकारियों का लघुशिविर

आयोजित हुआ, जिसमें म.सा. द्वारा 'संघ गरिमा एवं श्रावक कर्त्तव्य बोध' विषय पर उद्बोधन दिया गया। 26 जुलाई को महाराज सा. के सान्निध्य में युवती मण्डल की ओर से 'Learning, Motivation & Fun' विषय पर कार्यशाला आयोजित हुई। एकाशन, आयम्बिल, नीवी, उपवास, बेले, तेले आदि तपस्याओं की लड़ी चातुर्मास प्रवेश से ही प्रवाहमान है। दर्शनार्थ आने वालों का क्रम निरन्तर बना हुआ है।

चातुर्मास प्रवेश से पूर्व मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 का गुलाबी नगर में धर्मप्रभावना हेतु लगभग सभी उपनगरों में विचरण हुआ। इसी के अन्तर्गत आप तिलकनगर पधारे। आपके विराजने से यहाँ स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं का मेले जैसा आवागमन रहा। इसी तरह आदर्शनगर और जवाहरनगर पधारने पर भी स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं का ऐसा ही उत्साह दिखाई दिया। आपका लगभग एक सप्ताह लालभवन विराजना हुआ। प्रथम दिन के प्रवचन में 400-450 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। आपने विस्तार से सभी दिनों में भगवान महावीर के उपदेशों का मर्म समझाया। आपने लालभवन के दिवंगत बड़े श्रावकों को भी याद किया और उस समय उपस्थित वातावरण की भी चर्चा की। आपका पूज्य उपाध्यायप्रवर के साथ गत 17 वर्ष पूर्व लालभवन में चातुर्मास हुआ था। श्री नवरत्नजी लूंकड ने प्रथम दिन ही अपने 31वें मासखमण की शुरुआत की एवं 5 के प्रत्याख्यान किये, उसके बाद 15 के एक साथ प्रत्याख्यान किये। लालभवन में चातुर्मास जैसा माहौल बन गया। यहाँ से विहार कर आप दो दिन रत्न स्वाध्याय भवन पधारे, वहाँ से लालकोठी स्थानक पधारे। दोनों जगह प्रवचन में अच्छी उपस्थिति रही, वहाँ से विहार कर सिविल लाइन्स पधारे और संघ के वरिष्ठतम सुश्रावक, संघ संरक्षक श्री नथमलजी हीरावत को मांगलिक सुनाने उनके निवास स्थान पधारे। यहाँ से पुनः महारानी फार्म पधारना हुआ, जहाँ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. के स्वास्थ्य की सुखसाता पूछी। यहाँ भी प्रवचन बराबर चलता रहा। यहाँ से विहार कर राधा निकुञ्ज कॉलोनी, मुहानामण्डी रोड़ पधारे। यहाँ तीनों दिनों के प्रवचन में उपस्थिति देखते ही बनती थी। यहाँ पर आपने धर्मस्थान में प्रतिदिन सामायिक करने वाले करीब 30 से 40 श्रावक-श्राविकाओं को प्रत्याख्यान कराये और अष्टमी, चतुर्दशी तथा रविवार को भी लगभग 10 से 15 श्रावकों ने संवर, प्रतिक्रमण एवं पौषध करने के नियम ग्रहण किये। यहाँ से विहार कर मानसरोवर स्थित पोरवाल भवन पधारे, यहाँ पर भी प्रवचन में हॉल खचाखच भरा हुआ रहा। यहीं पर पूज्य महासती श्री संगीताजी म.सा. आदि ठाणा-4 जयपुर के लिए विहार करते हुए आपश्री के दर्शनार्थ पधारे।

साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. आदि ठाणा-13 का इस वर्ष का चातुर्मास उत्तम स्वाध्याय भवन, महारानी फार्म पर ही हो रहा है। आपश्री स्वास्थ्य कारणों से गत कई माह से इसी स्थानक में विराज रहे हैं। सभी सती-मण्डल के स्वास्थ्य में समाधि है। चातुर्मासिक पर्व से यहाँ पर भी प्रवचन निरन्तर गतिमान हैं। तेला, उपवास, आयम्बिल, एकाशन, नीवी की लड़ी चल रही है। चातुर्मासी चौदस के दिन अनेक उपवास एवं पौषध हुए हैं।

मधुरव्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-4 का इस वर्ष का चातुर्मास लालभवन को प्राप्त हुआ है। महासती जी म.सा. पीपाड़ से गोटन और वहाँ से जयपुर के लिए उग्रविहार करते हुए जयपुर पधारे। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. एवं साध्वीप्रमुखा महासती श्री तेजकँवरजी म.सा. के दर्शन करते हुए 13 जुलाई को लगभग 11 बजे चातुर्मासार्थ महावीर भवन, बारह गणगौर स्थानक, चौड़ा रास्ता में पधारे। प्रवेश के समय और रास्ते में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति अच्छी रही। प्रवचन लालभवन, चौड़ा रास्ता, स्थानक में निरन्तर गतिमान हैं।

-सुरेशचन्द्र कोठारी, मन्त्री

जोधपुर में तीन चातुर्मास : 20 विहरमान आराधना से धर्मोद्योत

सूर्यनगरी जोधपुर का परम सौभाग्य है कि यहाँ सतत सन्त-सतीवृन्द के विराजने से यह धर्म नगरी बनी हुई है। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की असीम कृपा से जोधपुर संघ को तीन चातुर्मास प्राप्त हुए हैं। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा-4 का चातुर्मास नेहरू पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में चल रहा है। इसके पूर्व आप जोधपुर के उपनगरों को फरसते हुए कुछ दिन घोड़ों का चौक स्थानक में विराज कर कल्पकाल पर्यन्त शक्तिनगर स्थानक में विराजे जहाँ पर व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा., पद्मप्रभाजी म.सा. आदि सती मण्डल ने मुनि मण्डल के दर्शन एवं सेवा का लाभ लिया। आपका 13 जुलाई को चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हुआ है तथा उसी दिन से नियमित प्रवचन एवं साधना-आराधना चल रही है। सरदारपुरा नेहरूपार्क क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं में अपार उल्लास एवं भक्तिभावना नज़र आ रही है।

व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा-7 का चातुर्मास सामायिक-स्वाध्याय भवन, घोड़ों का चौक में चल रहा है। आप का भी मंगल प्रवेश 13 जुलाई को हुआ। वर्षों पश्चात् घोड़ों का चौक स्थानक में चातुर्मास मिलने से स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह सराहनीय है। नियमित प्रवचन एवं धर्म साधना चल रही है।

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा-10 का चातुर्मास सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्ति नगर में चल रहा है। 13 जुलाई को पावटा से विहार कर आप शक्ति नगर पधारे। क्षेत्र के लोगों में अपार उत्साह है। चातुर्मास प्रवेश के साथ ही प्रवचन और नियमित साधना-आराधना चल रही है।

जोधपुर के तीनों चातुर्मास स्थलों पर 20 विहरमान आराधना कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है जिसमें लगभग 200 साधक साधना कर रहे हैं। शक्ति नगर में श्रावण मास में अठाई की लड़ी चल रही है। लगभग प्रतिदिन अठाई की तपस्या के प्रत्याख्यान प्रवचन सभा में हो रहे हैं। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. एवं महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. के सान्निध्य में प्रातः 8 से 9 बजे तक आयोजित कक्षा में युवक-युवती एवं श्रावक-श्राविका अच्छी संख्या में भाग ले रहे हैं। सभी स्थानों पर उपवास, बेले, तेले आदि तपस्याएँ चल रही हैं। श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा. के 27 जुलाई को 21 की तपस्या चल रही थी। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जोधपुर के कार्यकर्ता उत्साह के साथ सभी क्षेत्रों में आतिथ्य सत्कार एवं संघ-सेवा का लाभ ले रहे हैं।

विल्लुपुरम्-आचार्यप्रवर पूज्य 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा., महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा-4 'महावीर भवन' में चातुर्मासार्थ विराज रहे हैं। प्रतिदिन प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी, महिलाओं के लिए बोधकक्षा आदि गतिमान हैं। -के. महावीर अरेस्तवाल, सचिव

अमरावती-आचार्यप्रवर पूज्य 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी मधुरव्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा-4 का मंगलवार 13 जुलाई को गुजराती समाज स्थानक अम्बापेठ से बड़नेरा रोड़ स्थित स्थानक भवन में बिना पूर्व सूचना के प्रवेश हुआ। 17 जुलाई से प्रवचन निरन्तर गतिमान है तथा दोपहर में नन्दीसूत्र, कर्मग्रन्थ, 25 बोल आदि को सीखने-सिखाने का क्रम चल रहा है। एकाशन, आयम्बिल एवं तेले की लड़ी चल रही है। प्रत्येक रविवार को बच्चों के लिए संस्कार शिविर तथा श्रावक-श्राविकाओं के लिए सामूहिक दया, एकाशन, पाँच सामायिक आदि का विशाल आयोजन रखा गया है। चातुर्मास प्रारम्भ से ही स्थानीय श्रावक-श्राविकाओं में उत्साह एवं आनन्द की लहर व्याप्त है। -सुरेशचन्द मुण्गेत, सचिव

संघ का निवेदन : कोरोना में नियमों की पालना हो

आप सभी कोरोना की विषम परिस्थितियों में अवश्य ही सकुशल होंगे, ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है। वर्तमान में कोरोना की तीसरी लहर की आशंका जताई जा रही है, जिसके कारण सभी राज्यों ने अपनी-अपनी गाइडलाइन जारी कर दी है। हम सभी का यह परम कर्तव्य है कि हम सरकारी दिशा-निर्देशों की पूर्णतः पालना करें, जिससे हमार गुरु भगवन्त, हम स्वयं तथा हमारे परिवारजन स्वस्थ रह सकेंगे। चातुर्मास में साधना-आराधना के क्षेत्र में आगे अवश्य बढ़ें, परन्तु सजगता के साथ। एतदर्थ निवेदन है कि-

1. संघ द्वारा पूर्व में जारी गाइडलाइन का अवश्य पालन करें।
2. अपने-अपने क्षेत्र में जारी सरकारी गाइडलाइन को अच्छी तरह से अवलोकन कर उसकी पालना करें तथा करवाएँ।
3. चातुर्मास काल में सन्त-सतीवृन्द की सेवा में दर्शन-लाभ लेने हेतु आने से पूर्व वहाँ के स्थानीय संघ से सम्पर्क अवश्य करें ताकि वहाँ की परिस्थिति की जानकारी आपको प्राप्त हो सके।
4. चातुर्मास काल में आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों में सरकारी गाइडलाइन की अवश्यमेव पालना करवाएँ। किसी भी आयोजित कार्यक्रम का व्यक्तिगत प्रसार करें, परन्तु व्हाट्स एप्प और अन्य सोशल माध्यमों से आमन्त्रित करने का प्रचार न करें, जिससे भीड़-भाड़ की स्थिति न बने।
5. हमारी सजगता से ही हमारे महापुरुषों की साधना-आराधना निर्बाध रूप से चलेगी, यही मंगल कामना है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित धोवन पानी की उपयोगिता पर वेबिनार का आयोजन तथा प्रतियोगिता का परिणाम

जैन जगत् के आलोकमान भास्कर प्रातः स्मरणीय परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष के अवसर पर 'धोवन पानी की उपयोगिता' विषय पर वेबिनार का आयोजन जूम एप्प के माध्यम से 6 जून, 2021 को रखा गया, जिसमें प्रमुख वक्ता डॉ. जीवराजजी जैन-जमशेदपुर थे। धोवन-पानी का हमारे जीवन पर क्या प्रभाव होता है? जैनधर्म के शास्त्र में इसकी क्या व्याख्या है? खुला मञ्च रखा गया। जिसमें सभी सदस्यों ने प्रश्नों के माध्यम से अपनी जिज्ञासाएँ रखी और इसका समाधान डॉ. जीवराजजी जैन द्वारा किया गया। इस वेबिनार में श्राविका मण्डल की सदस्याओं सहित 654 सदस्यों ने भाग लिया। वेबिनार के दौरान ही धोवन पानी पर 18 वर्ष और इससे अधिक आयु वर्ग के लिए लाइव प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम रखा गया, जिसमें काफी सदस्यों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती मंजूजी भण्डारी ने इस वेबिनार पर सभी सदस्यों को धोवन-पानी की जानकारी तथा उसकी विशेषताएँ बताने हेतु डॉ. जीवराजजी जैन का विशेष हार्दिक आभार व्यक्त किया। डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन, कार्याध्यक्ष सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं प्रधान सम्पादक-जिनवाणी ने डॉ. जीवराजजी जैन का परिचय दिया।

श्राविका मण्डल की महासचिव श्रीमती अलकाजी दुधेड़िया-अजमेर द्वारा युवती मण्डल, जयपुर की अध्यक्ष श्रीमती विजेताजी लोढ़ा तथा सचिव श्रीमती संगीताजी लोढ़ा सहित समस्त सदस्यों, प्रतियोगिता में सहयोग प्रदान करने वाली श्राविकाओं तथा प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मण्डल, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर तथा चेन्नई शाखा अध्यक्ष श्रीमती संगीताजी बोहरा का अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल आभार व्यक्त किया। अखिल भारतीय

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा प्रतिभागियों को पारितोषिक बैंक के माध्यम से प्रेषित किया गया। इस प्रतियोगिता में शीर्ष स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागी इस प्रकार हैं:-

12 से 18 वर्ष की आयु में शीर्ष प्रतिभागी-1. हर्षिताजी चौधरी-मनिपाल-प्रथम 2500/-, 2. स्वर्णिमाजी जैन-द्वितीय 2000/-, 3. मितांशीजी बाफना-बालोद-तृतीय 1500/-

18 वर्ष से ऊपर की आयु में शीर्ष प्रतिभागी-1. मीनाजी चौधरी-भोपाल-प्रथम 2500/-, 2. मीनाक्षीजी गुगलिया-द्वितीय 2000/-, 3. शिपिका जैन-जयपुर-तृतीय 1500/-

आकर्षक विडियो में शीर्ष प्रतिभागी-वंशिकाजी जैन-जयपुर- 1000/-

सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागी (200/- प्रत्येक)-1. तनुजी जैन, 2. रिमझिमजी जैन, 3. दिव्याजी जैन-सवाईमाधोपुर, 4. अदितिजी जैन-सवाईमाधोपुर, 5. तनिषाजी जैन-सवाईमाधोपुर, 6. शर्मिलाजी कोठारी-अजमेर, 7. सुषमाजी सिंघवी-जोधपुर।

-अलका दुधेड़िया, महारसचिव, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल

मानसरोवर-जयपुर में 'संघ गरिमा एवं श्रावक कर्तव्य बोध' पर लघु शिविर का आयोजन

व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म. सा. आदि ठाणा के सान्निध्य एवं पावन प्रेरणा से रविवार 25 जुलाई को जयपुर के सभी उप नगरों के पदाधिकारियों का एक लघु शिविर आयोजित हुआ, जिसका विषय था- 'संघ गरिमा एवं श्रावक कर्तव्य बोध' जयपुर शहर एवं इसके उपनगरों के अनेक पदाधिकारी शिविर में पधारे। शिविर का शुभारम्भ स्वाध्याय शिक्षा के सम्पादक पण्डितजी श्री प्रकाशचन्द्रजी जैन ने मंगलाचरण एवं युवक परिषद् जयपुर के मन्त्री श्री प्रकाशजी लोढ़ा के संघ समुत्कीर्तन गीत से हुआ।

शिविर में कई वक्ताओं ने अपने-अपने वक्तव्यों में संघ कैसे उन्नत एवं गरिमामय बने, इस पर विचार रखे। श्री पदमचन्द्रजी गाँधी ने बताया कि संघीय संस्थाओं में पदाधिकारियों के चयन में पात्रता को महत्त्व दिया जाना चाहिए। संघ में पारदर्शिता, समन्वयता एवं श्रद्धा का भाव होना चाहिए। युवती मण्डल की मन्त्री श्रीमती संगीताजी लोढ़ा ने युवती मण्डल की प्रगति का परिचय देते हुए कहा कि मैत्री, विवेक, विनय, ज्ञान से संघ की गरिमा बनती है। संघ में मैत्री का भाव होना चाहिए। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ जयपुर के अध्यक्ष श्री प्रमोद जी महनोत ने संघ में कर्तव्यनिष्ठा, समर्पण, उदारता, सरलता की आवश्यकता का प्रतिपादन करते हुए अहमदाबाद के श्री पदमचन्द्रजी कोठारी का उदाहरण प्रस्तुत किया तथा कहा कि संघ में छोटे से छोटे कार्य करने के लिए भी कार्यकर्ता को तत्पर रहना चाहिए। संघ गुणों का समुद्र है। सुबोध शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री नवरतनमलजी कोठारी सा. ने संघ को सर्वोपरि बताते हुए इसके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने कहा कि मैं सारे संसार में घूमता हूँ, किन्तु ऐसे त्यागी सन्त एवं संघ का स्वरूप अन्यत्र नहीं देखा। जिनवाणी के प्रधान सम्पादक एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के कार्याध्यक्ष डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन ने बताया कि व्यक्तियों के समूह से समाज बनता है, जिसमें हम पारस्परिक व्यवहार करते हैं, किन्तु जब उस समूह में आध्यात्मिकता का प्राण होता है तो वह संघ बनता है। समाज में संघ का प्रभाव हो सकता है, लेकिन संघ पर समाज का प्रभाव नहीं रहना चाहिए। संघ में रहकर व्यक्ति गुणों का संवर्धन एवं धर्म का

आचरण करता है तथा आध्यात्मिकता में जीता है। प्रामाणिकता एवं नैतिकता के साथ संघ का संवर्धन हो। मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म. सा.ने अपने उद्बोधन में फरमाया कि यह संघ व्रतियों का होता है। संघ के बिना जिनकल्पी की भी मुक्ति सम्भव नहीं, इसलिए संघ का महत्त्व है। संघ एक के भरोसे नहीं चलता, पर एक पर भरोसा करने पर ही चलता है। संघ की महिमा पहले भी थी, आज भी है और आगे भी रहेगी। संघ को पैसे की नहीं, पसीने की जरूरत है। संघ त्याग से चलता है पैसों से नहीं। हम केवल मेज पर ही नहीं मैदान में भी मजबूत बनने का कार्य करें। संघ का कार्य है-करुणावान, उदार एवं सेवाभावी श्रावकों को जन्म देना। संघ की गरिमा एवं महिमा त्याग से ही है। निष्ठा और समर्पण से छोटे से छोटा कार्य भी संघोन्नति का कारण बन सकता है। उन्होंने संघ गरिमा के तीन सूत्र दिए-1. संघं सरणं गच्छामि, 2.अप्पाणं सरणं गच्छामि, 3. गुरुं सरणं गच्छामि। शिविर का सफल सञ्चालन एवं पधारे हुए सभी पदाधिकारियों का अभार श्री राजेंद्रजी जैन 'राजा' द्वारा प्रकट किया गया।

-धर्मचन्द्र जैन (पाटोली), मन्त्री-श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संस्था, किरण पथ, मानसरोवर, जयपुर

युवती मण्डल द्वारा विशेष संकल्पग्रहण एवं उसके बढ़ते कदम

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में श्री जैन रत्न युवती मण्डल, जयपुर द्वारा महावीर भवन, मानसरोवर में 'लर्निंग, मोटिवेशन एण्ड फन' विषय पर 26 जुलाई, 2021 को एक सत्र का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ, जिसमें लगभग 150 युवतियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

इस सत्र का सञ्चालन और युवती मण्डल का परिचय श्रीमती महकजी डागा ने दिया, इसके साथ ही आगामी कार्यक्रमों की सुन्दर भूमिका श्रीमती विजेताजी लोढ़ा ने प्रस्तुत की। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से की गई। तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने फरमाया कि आज जितनी भी धार्मिक क्रियाएँ हो रही हैं वे अधिकांशतः मिलावट वाली हो रही हैं। कहाँ गई हमारी आस्था, एकनिष्ठ श्रद्धा? बालाजी, भैरुजी, माताजी को मान रहे हो, कर्मसिद्धान्त पर विश्वास कहाँ? जिनवाणी पर श्रद्धा कहाँ?

सबसे पहले सुदेव, सुगुरु, सुधर्म को समझो और उसी में हमारा एकान्त विश्वास हो, उसी के बाद हमारी समस्त धार्मिक क्रियाएँ फलवती बनेंगी। महाराज साहब ने कच्चे पानी के त्याग के पीछे कई प्रभावशाली कारण गिनाए, जिन्हें सुनकर प्रभावित युवतियों ने एक स्वर में कच्चे पानी के त्याग के प्रत्याख्यान लिए। महाराज साहब ने संघसेवा एवं सन्त-सतियों के सान्निध्य की भी प्रबल प्रेरणा की। सत्र का समापन श्रीमती काजोलजी पुगलिया ने नवतत्त्व पर आधारित प्रतियोगिता करवाकर किया, सत्र के बाद लगभग 50 युवतियाँ मण्डल की नई सदस्य बनीं।

युवती मण्डल द्वारा आगामी आयोज्य कार्यक्रम इस प्रकार हैं-

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. के सान्निध्य में-(1) युवती मण्डल का उद्देश्य 'जैनधर्म की एक निशानी घर-घर में हो धोवन पानी' रविवार, 8 अगस्त (2) अविवाहित लड़कियों का दो दिवसीय शिविर (स्मार्ट गर्ल्स) 28-29 अगस्त (3) नवतत्त्व पर सप्त दिवसीय शिविर (युवतियों के लिए)।

व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में-(1) युवक एवं युवतियों के लिए प्रत्येक मंगलवार और बुधवार को प्रातः 8.15 से 9.15 बजे तक विशेष कक्षा (उपासकदशाङ्गसूत्र के माध्यम से श्रावक-जीवन जीने की शैली) (2) एक दिवसीय प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (25 बोल और सामायिक पर आधारित)

-संगीता लोढ़ा, मन्त्री

जयपुर में उच्च अध्ययन हेतु छात्रों को सुनहरा अवसर आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (सिद्धान्त-शाला) में वर्ष 2021 के प्रवेश हेतु रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ

नैतिक-आध्यात्मिक संस्कारों के साथ जयपुर में रहकर उच्च शैक्षणिक अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों हेतु संस्थान में प्रवेश के लिए रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ हो गया है। कक्षा 7वीं से 12वीं एवं स्नातक प्रथम वर्ष के छात्र संस्थान में प्रवेश हेतु आवेदन कर सकते हैं। संस्थान में विद्यार्थियों के लिए उचित आवास-भोजन व्यवस्था के साथ, कम्प्यूटरशिक्षण, इंग्लिशस्पीकिंग क्लासेज, सेमिनार एवं मोटिवेशनल कक्षाएँ आयोजित होती रहती हैं। शैक्षणिक अध्ययन के साथ संस्थान द्वारा निर्धारित धार्मिक पाठ्यक्रम का अध्ययन भी संस्थान में करवाया जाता है। जो छात्र संस्कारित एवं अनुशासित रहकर अध्ययन करना चाहते हैं वे रजिस्ट्रेशन के लिए सम्पर्क करें।

नोट-रजिस्ट्रेशन फार्म रत्नसंघ की वेबसाइट ratansangh.com पर जाकर About us option पर click कर आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के पेज से डाउनलोड किया जा सकता है अथवा हमारे फेसबुक <https://www.facebook.com/profile.php?id=100011420126008> से भी जुड़कर अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी एवं रजिस्ट्रेशन हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य, ए-9 महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर-302015 फोन न. 0141-2710946, 94614-56489, 79762-46596

बालिकाओं के लिए श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (छात्रावास), जयपुर में प्रवेश प्रारम्भ

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा सञ्चालित श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान (छात्रावास) में प्रवेश हेतु सत्र 2021-22 के लिए आवेदन-पत्र आमन्त्रित हैं। बालिकाओं के लिए छात्रावास में रहने व भोजन की व्यवस्था उपलब्ध है। बालिकाएँ संस्कार निर्माण, धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ व्यावहारिक अध्ययन भी कर सकती हैं। कक्षा 7वीं से 12वीं एवं स्नातक प्रथम वर्ष में अध्ययन करने की इच्छुक बालिकाएँ आवेदन कर सकती हैं। प्राप्त आवेदन पत्रों में से प्रवेश के लिए चयनित छात्राओं का साक्षात्कार लिया जायेगा। छात्रावास में उन्हीं बालिकाओं को प्रवेश हेतु प्राथमिकता प्रदान की जायेगी जो शैक्षणिक स्तर पर अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हों। आवेदन करते हुए स्वयं का नाम, पिता का नाम, पत्राचार का पूर्ण पता, मोबाइल नं., जन्मतिथि, किस जैन संघ से सम्बन्धित, पिछली तीन कक्षाओं का परिणाम एवं पारिवारिक वार्षिक आय का विवरण दें।

संस्थान में प्रवेश पाने वाली बालिकाओं को पूर्ण अनुशासन एवं संस्थान द्वारा निर्धारित नियमावली का पालन करना अनिवार्य है। बालिकाओं की सुरक्षा की पूरी व्यवस्था उपलब्ध है। आवेदन भेजने का पता:- अधिष्ठाता-श्रीमती मंजूजी जैन, श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, 12/251 के सामने, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर-302020 (राज.) मोबाइल 9413019982 Email : sjratangirlssansthan@gmail.com

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान में दस दिवसीय आध्यात्मिक ज्ञान-ध्यान साधना शिविर सम्पन्न

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान जयपुर में अध्ययनरत छात्रों के अवकाश का सदुपयोग हो सके, ज्ञान-ध्यान सीखने में आगे बढ़ सकें, इस उद्देश्य से 21 से 30 जून, 2021 तक शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के चयनित 18 विद्यार्थियों ने भाग लिया। प्रातः 5.00 बजे से रात्रि 9.30 तक व्यवस्थित दिनचर्या के अनुसार विशिष्ट अध्यापकों द्वारा अध्यापन करवाया गया।

श्री प्रकाशचन्दजी जैन द्वारा जैनधर्म के इतिहास का अध्ययन सरल-सहज रूप में कथा एवं प्रसङ्गों के जरिये

कराया गया। 47 बोल की बंधी श्री धर्मेन्द्रजी जैन द्वारा बहुत ही प्रभावी रूप से समझायी गई। श्री जिनेन्द्रजी जैन ने कर्मप्रकृति, कर्मग्रन्थ 1-2 का संक्षिप्त और रुचिकर अध्यापन करवाया। श्री त्रिलोकचन्द्रजी जैन ने आगम परिचय एवं उत्तराध्ययनसूत्र के 29वें अध्ययन के कुछ सूत्रों का ज्ञानार्जन करवाया। श्री राकेशजी जैन ने नवतत्त्व के स्वरूप का अध्यापन करवाया। शिविर के एक सत्र में डॉ. धर्मचन्द्रजी जैन 'अच्छे कैसे बनें' विषय पर विद्यार्थियों से रूबरू हुए एवं उन्हें अपने में विशेषता लाने हेतु प्रेरित किया। श्री निपुणजी डागा ने भी शिविरार्थियों को 'कैसे अपनी बात को प्रजेंट करें' इस विषय पर शानदार कक्षा ली, श्री धर्मेन्द्रजी जैन सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक ने भी संस्कृत प्राकृत भाषा में रुचि विषयक बातें बताई एवं अपने प्रेरणास्पद अनुभव साझा किये। श्री महावीरजी जैन 'त्यागी' ने भी अपने जीवन के अनेक प्रेरणास्पद किस्से सुनाकर छात्रों को दया, करुणा स्वावलम्बी शिक्षा के स्वरूप को साझा किया।

संस्थान की संयोजक श्रीमती सुमनजी कोठारी ने सम्पूर्ण शिविर को डिजाइन किया और उनके निर्देशन में सुन्दर तरीके से शिविर अवनरत चला। साथ ही प्रतिदिन प्रातःकालीन सत्र में वीतराग ध्यानसाधना का अभ्यास छात्रों को करवाया गया तथा अध्यात्म क्षेत्र में बढ़ने की विशिष्ट प्रेरणा प्रदान की। श्री दिलीपजीजैन 'प्राचार्य' शिक्षण संस्थान ने प्रातःकालीन सामायिक आराधना, तत्त्वार्थसूत्र के 1-2 अध्ययन के चयनितसूत्रों का अध्यापन एवं आगम थोकड़े सम्बन्धी कुछ बातें बताकर विशिष्ट कक्षाएँ ली। जयपुर में विराजित सन्तों की सेवा का छात्रों ने दो दिन लाभ लिया। मधुरव्याख्यान श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा-3 के दर्शन-वन्दन के साथ सन्तों द्वारा विशिष्ट विषयों पर छात्रों को उपदेश दिया गया और अध्यात्म के मार्ग में आगे कैसे बढ़ें, इसकी प्रेरणा दी गई। भीषण गर्मी में छात्रों द्वारा चौविहार उपवास, आयम्बिल, रात्रिकालीन संवर एवं स्नान आदि त्याग के पचचक्राण भी किये गये।

शिविर के अन्तिम दिन 30 जून को समापन-समारोह के अवसर पर आदरणीय कैलाशचन्द्रजी हीरावत सभी छात्रों से मुखातिब हुए एवं सबसे क्या सीखा, कैसा अनुभव रहा, इस सम्बन्ध में बात भी की, साथ ही जीवन में प्रामाणिकता और संस्कारों में अभिवर्द्धन होता रहे ऐसी प्रेरणा दी। समारोह में हीरावत सा. के अलावा संस्थान पूर्व छात्र परिषद् के निवर्तमान अध्यक्ष श्री गौतमचन्द्रजी जैन, मानद सचिव श्री अशोकजी जैन, वर्तमान सचिव श्री सुशीलजी जैन भी उपस्थित हुए, साथ ही सुश्रावक श्री विनयजी कोठारी भी इस अवसर पर पधारे। श्री गौतमचन्द्रजी जैन, सुशीलजी एवं अशोकजी जैन ने भी इस अवसर पर छात्रों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दी।

श्री ज्ञानचन्द्रजी कोठारी, श्रीविनयजी-श्रीमती सुमनजी कोठारी की ओर से अध्यापकों एवं छात्रों को स्मृति चिह्न प्रदान किये गए। संस्थान संयोजक श्रीमती सुमनजी कोठारी ने सभी का आभार व्यक्त किया एवं भविष्य में भी जल्द ही ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने की बात कही।

विद्यार्थियों के जीवन-निर्माण में बनें सहयोगी छात्र संरक्षण- संवर्द्धन-पोषण योजना (प्रतिवर्ष एक छात्र के लिए रुपये 24,000 सहयोग की अपील)

आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, (सिद्धान्त शाला) जयपुर, संघ व समाज के प्रतिभाशाली छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए वर्ष 1973 से सञ्चालित संस्था है। इस संस्था से अब तक सैकड़ों विद्यार्थी अध्ययन कर प्रशासकीय, राजकीय एवं प्रोफेशनल क्षेत्र में कार्यरत हैं। बहुत छात्र व्यवसायिक क्षेत्रों में सेवारत हैं। समय-समय पर ये संघ-समाजसेवी कार्यों में निरन्तर अपनी सेवाएँ भी प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में भी यहाँ अध्ययनरत विद्यार्थियों को धार्मिक-नैतिक संस्कारों सहित छात्रों को उच्च अध्ययन के लिए उचित आवास-भोजन की निःशुल्क

व्यवस्थाएँ प्रदान की जाती है। व्यावहारिक अध्ययन के साथ छात्रों को धार्मिक अध्ययन की व्यवस्था भी संस्था द्वारा की जाती है। वर्तमान में संस्थान में 71 विद्यार्थियों के लिए अध्ययनानुकूल व्यवस्थाएँ हैं। संस्था को सुचारू रूप से चलाने एवं इन बालकों के लिए समुचित अध्ययनानुकूल व्यवस्था में आप-सबका सहयोग अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि छात्रों के जीवन-निर्माण के इस पुनीत कार्य में बालकों के संरक्षण-संवर्द्धन-पोषण में सहयोगी बनें।

इस योजना में सहयोगी बनने वाले महानुभावों के नाम जिनवाणी में प्रकाशित किये जावेंगे। इस योजना में आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान के पूर्व छात्र परिषद् के सदस्यों द्वारा अर्थसहयोग प्रारम्भ किया गया है-

- | | |
|--|----------|
| 1. श्री श्रीपालजी देशलहरा, हैदराबाद | 24,000/- |
| 2. श्री पारसमलजी जैन (सीए), मुम्बई | 24,000/- |
| 3. डॉ. धर्मचन्दजीजैन (सेवानिवृत्त प्रोफेसर) महारानी फॉर्म, जयपुर | 24,000/- |
| 4. श्री सुशीलकुमारजी जैन (व्याख्याता) प्रतापनगर, जयपुर | 24,000/- |
| 5. श्री प्रकाशजी पारख (राजकीय अध्यापक), धनारी कला-जोधपुर, | 12000/- |

आप द्वारा दिया गया आर्थिक सहयोग 80जी धारा के तहत कर मुक्त होगा। आप यदि सीधे बैंक खाते में सहयोग कर रहे हैं तो चेक की कॉपी, ट्रॉजैक्शनस्लीप अथवा जानकारी हमें अवश्य भेजे।

खाते का विवरण:-NAME : GAJENDRA CHARITABLE TRUST, Account Type : Saving, Account Number : 10332191006750, Bank Name : Punjab National Bank, Branch : Khadi Board, Bajaj Nagar, Jaipur, Ifsc Code : PUNB0103310, Micr Code : 302022011, Customer ID : 35288297

निवेदक : डॉ. प्रेमसिंह लोढ़ा (व्यवस्थापक), सुमन कोठारी (संयोजक), अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें-दिलीप जैन 'प्राचार्य' 9461456489, 7976246596

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ की नवीन कार्यकारिणी

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ कतिपय वर्षों से सक्रिय है। इस संघ की नवीन कार्यकारिणी में जिनवाणी पत्रिका के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन को वरिष्ठ उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया है। सम्पूर्ण कार्यकारिणी इस प्रकार है-

परम संरक्षक :: (1) श्री प्रदीपजी जैन-पी.एन.सी., आगरा (2) डॉ. मणीन्द्रजी जैन, दिल्ली। **संरक्षक (पूर्व अध्यक्ष) ::** (1) श्री कपूरचन्दजी पाटनी-गोहाटी, (2) श्री (डॉ.) चिरंजीलालजी बगड़ा-कोलकाता, (3) श्री रवीन्द्रजी मालव-ग्वालियर। **बोर्ड ऑफ डायरेक्टर ::** (1) श्री प्रकाशजी मोदी, पारस चैनल, भाटापारा (2) श्री पुनीतजी जैन, टाइम्स ऑफ इण्डिया (3) श्री अनिल पारसदासजी जैन, दिगम्बर जैन परिषद् (4) श्री ललित सरावगी-कोलकाता (5) श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य', झाँसी (6) डॉ. सुशीला पाटनी-जयपुर। **न्यासीगण ::** (1) श्री मिलापचन्दजी इण्डिया (2) श्री महेन्द्र कुमारजी पाटनी (3) डॉ. एन. के. खींचा (4) डॉ. राजेन्द्र बंसल (5) डॉ. अखिल बंसल। **कार्यकारिणी ::** (1) अध्यक्ष-श्री शैलेन्द्रजी जैन एडवोकेट, अलीगढ़ (उप्र.) (2) कार्याध्यक्ष-डॉ. सुरेन्द्रजी भारती, बुरहानपुर (मप्र.) (3) वरिष्ठ उपाध्यक्ष-डॉ. धर्मचन्दजी जैन, जयपुर (राज.) (4) डॉ. जयकुमारजी जैन, मुजफ्फरनगर (उप्र.) (5) श्री प्रदीपजी जैन, रायपुर (छत्तीसगढ़), (6) महामन्त्री-डॉ. अखिलजी बंसल, जयपुर (राज.) (7) संयुक्तमन्त्री-श्री दिनेशजी दगड़ा, कोलकाता (पश्चिम बंगाल), (8) मन्त्री-डॉ. राजीवजी प्रचण्डिया, अलीगढ़ (उप्र.) (9) शोधप्रभारी-डॉ. बी. एल. सेठी, जयपुर (राज.), (10)

शिक्षा मन्त्री-डॉ. विकासजी जैन, बानपुर (उप्र.), (11) संगठन मन्त्री-श्री अंकितजी जैन 'प्रिंस', दिल्ली, (12) सांस्कृतिक मन्त्री-डॉ. संगीता बिनायका, इन्दौर (मप्र.), (13) मीडिया प्रभारी-श्री पारसजी जैन 'पार्श्वमणि', कोटा (राज.), (14) प्रचार मन्त्री-डॉ. अल्पनाजी जैन, देवलाली (महा.), (15) सह-प्रचार मन्त्री-श्री मयंकजी जैन, अलीगढ़ (उप्र.) (16) कोषाध्यक्ष-श्री महेन्द्रजी पाटनी, जयपुर (राज.) (17) राष्ट्रीय प्रवक्ता-डॉ. संजीव भानावत, जयपुर (राज.) (18) श्री अनूपचन्द्रजी एडवोकेट, फिरोजाबाद (उप्र.) (19) सदस्य-डॉ. सुशीलाजी सालगिया, इन्दौर (मप्र.) (20) डॉ. ज्योतिजी जैन, खतौली (उप्र.) (21) डॉ. मीनाजी जैन, उदयपुर (राज.) (22) श्री अनुरागजी जैन, अजमेर (राज.) (23) श्री राहुलजी जैन 'आज तक', नोयडा (उप्र.) (24) श्री जगदीशजी जैन, आगरा (उप्र.) (25) श्री संदीपजी जैन, बड़ागाँव (मप्र.) (26) श्री जिनेशजी कोठिया, दिल्ली (27) श्री चैतन्यजी जैन, अहमदाबाद (गुज.) (28) श्री सचिनजी जैन सत्यार्थी मीडिया, टूण्डला (उप्र.) (29) श्री कमलजी जैन 'अनोखा' बड़ौत (उप्र.) (30) श्री सचिनजी जैन, बड़ौत (उप्र.) (31) श्री प्रवीणजी जैन, दै. विश्व परिवार, झाँसी (उप्र.) प्रदेश संयोजक मनोनीत-1. डॉ. ऋषभजी फौजदार-बिहार, 2. डॉ. संजीवजी गोधा-राजस्थान, 3. श्री किशोरभाईजी भण्डारी-महाराष्ट्र, 4. श्री शान्तिनाथजी होसपेट-कर्नाटक, 5. श्री शैलेष कापड़िया-गुजरात, 6. श्री हेमन्तजी जैन-मध्यप्रदेश, 7. श्री शैलेन्द्रजी जैन-उत्तरप्रदेश, 8. श्रीमती पारुलजी जैन-दिल्ली, 9. श्रीमती अनुमाजी जैन-पश्चिमबंगाल, 10. श्रीमती रुचिजी जैन चोविश्या-तेलंगाना। सभी को हार्दिक बधाई।

स्वाध्याय हेतु निःशुल्क पुस्तकें उपलब्ध

श्रावकरत्न श्री जेठमलजी गुलेचा द्वारा संकलित-सम्पादित निम्नाङ्कित पुस्तकें पुस्तकालयों, स्वाध्यायियों एवं जिज्ञासुओं हेतु निःशुल्क उपलब्ध हैं। पुस्तकों का स्वाध्याय ही उनका मूल्य है। पुस्तकों की सूची निम्नानुसार है-

1. पंच परमेष्ठिसूत्र 2. जैन कर्म सिद्धान्त भाग-1, 3. जैन कर्म सिद्धान्त भाग-2, 4. आवश्यकदर्शन 5. चतुर्विंशतिस्तवसूत्र (लोगस का पाठ) 6. भावधारा, आभामण्डल व तेजोलेश्या 7. कायोत्सर्ग 8. प्रत्याख्यानसूत्र 9. सम्यक्त्व 10. स्वप्न दर्शन : एक चिन्तन 11. स्वयंबुद्ध, प्रत्येक बुद्ध बोधित केवली 12. आगम वचन 13. महत्त्वपूर्ण ज्ञातव्य 14. काल लोक वर्णन 15. जीव पुद्गल कर्म चक्र 16. मोहनीय कर्म 17. आलोचना पद व आत्म चिन्तन 18. श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र (प्राकृत और भावार्थ सहित) 19. गुणस्थान स्वरूप (प्रथम) 20. बड़ी साधु वन्दना 21. संलेखना संधारा 22. श्री नवकार महामन्त्र माहात्म्य (श्रीपाल चारित्र) 23. आत्मा ही परमात्मा है (भाग 1-2) 24. 18 पाप व 9 पुण्य 25. आगम में क्रिया व कर्म सिद्धान्त 26. आगम में लेश्या पद 27. आगम में 22 परीषह 28. आगम कहानियाँ 29. भविष्यदत्त चारित्र 30. आगम में तप (निर्जरा) 31. दर्शन और चारित्र-मोहनीय कर्म 32. णमोत्थुणंसूत्र (प्रणिपात सूत्र-सिद्ध-स्तुति का पाठ) 33. दुर्लभ मनुष्य भव भाग-1 34. दुर्लभ मनुष्य भव भाग-2 35. महत्त्वपूर्ण ज्ञातव्य भाग 1-2 36. श्री सिद्ध स्तुति 37. आध्यात्मिक शुभ भावनाएँ 38. जैनधर्म में मन के विविध आयाम भाग 1-2 39. व्यवहार सम्यक्त्व के लक्षण और आगम कहानियाँ 30. आत्मा के सन्दर्भ : परिणति और परिणाम 41. आगम मुक्ता : एक दृष्टि 42. मैं अजर अमर सचेतन 'आत्मा' हूँ भाग 1-2 43. आलोचना पाठ व आत्म चिन्तन (आवश्यक दर्शन एवं संलेखना-संधारा) 44. नित्य चिन्तन भावना। पुस्तक प्राप्ति का सम्पर्क सूत्र-श्री मूलचन्द्रजी गुलेचा, 269, सरदारपुरा, 4 बी रोड़, जोधपुर-342001 (राज.) मो. 09351315749, 09314712919

संक्षिप्त समाचार

बीकानेर-श्री अग्रचन्द भैरोदान सेठिया जैन पारमार्थिक संस्था के सह-संस्थापक भामाशाह सेठ स्व. जेठमलजी सेठिया के 125वें जन्म दिवस के उपलक्ष में सेठिया परिवार के सदस्यों ने स्व. श्री जेठमलजी सेठिया की याद को चिर-स्मरणीय बनाये रखने के लिए 'जेठमल सेठिया प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र' का शुभारम्भ 2 जुलाई, 2021 को किया। चिकित्सा केन्द्र का शुभारम्भ समाज की वरिष्ठ श्राविका श्रीमती चाँददेवीजी बैद ने किया। वर्तमान में इस केन्द्र पर शुगर, ब्लड प्रेशर और फस्ट ऐड सेवा को चालु किया गया और साथ में आधुनिक उपकरणों के साथ एक बैड लगाया गया है। भविष्य में सभी परिवार के सदस्यों की राय से इसको और नये आयाम देने का प्रयास किया जाएगा।

-शान्तिलाल सेठिया, मन्त्री

बधाई

चेन्नई-मद्रास विश्वविद्यालय जैन विद्या विभाग की शोधार्थी शर्मिला सोलंकी को 'कम्परेटिव स्टडी ऑफ जैन वे ऑफ लिविंग एंड नेचुरोपैथी' अध्ययन विषय पर 'पीएचडी' उपाधि प्रदान की गई। आपने अपना शोध कार्य, जैन विद्या की विभागाध्यक्ष डॉ. प्रियदर्शनाजी जैन के कुशल दिशा-निर्देशन में सम्पन्न किया।



श्रद्धाञ्जलि

बारणी खुर्द-धर्मनिष्ठ वीरपिता सुश्रावक श्री मंगलसिंहजी भाटी का 12 जुलाई, 2021 को देहावसान हो गया। धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहने वाले आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। आपके चेहरे पर सदा शान्ति-सौम्यता झलकती रहती थी। केवल आप ही नहीं सम्पूर्ण भाटी परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। सन्त-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों की आतिथ्य-सत्कार में भाटी परिवार सदैव तत्पर है। आप सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा. के सांसारिक पिताश्री थे। आप समय-समय पर गुरु भवन्तों के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ प्राप्त करने में अग्रणी रहते थे।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्री प्रियंकाजी बाफना सुपुत्री स्व. श्री नवरतनजी सुपौत्री स्व. पुखराजजी बाफणा (बोरून्दा वाले) का 30 जून, 2021 को देहावसान हो गया। विविध गुणों से युक्त प्रियंकाजी बाफना का जीवन संघ और समाज सेवा में समर्पित रहा था। सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। चेन्नई पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की आहार-विहार सेवा में आप सदैव तत्पर रहती थीं। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी बाफना परिवार सदैव समर्पित है। रत्नसंघ द्वारा सञ्चालित सभी प्रवृत्तियों में बाफना परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है। आप रत्नसंघीय महासती श्री शशिकलाजी म.सा. की सांसारिक भतीजी थीं।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका तपस्वीरत्ना श्रीमती सुवाबाईजी धर्मसहायिका श्री माँगीलालजी बोहरा का 13 मई, 2021 को स्वर्गवास हो गया। आपने अपने जीवन काल में 55, 45, 31 (मासक्षण), पन्द्रह, ग्यारह, नौ, अठाई, पचोले आदि अनेक तपस्याएँ की। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री



हस्तीमलजी म.सा. के पीपाइसिटी चातुर्मास में मासक्षण, आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 2005 के चेन्नई चातुर्मास में 30, आज्ञानुवर्तिनी तपस्विनी महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. के आवड़ी-चेन्नई 2013 के चातुर्मास में 55 उपवास की दीर्घ तपस्या की आध्यात्मिक भेंट दी। आप अपने पीछे दो सुपुत्र श्री महावीरजी, विनोदजी एवं दो सुपुत्रियाँ पुष्पाबाईजी, रेखाजी और पौत्र-पौत्रियों, दौहित्र-दौहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-आर. नरेन्द्र कांकरिया

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती विमलाबाईजी धर्मसहायिका श्री झूमरलालजी बोहरा का 9 मई, 2021 को स्वर्गवास हो गया। आपने अपने जीवनकाल में वर्ष 1994 में मासखमण तप के साथ पन्द्रह, ग्यारह, नौ, अठाई, पचोले आदि की अनेक तपस्याएँ की। जीवन का अधिकांश समय सन्त-सतीवृन्द की सेवा में व्यतीत कर जीवन को धन्य बनाया। सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपने वर्ष 1994 में शीलवद्र के प्रत्याख्यान लिये थे। आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा के आवड़ी चातुर्मास 2013 में आपने पन्द्रह उपवास की तपस्या की। आप अपने पीछे संस्कारवान सुपुत्रों श्री राजकुमारजी, सज्जनजी, सन्तोषजी, अरिहन्तजी एवं पुत्रवधुओं, पौत्र-पौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-आर. नरेन्द्र कांकरिया

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती पुष्पादेवीजी धर्मपत्नी श्री कान्तिलालजी कर्णावट का 15 जुलाई, 2021 को देहावसान हो गया। सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपका जीवन सरलता, मधुरता, उदारता आदि सद्गुणों से युक्त था। आप नियमित सामायिक-स्वाध्याय करने वाली चिन्तनशील श्राविका थी। चेन्नई पधारने वाले सन्त-सतीवृन्द की आहार-विहार सेवा में आप सदैव तत्पर रहती थी। व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई पधारने पर आप सहित समस्त कर्णावट परिवार ने सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्माराधना के साथ आतिथ्य-सेवा का लाभ प्राप्त किया था। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी कर्णावट परिवार सदैव समर्पित रहा है।

-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जयपुर-धर्मनिष्ठ, सन्तसेवी, तपस्वीरत्न सुश्रावक श्री प्रकाशचन्दजी सुपुत्र स्व. दीपचन्दजी ढङ्गा का 24 जुलाई, 2021 को संथारापूर्वक समाधिमरण हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। धर्मनिष्ठ, कर्तव्य परायण, कर्मठ सेवाभावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप सामायिक-स्वाध्याय के साथ संवर, दया की साधना करते रहते थे। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., पण्डित रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा., साध्वी प्रमुखा महासती तेजकँवरजी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ के समर्पित वरिष्ठ परिवारों में से एक है। आप रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सदैव सक्रिय रहते थे।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री

चेन्नई-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती वसन्ताकँवरजी धर्मपत्नी श्री लालचन्दजी नाहर पुत्रवधू स्व. श्री धरमचन्दजी नाहर (कोसाणा वाले) का 30 जून, 2021 को 54 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप शान्त स्वभावी एवं धार्मिक प्रवृत्ति की श्राविका थी। आपका सम्पूर्ण परिवार आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं सन्त-सतीवृन्द के प्रति अगाध श्रद्धा रखता है। आप अपने पीछे दो सुपुत्र और तीन सुपुत्रियों सहित संस्कारवान् परिवार छोड़कर गयी है।

-श्रद्धा जैन

अजमेर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री अशोककुमारजी सुपुत्र स्व. जीतमलजी कटारिया (सेण्ट्रल बैंक वाले) का 4 जुलाई, 2021 को 64 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आपका पूरा परिवार रत्नसंघ की सेवा में सन्नद्ध है। प्रार्थना, माला, सामायिक-स्वाध्याय आपके जीवन के अनमोल रत्न थे। आप गुरु दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ लेकर प्रसन्न होते थे। आपने समभाव का जीवन जिया। आप सरल स्वभावी, मितभाषी, सेवाभावी और उदारमना श्रावक थे। आप जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका के नियमित पाठक थे। आपके लघु सुपुत्र श्री अभिनवजी सदैव विहार सेवा के लिए तत्पर रहते हैं।



-चन्द्रप्रकाश कटारिया, मन्त्री

अजमेर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रविन्द्र कुमारजी भण्डारी का कोरोना महामारी से जीवन का संघर्ष करते हुए 25 मई, 2021 को देहावसान हो गया। आपके भाई श्री हेमन्तजी भण्डारी ने आपकी भरपूर सेवा की और स्वयं भी कोरोना की चपेट में आ गये। श्री हेमन्तजी अब पूर्ण स्वस्थ हैं।

-चन्द्रप्रकाश कटारिया, मन्त्री

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री पारसचन्द्रजी जैन का 66 वर्ष की वय में 27 अप्रैल, 2021 को देवलोकगमन हो गया है। आप बहुत ही सरल स्वभावी, शान्तचित्त, मृदुल स्वभावी, सात्त्विक विचारों वाले श्रावक थे। आप नियमित रूप से स्वाध्याय किया करते थे और साधु-साध्वी तथा संघ की सेवा में सदैव तत्पर रहा करते थे। आप पिछले 25 वर्ष से त्रिवेणी नगर संघ के अध्यक्ष रहे एवं जयपुर पोरवाल समाज के मन्त्री पद को कई वर्षों तक सुशोभित किया। आपने प्रारम्भ में जिनवाणी कार्यालय में अपनी सेवाएँ प्रदान की तथा आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के पास लेखन कार्य किया। आपके अक्षर मोती जैसे थे जो उन्हें बहुत पसन्द थे। आप सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के सहमन्त्री एवं सुबोध शिक्षा समिति के अन्तर्गत सञ्चालित सुबोध बालिका विद्यालय, जयपुर के संयोजक पद को भी सुशोभित कर चुके थे। आप अपने पीछे धर्मसहायिका श्रीमती शकुन्तलाजी, सुपुत्र श्री अंकितजी-सान्याजी जैन, सुपुत्री श्रीमती पल्लवीजी-विनीतजी जैन सहित धर्मभावना एवं समाज सेवा में तत्पर परिवार छोड़कर गए हैं।



-प्रकाशचन्द्र जैन 'प्राचार्य', जयपुर

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री नवीनजी सुपुत्र स्व. श्री निर्मल कुमारजी जैन का 21 जुलाई, 2021 को 51 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप महालेखाकार कार्यालय जयपुर में सहायक लेखाधिकारी के पद पर कार्यरत थे। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहने वाले, आपका जीवन अनेक सद्गुणों से ओतप्रोत था। आप प्रतिवर्ष सपरिवार गुरु भगवन्त के दर्शनार्थ-वन्दनार्थ जाते थे। आपने सह जोड़े तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से शीलव्रत अङ्गीकार किया। आपकी धर्मसहायिका ने आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 2012 के चातुर्मास में मासखमण की तपस्या की। आपके साले श्री राहुलजी भरतपुर-जयपुर में संघ एवं संघीय संस्थाओं में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में आपका परिवार सदैव तत्पर रहा है। आप अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती भावनाजी, सुपुत्र श्री अभिषेकजी एवं सुपुत्री अभिलाषाजी जैन सहित संस्कारित परिवार छोड़कर गये हैं।



-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जयपुर-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती मल्लिकाजी धर्मसहायिका श्री अमितजी पुत्रवधू श्री आमप्रकाशजी-पुष्पादेवीजी कर्णावट (नागौर निवासी) का 11 मई, 2021 को 39 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। आप मिलनसार, सरलमना श्राविका थी। आप अपने जीवन में चुनौतियों का सामना करते हुए धार्मिक संस्कारों में सदैव सहयोग प्रदान किया। आप तपस्या, सामायिक, स्वाध्याय में हमेशा अग्रणी रहती थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।



-प्रमोद कर्णावट

मण्डावर-सन्तसेवी श्रद्धा निष्ठ सुश्रावक श्री महेन्द्र कुमारजी सुपुत्र श्री ऋषभचन्दजी जैन का 11 जून, 2021 को देहावसान हो गया। आपका जीवन सहज, सरल, सादगी से परिपूर्ण था। धर्मनिष्ठ, कर्तव्य परायण, कर्मठ सेवा-भावना, स्वधर्मी वात्सल्य, विनम्रता आदि अनेक गुणों से आपका जीवन ओतप्रोत था। आप देव-गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्णतः समर्पित रहे तथा सन्त-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। समय-समय पर आचार्य भगवन्त के प्रवचनों का संकलन करने की भी आपकी अभिरुचि थी। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करने के साथ व्रत-नियमों का पालन करते थे तथा संघ-सेवा के लिए सदैव तत्पर रहते थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।



-दीपक जैन

नागौर-धर्मनिष्ठ-श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती गोटाकँवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री उम्मेदमलजी सुराणा का 24 जून, 2021 को देहावसान हो गया। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहने वाली आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सदगुणों से ओतप्रोत था। आपके दोनों सुपुत्र श्री गौतमचन्दजी, कमलचन्दजी सुराणा संघ में सक्रिय रूप से सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। संघ-सेवा, समाज-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य, आतिथ्य-सत्कार में एवं रत्नसंघ द्वारा सञ्चालित सभी गतिविधियों में सुराणा परिवार का महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता रहा है।



-धनपत सेठिया, महामन्त्री

जोधपुर-धर्मनिष्ठ, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री नरेन्द्रराजजी सुपुत्र स्व. श्री चन्दनराजजी मेहता का 28 मई, 2021 को स्वर्गवास हो गया। आप सदैव तन, मन, धन से संघ-सेवा में अग्रणी रहे हैं। आप सामायिक-साधना करते थे एवं सन्त-सतियों के दर्शन-वन्दन का लाभ लेते रहते थे। धार्मिक संस्कारों के प्रति जागरूक सन्त-सतीवृन्द की सेवा में तत्पर रहने वाले आपका जीवन सरलता, मधुरता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सदगुणों से ओतप्रोत था।



-धीरज डोस्री

जयपुर-सेवाभावी धर्मनिष्ठ श्रावकरत्न श्री पूनमचन्दजी जैन सुपुत्र शिक्षाविद् श्री रतनलालजी जैन (खेजड़ा वालों) का 04 जुलाई, 2021 को 63 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आप 38 वर्ष की राजकीय सेवा प्रामाणिकता, कर्तव्यनिष्ठा के साथ पूर्ण कर लेखाधिकारी पद से सेवानिवृत्त हुए। आपकी सभी सन्त-सतियों के दर्शन-मंगल, जिनवाणी श्रवण की भावना रहती थी। आपने अखिल भारतीय साधुमार्गी जैनसंघ के सक्रिय सदस्य रहने के साथ सवाईमाधोपुर शाखा के अध्यक्ष के रूप में महनीय सेवाएँ प्रदान कीं। धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों में आप उत्साहपूर्वक भाग लेते थे। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती संगीताजी, सुपुत्र श्री प्रवेशजी एवं सुपुत्री किरणजी का धर्मानुराग अच्छा है। आपके साधना-आराधना का क्रम नियमित था। पूज्य आचार्यप्रवर एवं सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी असीम श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।



-रवि जैन, आलनपुर वाले

बेंगलोर-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री हंसमुखलालजी सुपुत्र स्व. श्री रतनलालजी-जतनकँवरजी रांका (बड़लू-भोपालगढ़ वाले) का 21 जुलाई, 2021 को स्वर्गगमन हो गया। आप सन्त-सतीवृन्द के प्रति निष्ठावान थे। 'गुरु एक सेवा अनेक' का गुण आपकी रग-रग में भरा था। आप जुझारु व्यक्तित्व के धनी और श्री कमलकिशोरजी रांका के अनुज भ्राता थे। चातुर्मास में गुरुभक्ति करना, सेवा करना आपका गुण था। रत्नसंघ बेंगलोर के आप सक्रिय सदस्य और ट्रस्टी थे।



-गौतमचन्द अरोस्तवाल, संघ मन्त्री

कोटा-धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री रामप्रसादजी जैन (बाबई वाले) का 28 जून, 2021 को 85 वर्ष की वय में देवलोकगमन हो गया। आप श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के वरिष्ठ स्वाध्यायी थे। आपने कई वर्षों तक स्वाध्यायी के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान की। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करते थे। आपने अपने जीवन में कई ब्रत-प्रत्याख्यान ग्रहण कर रखे। आप अपने पीछे धर्मसहायिका और सुपुत्र श्री राजेन्द्रजी, सुरेन्द्रजी, बुद्धिप्रकाशजी, मनोजजी सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गये हैं।



कवर्धा-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती शोभाजी धर्मपत्नी श्री नरेशचन्द्रजी बरड़िया का 72 वर्ष की आयु में 18 जुलाई, 2021 को संलेखना संथारा सहित समाधिमरण हो गया। सामायिक, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, धार्मिक प्रतियोगिता में भाग लेना ये आपकी दिनचर्या के अङ्ग थे। आप कुछ वर्षों से असाध्य बीमारी से ग्रसित थी। आप श्रद्धेय श्री अक्षयमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से मंगल पाठ सुनकर प्रतिबोधित हुईं और लगभग 12 घण्टे के पश्चात् संथारा सींझ गया।



उपर्युक्त दिवगंत आत्माओं को जिनवाणी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि

मैसूर में धर्मोद्योत

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की असीम कृपा से मैसूर संघ को चातुर्मास प्राप्त हुआ है। व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा-6 का चातुर्मास महावीर नगर स्थित श्री स्थानकवासी जैन संघ भवन में चल रहा है। इसके पूर्व आपका मैसूर के उपनगरों को फरसते हुए 13 जुलाई को चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हुआ है तथा उसी दिन से नियमित प्रवचन एवं साधना-आराधना चल रही है। 22 जुलाई से प्रातः 8.30 से 9.30 बजे तक महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा. द्वारा स्वाध्याय कक्षा 'मेरा शासन महान्' के अन्तर्गत चल रही है। दोपहर 2 से 3.30 बजे श्राविकाओं के लिए 'निगोद से निर्वाण की ओर' विषय पर ज्ञानचर्चा होती है। शाम को प्रतिक्रमण, संवर, पौषध आदि में भी अच्छी संख्या रहती है। उपवास, तेले, आयम्बिल, नीवी, एकाशन, बेआसन की लड़ियाँ चातुर्मास प्रारम्भ से निरन्तर गतिमान है। उत्तराध्ययनसूत्र के 36 अध्ययन 36 श्रावक एक-एक अध्ययन एवं दशवैकालिक सूत्र के 10 अध्ययन 10 श्रावक एक-एक अध्ययन सीख रहे हैं। कर्मग्रन्थ, 25 बोल, प्रतिक्रमण की कक्षाएँ भी चल रही है। महासती श्री आराधनाश्रीजी म.सा. के 11 की तपस्या का पारणा सुख-साता पूर्वक सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन 7 से 8 बजे तक नवकार महामन्त्र का जाप चल रहा है।

-सुभाषचन्द्र धोका, मानद मन्त्री

संशोधन

1. जिनवाणी अप्रैल, 2021 के अंक में पृष्ठ संख्या 9 पर वज्रऋषभ नाराच संहनन का कथन तीर्थङ्कर की अपेक्षा से समझना चाहिए, सामान्य केवली की अपेक्षा से नहीं।
2. जिनवाणी जुलाई, 2021 के अंक में पृष्ठ संख्या 7 पर उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. द्वारा आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. को वन्दन करने का कथन सही नहीं है। दीक्षा पर्याय में उपाध्यायप्रवर के ज्येष्ठ होने से आचार्यप्रवर ही उनको वन्दन करते रहे।

-सम्पादक

❁ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❁

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक क्रम संख्या 16222 से 16232 तक कुल 11 सदस्य बने। जिनवाणी मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त	5000/-	श्रीमती सुशीलाजी, श्री विक्रमजी, सुशीलजी पितलिया, रतलाम, स्व. श्री सोहनलालजी पितलिया का देहावसान हो जाने पर उनकी पावन-स्मृति में।
50000/-	3100/-	श्रीमती भावनाजी, अभिषेकजी, अभिलाषाजी जैन, जयपुर, श्री नवीनजी जैन का 21 जुलाई 2021 को स्वर्गगमन हो जाने उनकी उनकी पुण्य-स्मृति में।
21000/-	2100/-	श्री अनिलकुमारजी मेहता, जयपुर मातुश्री श्रीमती उम्मेदकंवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री नरपतराजजी मेहता का 17 मार्च, 2021 को स्वर्गवास हो जाने और देहदान करने पर पुण्य-स्मृति में।
11000/-	2100/-	श्री माँगीलालजी महावीरचन्दजी बोहरा, आवडी-चेन्नई, धर्मपत्नी श्रीमती सुवाबाईजी बोहरा का 13 मई, 2021 को स्वर्गगमन होने पर पुण्य-स्मृति में।
11000/-	2100/-	श्री सोहनलालजी, बुधमलजी, सम्पतराजजी, राजनजी बाघमार, मैसूर, प्रिय अभिषेकजी बाघमार के प्रथम पुण्य-स्मृति दिवस पर।
11000/-	2100/-	श्री श्रेणिकजी, सुनीलकुमारजी धोका, मैसूर सौ. का. स्नेहा संग विशालजी मकाणा के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।
11000/-	2100/-	श्री श्रीपालचन्दजी, श्री नेमीचन्दजी मेहता, जोधपुर, सुपौत्री श्रेयाजी सुपुत्री श्रीमती अलकाजी-श्रेयांस कुमारजी मेहता का 4 जून, 2021 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
5100/-	2100/-	श्रीमती लाडकँवरजी साण्ड, विजयनगर-अजमेर, श्रावकरत्न श्री अमरचन्दजी साण्ड का 19 नवम्बर, 2020 को स्वर्गगमन होने पर पुण्य-स्मृति में।
5100/-	2100/-	श्री झूमरलालजी बोहरा, आवडी-चेन्नई, सुश्राविका श्रीमती विमलाबाईजी बोहरा का 9 मई, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।
5100/-	2100/-	श्री अमित जी जैन, मुम्बई, पूजनीया मातुश्री श्रीमती शिमलाजी एवं पूज्य पिताजी श्री महेन्द्रसिंह जी जैन की वैवाहिक वर्षगाँठ तथा श्री अमितजी, श्वेताजी, अक्षितजी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।
5001/-	2100/-	श्री अंकितजी जैन, जयपुर, पूज्य पिताजी श्री पारसचन्दजी जैन (श्यामपुरा वाले), जयपुर का 27 अप्रैल, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।
	5000/-	श्रीमती सुशीलाजी, श्री विक्रमजी, सुशीलजी पितलिया, रतलाम, स्व. श्री सोहनलालजी पितलिया का देहावसान हो जाने पर उनकी पावन-स्मृति में।
	3100/-	श्रीमती भावनाजी, अभिषेकजी, अभिलाषाजी जैन, जयपुर, श्री नवीनजी जैन का 21 जुलाई 2021 को स्वर्गगमन हो जाने उनकी उनकी पुण्य-स्मृति में।
	2100/-	श्री सुरेन्द्रजी-श्रीमती आशाजी लूंकड, कोटा, अपने सुखमय वैवाहिक जीवन की 43वीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में।
	2100/-	श्री पूनमचन्दजी जामड, जयपुर, सुपुत्र श्री निर्मलकुमारजी जामड का संधारापूर्वक 26 मई, 2021 को समाधिमरण हो जाने पर पुण्य-स्मृति में।
	2100/-	श्री अमितजी, ओमप्रकाशजी कर्णावट, जयपुर, श्रीमती मल्लिकाजी कर्णावट की 11 मई, 2021 को उपस्थित पुण्य-स्मृति में।
	2100/-	श्री भूपेन्द्रकुमारजी जैन (मण्डावर-महुआ वाले), जयपुर पूज्य पिताजी श्री महेन्द्रकुमारजी जैन का 11 जून, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।
	2100/-	श्री प्रकाशचन्दजी सुपुत्र स्व. श्री लडडूलालजी-श्रीमती कान्तिजी जैन (श्यामपुरा वाले), जलगाँव अपने सुपुत्र चि. अभिषेक जैन के User Growth मैनेजर के पद पर Max Player Co. मुम्बई में कार्य ग्रहण करने की खुशी में।
	2100/-	श्री अभिषेकजी, सुश्री पूर्वाजी सिंघवी, जोधपुर, आदरणीया दादीसा श्रीमती रतनकँवरजी धर्मसहायिका स्व. श्री रिखबचन्दजी सिंघवी एवं माताजी स्व. श्रीमती रीता सिंघवी धर्मसहायिका श्री चंचलचन्दजी सिंघवी के 01 मई, 2021 को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में।
	2100/-	श्री नरेशजी संचेती, जोधपुर, स्व. श्री सिद्धराजजी सुराणा की पुण्य-स्मृति में।
	2100/-	श्रीमती मिथलेशजी-श्री विनोद कुमारजी जैन (कंजौली वाले हिण्डौनसिटी), जयपुर, अपने सुपुत्र चि. कृष्णाजी जैन सुपौत्र स्व. श्रीमती शकुंतला

- देवीजी-स्व. श्री सुमेरचन्दजी जैन का शुभविवाह सौ.का. शिवाजी सुपुत्री श्रीमती रेखाजी-श्री प्रसुन कुमारजी जैन (सुपौत्री श्रीमती शारदाजी जैन-श्री छगनचन्दजी जैन, खोह वाले) के संग 18 जुलाई, 2021 को सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1500/- श्रीमती विजयाजी मेहता, जोधपुर, स्व. श्रीमान् भभूतराजसा-श्रीमती सिरैकँवरजी मेहता की पावन-स्मृति में।
- 1111/- श्रीमती मंजुलाजी, श्री अंकितजी, अनुभवजी, पार्श्वजी कटारिया, अजमेर, पूज्य श्री अशोकजी कटारिया का 4 जुलाई, 2021 को स्वर्गगमन होने पर पुण्य-स्मृति में।
- 1101/- श्री राहुलकुमारजी, हितैषकुमारजी जैन (रामपुरा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. जितेशजी जैन के विवाह उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री राजेन्द्रजी, सुरेन्द्रकुमारजी, बुद्धिप्रकाशजी, मनोजजी जैन (बाबई वाले) कोटा, पूज्य पिताजी श्री रामप्रसादजी जैन का 28 जून, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।
- 1100/- श्री प्रवेशकुमारजी जैन, सवाईमाधोपुर, स्व. श्री पूनमचन्दजी जैन की पुण्य-स्मृति में।
- 1100/- श्री कन्हैयालालजी जैन (चौधरी), आलनपुर-सवाईमाधोपुर, सुपौत्र प्रखरजी सुपुत्र श्रीमती साधना-श्री नीरज कुमारजी जैन का शुभविवाह सौ.कां. निकिताजी सुपुत्री श्रीमती कुसुमजी-श्री दिनेश कुमारजी जैन सुपौत्री स्व. श्री सौभागमलजी जैन कुशतला के साथ 15 जुलाई, 2021 को सम्पन्न होने पर।
- 1100/- श्री देवेन्द्रकुमारजी, पुष्पेन्द्रकुमारजी, संजयकुमार जी जैन (बरगंमा वाले), जयपुर, पूजनीया मातुश्री श्रीमती कौशल्यादेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री मिठ्ठनलालजी जैन का 31 मई, 2021 को स्वर्गवास होने पर पुण्य-स्मृति में।
- 1100/- श्री हनुमानप्रसादजी, मुकेशजी, आनन्दजी जैन, इन्दौर, चि. चेतनजी सुपुत्र स्व. श्री अशोक कुमारजी जैन (जगमोदा वाले) का शुभ विवाह सौ. का. सोनलजी सुपुत्री श्री विजयराजजी जैन औरंगाबाद के साथ 26 जून, 2021 को सम्पन्न होने की खुशी में।
- 1100/- श्री बाबूलालजी जी जैन, पांचडेरा, अपने सुपुत्र चि. शुभम के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।
- 1100/- श्री अमनजी बैद, जयपुर सप्रेम भेंट।
- 1100/- श्रीमती सुशीलाजी, श्री कमलेशजी, सुनीलजी, सौरभजी कोठारी, जोधपुर, स्व. श्री विजयराजजी की द्वितीय पुण्य-स्मृति पर भेंट।
- 1100/- श्रीमती आशाजी धर्मसहायिका श्री कैलाशचन्दजी जैन, जोधपुर, अपनी माताजी श्रीमती ज्ञानकँवरजी चौधरी की पावन-स्मृति में।
- 1100/- श्रीमती पदमादेवीजी सुराणा, जोधपुर, स्व. श्री सुल्तानमलजी सुराणा की पावन-स्मृति में।

गजेन्द्र निधि/गजेन्द्र फाउण्डेशन के ट्रस्टी

श्री सज्जनराजजी, महेन्द्र कुमारजी, राजेश कुमारजी बाफणा, बड़ोदा

आगामी पर्व तिथि

श्रावण शुक्ला 8, सोमवार	16.08.2021	अष्टमी
श्रावण शुक्ला 14, शनिवार	21.08.2021	चतुर्दशी
श्रावण शुक्ला पूर्णिमा, रविवार	22.08.2021	पक्खी
भाद्रपद कृष्णा 8, सोमवार	30.08.2021	अष्टमी
भाद्रपद कृष्णा 12, शनिवार	04.09.2021	पर्युषण पर्व प्रारम्भ
भाद्रपद कृष्णा 14, सोमवार	06.09.2021	चतुर्दशी, पक्खी
भाद्रपद शुक्ला 5, शनिवार	11.09.2021	संवत्सरी महापर्व
भाद्रपद शुक्ला 8, मंगलवार	14.09.2021	अष्टमी

बाल-जिनवाणी

प्रतिमाह बाल-जिनवाणी के अंक पर आधारित प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को सुगनचन्द प्रेमकँवर रांका चेरिटेबल ट्रस्ट-अजमेर द्वारा श्री माणकचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी, सुनीलकुमारजी, नीरजकुमारजी, पंकजकुमारजी, रौनककुमारजी, नमनजी, सम्यक्जी, क्षितिजजी रांका, अजमेर की ओर से पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-600 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-400 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 300 रुपये तथा 200 रुपये के तीन सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

Punia Shravak

Punia Shravak and his wife were poor villagers by their own choice. They lived in a small hut made of mud and grass. Punia had taken a vow not to earn more than the minimum needed to survive, which at that time was 12 dokadas (1/12 of a rupee) a day, which he earned by spinning and selling cotton yarn. He had also taken another vow to offer food to virtuous people daily. As they could not afford to have more food to satisfy this vow, he would fast one day and his wife would fast the next day. In spite of being so poor, they always offered their hospitality to fellow beings. In this way, the couple helped deserving people every day.

Punia Shravak did Samayik (48 minutes of meditation and equanimity) daily. Once during Samayik he could not meditate properly. He wondered what he had done that was disturbing his meditation but could not think of a reason. Therefore, he asked his wife, "What have we done different today the I cannot meditate properly?" At first his wife could not think of anything either. But as she continued thinking, she remembered that while returning from the market, she had

picked up dry cow manure from the street and used that as cooking fire. She told Punia about this. He told her that they should not take anything from anywhere unless it is bought from their own daily earnings.

Even though dry cow manure lying on the street has no value and does not belong to anybody, they did not have the right to take it. Punia could do a true Samayik because he lived a life of such high morals. Even Lord Mahavir praised his Samayika ritual in his sermons.

Once King Shrenik asked Teerthankar Mahavir how he could destroy his bad karmas to avoid being born in hell in his next life. He was ready to give up his entire Kingdom for that. Teerthankar Mahavir knew that it is not possible to change such karma (birth karma of the next life) once acquired by a person. However, to convey this message properly to the King, he said, "If you can buy the punya karma of one Samayik from Punia Shravak then it may be possible to change the birth karma of your next life."

King Shrenik went to Punia Shravak and requested to buy the punya karma of his One Samayik. King Shrenik was ready to give his entire Kingdom for this purchase. Punia

Shravak said, "Sir, I do not need any money. You have given us all the things we need in our life. I am ready to give everything I possess including my life for you. You are great and merciful King. However, I do not know how to give my Samayik punya to you. You can ask its price from Prabhu Mahavir. Shrenik went to ask its prices, but prabhu said that it can't be purchased by the mountains of gold. One has to do good karma personally."

Now King Shrenik realized that all his wealth could not buy punya karma of even one Samayik from a very poor man of his kingdom. King Shrenik left disappointed but was filled with admiration for Punia's real faith in religion.

-From 'Jain Story Book'

सामायिक-प्रश्नोत्तर

प्र. 1- तिक्खुत्तो के पाठ से वन्दना करते समय आवर्तन किस प्रकार किये जाने चाहिए ?

उत्तर- तिक्खुत्तो का पाठ बोलते समय तिक्खुत्तो शब्द के उच्चारण के साथ ही दोनों हाथ ललाट के बीच में से अपने स्वयं के दाहिने (राइट) कान की ओर ले जाते हुए गले के पास से होकर बायें (लेफ्ट) कान की ओर घुमाते हुए पुनः ललाट के बीच में लाना चाहिए। इस प्रकार एक आवर्तन पूरा करना चाहिए। इसी प्रकार से पयाहिणं और करेमि शब्द बोलते हुए भी एक-एक आवर्तन पूरा करना चाहिए, इस प्रकार तिक्खुत्तो का एक बार पाठ बोलने में तीन आवर्तन देने चाहिए। तीनों बार तिक्खुत्तो के पाठ से इसी प्रकार तीन-तीन आवर्तन देने चाहिए।

प्र. 2- आवर्तन देने की विधि को सरल तरीके से कैसे समझा सकते हैं ?

उत्तर- आवर्तन देने की विधि को सरलता से इस प्रकार समझा जा सकता है कि जैसे हम उत्तर या पूर्व दिशा में मुँह करके खड़े हैं अथवा गुरुदेव के सम्मुख खड़े हैं, तब हमारे सामने घड़ी मानकर जिस प्रकार घड़ी की सूई घूमती है ठीक उसी प्रकार हमें भी आवर्तन देने चाहिए। जिस प्रकार मांगलिक कार्यों में आरती उतारी जाती है,

मन्दिरों में परिक्रमा दी जाती है, उसी क्रम से आवर्तन देने चाहिए। अन्य भी लौकिक उदाहरणों से हम समझ सकते हैं कि जैसे घड़ी चलाने की क्रिया, चरखा घुमाने की क्रिया, रोटी बेलने का क्रम, वाहनों की गति दर्शाने वाला मीटर जिस क्रम से आगे बढ़ता है, ठीक इसी प्रकार आवर्तन हमें अपने ललाट के मध्य से प्रारम्भ करते हुए देने चाहिए।

- 'श्रावक सामायिक प्रतिक्रमणसूत्र' पुस्तक से

Question Answers

Sh. Dulichand Jain

Q.1- What is the prayer of forgiveness?

Ans.- A very powerful way to find peace within, is to recite the verse of forgiveness. You can recite this prayer when someone hurts or harms you in some way. This Prakrit verse is part of the Pratikramaṇa, an important prayer ritual of the Jainas. It is an experssion of goodwill and universal friendship, and aims to end conflicts and enmity.

Khāmemi savve jivā,

Savve jivā khamantu me,

Mitti me savvabhūesu,

Veram Majjham ṇa keṇai.

Translation :-I grant forgiveness to all living beings, I seek forgiveness from all living beings, I have friendship with one and all, And I have no enmity with anyone.

Here, forgiveness is given as well as sought from all beings in any form. It includes wrongdoings committed knowingly or unknowingly, whether in thought, speech or action. This prayer includes all lifetimes and beings we have come in contact with, even those we may have forgotten!

-From "With the Ferryman"

जिनवाणी की सीख

सुश्री लोरी मोदी

यदि कुछ सीखना है, सीखें यह बात

'लड़ना' नहीं सीखना, 'नहीं लड़ना' सीखना

‘लड़ना’ तो जाने सभी, ‘नहीं लड़ना’ ही सीखना।

उलझना नहीं सीखना, सुलझना हमें सीखना

विकल्प करना, स्वयं ही व्यर्थ उलझना

उलझन में नहीं पड़ना, सहज सुलझना

सुलझना ही है मुक्ति-मार्ग,

उलझना तो है जग-जञ्जाल।

पर दोषों को नहीं है देखना

पर दोषों को नहीं किसी से कहना

न ही पर दोषों को है सुनना।

‘पर’ दर्शन से दूर, ‘स्व’ दर्शन की ओर उन्मुख होना

जिनवाणी का यह सन्देश, हम सभी को धारण है करना।

-‘हृकुम्’ 5-ए/1, सुभ्राष नगर, पाल रोड़, जोधपुर-

342008 (राजस्थान)

स्थानक में कैसे जाएँ?

श्रीमती नीलू डागा

- ❖ जूते, चप्पल पहनकर अथवा गन्दे पैर लेकर स्थानक में न जाएँ।
- ❖ स्थानक में कुछ खाएँ एवं चबाएँ नहीं। बोलते समय मुँहपत्ती/रूमाल का प्रयोग करें।
- ❖ सबसे बाद में आकर सबसे आगे न बैठें।
- ❖ स्थानक में निन्दा, कलह, अवज्ञा या वाद-विवाद न करें।
- ❖ गुरु के आसन पर पैर न लगाएँ, न उनकी तरफ पीठ करके बैठें।
- ❖ विधिपूर्वक गुरु को वन्दन करें, गुरु भगवन्त यदि कोई महत्त्वपूर्ण कार्य या वार्तालाप कर रहे हों तो दूर से ही मन्द स्वर में वन्दना करें।
- ❖ साधु-सन्तों की सेवा के समय दीवार के सहारे या पैर फैलाकर न बैठें।
- ❖ धर्मस्थान की शोभा सामायिक करना, माला फेरना, धार्मिक पुस्तकें पढ़ना, मौन और ध्यान करना तथा तत्त्वचर्चा करना है। अतः मर्यादा बनाये रखें।
- ❖ पाँच अभिगम का पालन करें।

-पुस्तक ‘संस्कारम्’ से साभार

जीवनोपयोगी सूत्र

श्री अभय कुमार जैन

अगर भला चाहता है तो-

किसी का बुरा न कर।

अगर सुख चाहता है तो-

किसी को दुःखी न कर।

अगर दया चाहता है तो-

सब प्राणियों पर दया कर।

अगर सम्मान चाहता है तो-

किसी का अपमान न कर।

अगर विनयवान बनना है तो-

अभिमान का त्याग कर।

अगर शान्ति चाहता है तो-

क्रोध न कर।

अगर विद्या ग्रहण करना चाहता है तो-

विद्या का दान कर।

अगर धनवान बनना चाहता है तो-

गरीबों को दान कर।

अगर सेवा चाहता है तो-

बड़ों की सेवा कर।

अगर आबाद रहना चाहता है तो-

किसी को बर्बाद न कर।

अगर यश प्राप्त करना चाहता है तो-

सदैव अच्छे कार्य कर, किसी की निन्दा न कर।

अगर मीठे बोल सुनना चाहता है तो-

किसी को कड़वा न कह।

अगर विश्वासपात्र बनना चाहता है तो-

किसी से विश्वासघात न कर।

अगर नीरोगी काया चाहता है तो-

मन को साफ कर, जरूरतमन्द की सेवा कर।

अगर मुक्ति चाहता है तो -

किसी से बैर न कर

-40, तृप्ति बन्दार रोड़, भवानीमण्डी (राजस्थान)

हमारा चारित्रात्माओं से भाषा विवेक

श्रीमती अरुणा कर्णावट

आम बोलचाल की भाषा

1. आप कब आए ?
2. आप कब आओगे ?
3. आप बोल रहे थे।
4. आप बताओ।
5. आप सब कितने लोग हैं ?
6. आपकी तबियत कैसी है ?
7. हमारे ऊपर आशीर्वाद रखना।
8. आप यहाँ से कब जाओगे ?
9. हमारी कॉलोनी अच्छी है।
10. आप कहाँ रुके हुए हो ?
11. आप मेरे घर रुक जाओ।
12. आप जल्दी-जल्दी चलकर एक जगह से दूसरी जगह पहुँच जाते हो।
13. आपको प्रणाम करती हूँ/करता हूँ।
14. मेरे घर से भोजन ले लो।
15. आप यहाँ और कितने दिन रुकोगे ?
16. आपको रास्ते में कोई तकलीफ तो नहीं आयी ?
17. आपको साधु बने कितने दिन हो गए ?
18. आपके रिश्तेदार कितने हैं ?
19. आप पानी पी लो।

सन्त-सतियों से वचन व्यवहार

1. आप कब पधारे ?
2. आपके पधारने की क्या सम्भावना रहेगी ?
3. आप फरमा रहे थे ?
4. आप फरमाने की कृपा करावें।
5. आप कितने ठाणे से हैं ?
6. आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता है ?
7. कृपा दृष्टि बनाए रखना।
8. आपके विहार की सम्भावना कब है ?
9. हमारा क्षेत्र साताकारी है।
10. आप कहाँ विराजे हुए हैं ?
11. आप हमें शय्यातर का लाभ दिलाने की कृपा करें।
12. आप उग्रविहारी हैं।
13. मत्थएणं वंदामि भगवन्।
14. हमें गोचरी बहराने का अवसर प्रदान करें या बारहवें व्रत का लाभ दिलायें या मेरा व्रत निपजायें या ऊनोदरी का लाभ दिलायें या आप मुझे समकित देने पधारें।
15. आपके यहाँ और कितने दिवस विराजने की सम्भावना है। या इस क्षेत्र में और कितने समय तक विराजने की सम्भावना है।
16. आपके विहार के समय मार्ग में कोई परीषह तो उपस्थित नहीं हुआ।
17. आपकी संयम-पर्याय कितनी व्यतीत हो चुकी है ?
18. आपके सांसारिक परिजन कितने हैं ?
19. आप धोवन पानी का अवसर देख लीजिए। या आप धोवन पानी वापर लीजिए।

(क्रमशः)

सेवाभावी नन्दीषेणमुनि

संकलित

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 सितम्बर, 2021 तक जिनवाणी सम्पादकीय कार्यालय, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द्र जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार-200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

एक लड़का एकान्त में खड़ा सोच रहा था- 'कोई मुझे देख तो नहीं रहा है?' कोई उसे नहीं देख रहा, ऐसा जानकर गले में फाँसी लगाने लगा। उतने में एक सन्त मुनिराज वहाँ आ पहुँचे और उसे रोकते हुए बोले- "अरे भाई! तू यह क्या कर रहा है?" लड़के ने कहा- "मरना चाहता हूँ।" मुनिराज ने पूछा- "क्यों भाई? तुझ पर ऐसा कौन-सा संकट आ पड़ा है कि तू मरना चाहता है?" लड़का बोला- "मैं बहुत दुःखी हूँ, बचपन में मेरे माता-पिता की मृत्यु हुई। मेरे मामा को दया आई और मुझे अपने घर ले गये, लेकिन मेरी मामी को मुझसे ईर्ष्या हुई। मैं बदसूरत हूँ, इसलिए मुझसे कोई बोलता नहीं है और सब मुझे तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। ऐसी स्थिति में मेरे लिए मर जाना ही अच्छा है।"

मुनिराज ने उस दुःखी बालक को प्रेमपूर्वक समझाया। उन्होंने कहा- "यह सब तो तेरे पूर्वभव के पापों का फल है, इसलिए तू दुःखी हो रहा है और यह दुःख तो तुझे भोगना ही पड़ेगा। आत्महत्या करने से तेरे पाप छूटेंगे नहीं, उल्टे दुःख बढ़ेंगे। इससे अच्छा तो तू तेरे बंधे हुए कर्मों को शान्ति से और हँसते हुए सहन करेगा, तो तेरा भला होगा।"

मुनि के ऐसे प्रेम भरे वचनों से लड़के को सन्तोष हुआ और वह मुनि के पैरों में गिरकर विनति

करने लगा- "मुझे इस संसार में कुछ भी रस नहीं है, इसलिए मुझे संसार के इन दुःखों से छुटकारा पाने का कोई मार्ग बताइए।"

मुनि ने कहा- "भाई! इस जगत् में कई दुःखी जीव हैं, उनकी प्रेम से सेवा कर, सेवा करने से तू अपना दुःख भूल जाएगा। सेवा संसार में रहकर भी की जा सकती है और छह काय जीवों की सच्ची सेवा साधु बनकर भी की जा सकती है। इन दोनों में साधु बनकर सेवा करना यह उत्तम मार्ग है। तेरी भावना हो और शक्ति हो तो साधु जीवन अपनाकर सेवा कर।"

मुनि के वचनों का उस बालक के ऊपर गहरा असर हुआ। उसने उसी समय साधु बनने का निर्णय किया और थोड़े ही समय में दीक्षा अङ्गीकार करके मुनिव्रत स्वीकार कर लिया।

अब बालक मुनि नन्दीषेण साधु बन गये और सेवा करना उनका परम धर्म बन गया। वृद्ध, अपङ्ग या रोगी कोई भी मुनि हो तो उनकी सेवा करने के लिए वे आनन्द और उमङ्ग से दौड़े चले जाते। सबको अपना मानकर वे सेवा के कार्य में लग गये। धीरे-धीरे उनकी सेवाभावना की कीर्ति चारों ओर फैल गई और देवलोक के इन्द्र भी उनकी सेवा की प्रशंसा करने लगे। उनकी प्रशंसा सुनकर दो देवों

को, उनकी सेवा की परीक्षा करने का मन हुआ। वे दोनों देव, जहाँ नन्दीषेणमुनि थे, उस गाँव के बाहर आये। एक देव वृद्ध साधु और दूसरे रोगी साधु बनकर रहने लगे।

एक दिन नन्दीषेणमुनि दो उपवास (छट्ट) का पारणा करने की तैयारी कर रहे थे, उसी समय वह वृद्ध साधु वहाँ आये और बोले-“देखा! बड़ा सेवाभावी साधु बना हुआ है। इसे लोग सेवाभावी कहते हैं, गाँव के बाहर एक वृद्ध, अशक्त और रोगी मुनि दुःखी हो रहे हैं और यह तो यहाँ अच्छा-अच्छा खाने की तैयारी में लगा है। उन मुनिराज ने कई दिनों से खाया नहीं, कितने अशक्त हो गये हैं। जा, जाकर उनकी सेवा कर।”

उनके ये वचन सुनकर नन्दीषेणमुनि ने अन्न का एक कण भी मुँह में नहीं डाला। अपना पात्र एक तरफ रख दिया और उन साधु से बोले-“मुझे जल्दी उन रोगी और अशक्त मुनि के पास ले चलो, मैं यथाशक्ति उनकी सेवा अवश्य ही करूँगा।”

दोनों साधु गाँव के बाहर गये। नन्दीषेणमुनि ने वहाँ पहुँचकर रोगी साधु को नमस्कार किया, तब वे साधु गुस्से से बोले-“कब से मैं दुःखी हो रहा हूँ। तुझे कब-से सन्देश भेजा है और तू कितनी देर से आया है? देख ली तेरी सेवाभावना।” नन्दीषेणमुनि ने विनयपूर्वक कहा-“मुनिराज माफ करना। मुझे आने में थोड़ी देर हो गई, लेकिन चलो, मैं आपको गाँव के स्थानक में ले जाता हूँ।” बीमार साधु यह सुनकर क्रोधित हो गया-“अरे मूर्ख! मैं जरा भी चल नहीं सकता और तू मुझे चलकर जाने की बात करता है। ऐसा बोलते हुए तुझे जरा भी शर्म नहीं आई?”

“प्रभु! मेरी भूल हो गई, आप चिन्ता न करें। मैं आपको अपने कन्धों पर बैठाकर गाँव की ओर ले जाता हूँ।” मुनि नन्दीषेण ने रोगी साधु को अपने कन्धे पर बैठा लिया और गाँव की ओर चल दिये।

अचानक उन रोगी मुनि का वजन भारी होने

लगा। तपस्वी नन्दीषेणमुनि का शरीर दो दिन के उपवास के कारण कमजोर हो गया था, इसलिए कन्धों पर बैठे हुए, साधु को उठाकर वे बहुत मुश्किल से चल पा रहे थे। “अरे! जवान होकर भी तुझे चलना नहीं आता? चलते-चलते ऐसा क्यों लड़खड़ाता है? क्यों झुकता है?” कन्धे पर बैठे साधु ने कठोरता से कहा।

थोड़ी देर बाद ही कन्धों पर बैठा हुआ साधु फिर चिल्लाया-“अरे! तूने तो मेरे शरीर की हालत बिगाड़ दी। चलने में थोड़ा तो ध्यान रख। ऐसे क्या सेवा की जाती है?” अपमान और क्रूरता भरे ऐसे वचन सुनने के बाद भी नन्दीषेणमुनि शान्ति से बोले-“मुनिराज! मेरी भूल के लिए मैं क्षमा माँगता हूँ, अब मैं ज्यादा ध्यान से चलूँगा।”

रोगी मुनि को इतने से सन्तोष नहीं हुआ। इसलिए उसने कहा-“मुझे मल-मूत्र विसर्जन करना है, इसलिए मुझे नीचे उतार।” नन्दीषेणमुनि उन्हें नीचे उतारने लगे, तब तक उन्होंने वहीं गन्दगी कर दी। नन्दीषेणमुनि के कपड़े मलमूत्र वाले हो गये। उनका शरीर भी गंदा हो गया। चारों ओर बदबू आने लगी। फिर भी मुनि ने मन से भी रोगी मुनि के प्रति द्वेषभाव नहीं किया। परन्तु मन में सोचने लगे-“इन रोगी मुनि को कितना कष्ट होता होगा? इन्हें मैं जल्दी स्थानक में ले जाऊँ और ऐसी सेवा करूँ कि ये जल्दी ठीक और नीरोगी हो जायें।”

थोड़ी देर में चलते-चलते वे स्थानक में पहुँच गए। रोगी मुनि को नीचे उतारकर नन्दीषेणमुनि मलमूत्र साफ करने के लिए कमरे में गये। थोड़ी देर के बाद बाहर आकर देखा तो न तो रोगी मुनि थे और न ही वृद्धमुनि। उनको दो देव नज़र आये।

उन देवों ने कहा-“धन्य हो मुनि नन्दीषेण! आपकी सेवा बहुत अद्भुत और अद्वितीय है। हमने जैसा सुना था, उससे भी विशेष भक्तिभाव से आप सेवा करते हैं। आपकी प्रशंसा हमने इन्द्र महाराज के मुँह से सुनी थी, इसलिए हम मुनिवेश धारण करके

आपकी परीक्षा लेने आये थे। आपको अपमानजनक, क्रोध से भरे कटुवचन कहे, आपका शरीर मलमूत्र से गन्दा किया, फिर भी आप श्रद्धा और करुणा से सेवा करने में मग्न रहे। आप हमारी परीक्षा में सफल हुए हैं।”

नन्दीषेणमुनि ने कहा-“हे देव! इस जगत् में वीतराग धर्म और उनके सन्तों के सिवाय दूसरा क्या महान् है? मैं तो सिर्फ अपना धर्म, अपना कर्तव्य निभाता हूँ, उसके अलावा कुछ नहीं करता। ऐसा करके मैं किसी के ऊपर कोई उपकार भी नहीं करता। मुझे सेवा के काम से बहुत ही आनन्द और सन्तोष प्राप्त होता है।” इतनी बातें करने के बाद दोनों देव उन्हें वन्दन करके, प्रसन्न होकर वापस चले गये।

-पुस्तक 'सचित्र जैन पाठ्यक्रम' से साभार

- प्र. 1. दुःख से पीड़ित, खुदकुशी करने को तैयार हुए लड़के को मुनि ने क्या समझाया?
- प्र. 2. नन्दीषेणमुनि दो उपवास के पारणे को बैठे थे, तब कौन आया? उन्होंने उनसे क्या कहा?
- प्र. 3. देवों ने नन्दीषेणमुनि की परीक्षा किस तरह ली?
- प्र. 4. देवों ने नन्दीषेणमुनि की किन शब्दों में प्रशंसा की?
- प्र. 5. नन्दीषेणमुनि के जीवन से हमें क्या शिक्षा लेनी चाहिए?
- प्र. 6. दिए गए पदों का समास-विग्रह कर समास का नाम भी लिखिए-सेवाभावना, मलमूत्र, बदसूरत, यथाशक्ति।

कोविड -19 कोरोना वायरस से बचाव की कहानी वर्णमाला की जुवानी						
अ अपना खयाल रखें	आ आप घर पर रहें	इ इधर-उधर बेवजह न घूमें	ई ईश्वर (परमात्मा) पर भरोसा रखें	उ उम्मीद पर दुनिया कायम है	ऊ ऊटपटांग कामों से बचें	ऋ ऋणात्मक न सोचें
ए एकान्त का आनन्द लें	ओ ओझा (झाड़फूँक) से बचें	औ औषधि समय पर लें	अं अंत भला ही होगा	क कोरोना से न घबरायें	ख खबरदार बने रहें	ग गमगीन गाहिल से बचें
घ घर से बिना काम से न निकलें	ङ	च चतुराई से काम करें	छ छल-कपट से बचें	ज जल-साबुन से हात धोते रहें	झ झगडा न करें	ञ
ट टहलें केवल अपनी छत या आँगन में	ठ ठहर जायें, खुद के पास	ड डर के आगे जीत हैं	ढ ढकोसलो से स्वयं को बचायें	ण णमोकार मंत्र का जाप करें	त तरकीब लगाकर बाहर न निकलें	थ थूँके ना सड़कों पर
द दयालुता अपनायें	ध धैर्य बनायें रखें	न नशीले पदार्थों के सेवन से बचें	प पशु-पक्षियों का ध्यान रखें	फ फर्जी जानकारी न फैलायें	ब बुजुर्गों का ध्यान रखें	भ भजन-कीर्तन करें
म मास्क का प्रयोग करें	य योग करें, नीरोग बने	र रवि (सूर्य) की किरणें अवश्य लें	ल लचीलापन अपनायें	व वचन सीधाल डिस्टेंसिंग का लें	श शराब से दूर रहें	ष षट्पत्र न करें
स सकारात्मक सोच रखें	ह हल तलाशें, न कि समस्या	क्ष क्षेत्र के दायरे में रहें	त्र	ज्ञ ज्ञानी बने, अज्ञानता से बचें		

बाल-स्तम्भ [मई-जून-2021] का परिणाम

जिनवाणी के मई-जून-2021 के अंक में बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत 'माता मदालसा' के प्रश्नों के उत्तर जिन बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, वे धन्यवाद के पात्र हैं। पूर्णांक 25 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	जतिन जैन, कोटा (राजस्थान)	25
द्वितीय पुरस्कार-300/-	प्रणव भण्डारी, जोधपुर (राजस्थान)	24
तृतीय पुरस्कार- 200/-	कु. आरोही एस. जैन, भुसावल (महाराष्ट्र)	23
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	निकिता जैन, मसूदा-अजमेर (राजस्थान)	22
	अदिति बाँठिया, नागपुर (महाराष्ट्र)	22
	विशाल सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	22
	यशवर्धन आहूजा, जयपुर (राजस्थान)	22
	पहर जैन, आसीन्द-भीलवाड़ा (राजस्थान)	22

बाल-जिनवाणी जुलाई, 2021 के अंक से प्रश्न (अन्तिम तिथि 15 सितम्बर, 2021)

- प्र. 1. 'श्रमिक महिलाओं की उदारता' संस्मरण हमें क्या प्रेरणा देता है ?
- प्र. 2. वन्दना तीन बार ही क्यों की जाती है ?
- प्र. 3. हम अपने जीवन को सार्थक कैसे कर सकते हैं ?
- प्र. 4. माता-पिता और गुरु किस रूप में हमारे उपकारी होते हैं ?
- प्र. 5. नयसार का जीवन किस कारण धन्य हो गया ?
- प्र. 6. सुपात्रदान किसे कहते हैं ?
- प्र. 7. How did Vardhman fight the monster?
- प्र. 8. How can we be successful?
- प्र. 9. सकारात्मक दृष्टिकोण हमारी प्रगति में किस तरह सहायक होता है ?
- प्र. 10. दिए गए शब्दों से उपसर्ग एवं मूल शब्द छाँटिए-परोपकार, निर्मल, संवेदन, निडरता।

बाल-जिनवाणी [अप्रैल-2021] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रैल-2021 के अंक की बाल-जिनवाणी पर आधृत प्रश्नों के उत्तरदाता बालक-बालिकाओं का परिणाम इस प्रकार है। पूर्णांक 40 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-600/-	प्रियंका जैन, अजमेर (राजस्थान)	39
द्वितीय पुरस्कार-400/-	नमिष जैन, बारां (राजस्थान)	38
तृतीय पुरस्कार- 300/-	अरिष्ट कोठारी, अजमेर (राजस्थान)	37
सान्त्वना पुरस्कार (3)- 200/-	भूमि सिंघवी, जोधपुर (राजस्थान)	36
	सुहानी सुराणा, अजमेर (राजस्थान)	36
	कु. ममता आर. छाजेड़, भुसावल (महाराष्ट्र)	36

संस्कार केन्द्रों हेतु दो नये प्रकाशन

आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं धार्मिक पाठशालाओं के अध्यापकों से निवेदन है कि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा दो नवीन पुस्तकों 'प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर' और 'हमारे जीवन की नई कहानियाँ' का प्रकाशन किया गया है, जो बच्चों के लिए संस्कार प्रदात्री हैं। अतः बच्चों के लिए इनका उपयोग करें। बालकों को संस्कारित करने का यह भी एक उत्तम साधन है।

-सम्पादक

अहंकार के वृक्ष पर
विनाश के फल लगते हैं।



ओसवाल मेट्रीमोनी बायोडाटा बैंक

जैन परिवारों के लिये एक शीर्ष वैवाहिक बायोडाटा बैंक

विवाहोत्सुक युवा/युवती
तथा पुनर्विवाह उत्सुक उम्मीदवारों की
एवं उनके परिवार की पूरी जानकारी
यहाँ उपलब्ध है।

ओसवाल मित्र मंडल मेट्रीमोनियल सेंटर

४७, रत्नज्योत इंडस्ट्रियल इस्टेट, पहला माला,
इरला गांवठण, इरला लेन, विलेपार्ले (प.), मुंबई - ४०० ०५६.

फोन : 022 2628 7187

ई-मेल : oswalmatrimony@gmail.com

सुबह १०.३० से सायं ४.०० बजे तक प्रतिदिन (बुधवार और बैंक छुट्टियों के दिन सेंटर बंद है)

गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

Acharya Hasti Meghavi Chatravritti Yojna Has Successfully Completed 13 Years And Contributed Scholarship To Nearly 4500 Students. Many Of The Students Have Become Graduates, Doctors, Software-Professionals, Engineers And Businessmen. We Look Forward To Your Valuable Contribution Towards This Noble Cause And Continue In Our Endeavour To Provide Education And Spirituals Knowledge Towards A Better Future For The Students. Please Donate For This Noble Cause And Make This Scholarship Programme More Successful. We Have Launched Membership Plans For Donors.

We Have Launched Membership Plans For Donors

MEMBERSHIP PLAN (ONE YEAR)		
SILVER MEMBER RS.50000	GOLD MEMBER RS.75000	PLATINUM MEMBER RS.100000
DIAMOND MEMBER RS.200000		KOHINOOR MEMBER RS.500000

Note - Your Name Will Be Published In Jinwani Every Month For One Year.

The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

The Bank A/c Details is as follows - Bank Name & Address - AXIS BANK Anna Salai, Chennai (TN)
A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund IFSC Code - UTIB0000168
A/c No. 168010100120722 PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनाये रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठियों एवं अर्थ सहयोग एकत्रित करने करने वालों के नाम की सूची -

KOHINOOR MEMBER (RS.500000)	PLATINUM MEMBER (RS.100000)
श्रीमान् मोफ्तराज जी मुणोत, मुम्बई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्युस्टन। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई।	श्रीमान् दूलीचन्द बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचन्द जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई।
SILVER MEMBER (RS.50000)	श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकवंर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। प्रो. डॉ. शैला विजयकुमार जी सांखला, चालीसगांव (महा.)। श्रीमान् विजय जतिन जी नाहर, इन्दौर। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् विजयकुमार जी मुकेश जी विनीत जी गोठी, मदनगंज-किशनगढ़। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, तमिलनाडु। श्रीमती पुष्पाजी लोदा, नेहरू पार्क, जोधपुर।
श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् महावीर सोहनलाल जी बोधरा, जलगांव (भोपालगढ़) श्रीमान् सोहनराज जी बाघमार, कोयम्बटूर। कन्हैयालाल विमलादेवी हिरण चैरिटेबल ट्रस्ट, अहमदाबाद। श्रीमान् गुप्त सहयोगी, अहमदाबाद। श्रीमती हेमलता मदनलाल जी सांखला, मुम्बई। श्रीमान् अमीरचन्द जी जैन (गंगापुरसिटी वाले), मानसरोवर, जयपुर श्रीमती सुशीला जी साण्ड धर्मपत्नी स्व. श्री कस्तूरमल जी साण्ड, अजमेर	श्रीमान् जी. गणपतराजजी, हेमन्तकुमारजी, उपेन्द्रकुमारजी, कोयम्बटूर (कोसाणा वाले)

सहयोग के लिए बैंक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें - M.Harish Kavad - No. 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-56
छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मनीष जैन, चैन्नई (+91 95430 68382)

छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बढ़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का

जिनवाणी की प्रकाशन योजना में आपका स्वागत है

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा विगत 77 वर्षों से प्रकाशित 'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका मानव के व्यक्तित्व को निखारने एवं ज्ञानवर्धक सामग्री परोसने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इसमें अध्यात्म, जीवन-व्यवहार, इतिहास, संस्कृति, जीवन मूल्य, तत्त्व-चर्चा आदि विविध विषयों पर पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। अनेक स्तम्भ निरन्तर प्रकाशित हो रहे हैं, जिनमें सम्पादकीय, विचार-वारिधि, प्रबचन, शोधालेख, अंग्रेजीलेख, युवा-स्तम्भ, नारी-स्तम्भ आदि के साथ विभिन्न गीत, कविताएँ, विचार, प्रेरक प्रसङ्ग आदि प्रकाशित होते हैं। नूतन प्रकाशित साहित्य की समीक्षा भी की जाती है।

जैनधर्म, संघ, समाज, संगोष्ठी आदि के प्रासङ्गिक महत्त्वपूर्ण समाचार भी इसकी उपयोगिता बढ़ाते हैं। जनवरी, 2017 से 8 पृष्ठों की 'बाल जिनवाणी' ने इस पत्रिका का दायरा बढ़ाया है। अनेक पाठकों को प्रतिमाह इस पत्रिका की प्रतीक्षा रहती है तथा वे इसे चाव से पढ़ते हैं। जैन पत्रिकाओं में जिनवाणी पत्रिका की विशेष प्रतिष्ठा है। इस पत्रिका का आकार बढ़ने तथा कागज, मुद्रण आदि की महँगाई बढ़ने से समस्या का सामना करना पड़ रहा है। जिनवाणी पत्रिका की आर्थिक स्थिति को सम्बल प्रदान करने के लिए पाली में 28 सितम्बर, 2019 को आयोजित कार्यकारिणी बैठक में निम्नाङ्कित निर्णय लिये गए, जिन्हें अप्रैल 2020 से लागू किया गया है-

वर्तमान में श्वेत-श्याम विज्ञापनों से जिनवाणी पत्रिका को विशेष आय नहीं होती है। वर्ष भर में उसके प्रकाशन में आय अधिक राशि व्यय हो जाती है। अतः इन विज्ञापनों को बन्दकर पाठ्य सामग्री प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया।

आर्थिक-व्यवस्था हेतु एक-एक लाख की राशि के प्रतिमाह दो महानुभावों के सहयोग का निर्णय लिया गया। ऐसे महानुभावों का एक-एक पृष्ठ में उनके द्वारा प्रेषित परिचय/सामग्री प्रकाशित करने के साथ वर्षभर उनके नामों का उल्लेख करने का प्रावधान भी रखा गया।

जिनवाणी पत्रिका के प्रति अनुराग रखने वाले एवं हितैषी महानुभावों से निवेदन है कि उपर्युक्त योजना से जुड़कर श्रुतसेवा का लाभ प्राप्त कर पुण्य के उपार्जक बनें। जो उदारमना श्रावक जुड़ना चाहते हैं वे शीघ्र मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों से शीघ्र सम्पर्क करें।

अर्थसहयोगकर्ता जिनवाणी (JINWANI) के नाम से चैक प्रेषित कर सकते हैं अथवा जिनवाणी के निम्नाङ्कित बैंक खाते में राशि नेफ्ट/नेट बैंकिंग/चैक के माध्यम से सीधे जमा करा सकते हैं।

बैंक खाता नाम-JINWANI, बैंक-State Bank of India, बैंक खाता संख्या-51026632986, बैंक खाता-SAVING Account, आई.एफ.एस. कोड-SBIN0031843, ब्रांच-Bapu Bazar, Jaipur

राशि जमा करने के पश्चात् राशि की स्लिप मण्डल कार्यालय या पदाधिकारियों की जानकारी में लाने की कृपा करें जिससे आपकी सेवा में रसीद प्रेषित की जा सके।

'जिनवाणी' के खाते में जमा करायी गई राशि पर आपको आयकर विभाग की धारा 80G के अन्तर्गत छूट प्राप्त होगी, जिसका उल्लेख रसीद पर किया हुआ है। 'जिनवाणी' पत्रिका में जन्मदिवस, शुभविवाह, नव प्रतिष्ठान, नव गृहप्रवेश एवं स्वजनों की पुण्य-स्मृति के अवसर पर सहयोग राशि प्रदान करने वाले सभी महानुभावों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। आप जिनवाणी पत्रिका को सहयोग प्रदान करके अपनी खुशियाँ बढ़ाना न भूलें।

-अशोक कुमार सेठ, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, 9314625596

जिनवाणी प्रकाशन योजना के लाभार्थी

'जिनवाणी' हिन्दी मासिक पत्रिका की अर्थ-व्यवस्था को सम्बल प्रदान करने हेतु विम्बाहिकित धर्मनिष्ठ उदारमना श्रायकर्त्तव्यों से राशि रुपये 1,00,000/- प्राप्त हुई है। सम्बन्धान प्रवाहक मण्डल एवं जिनवाणी पत्रितार उनका हार्दिक आभारी है।

- (1) न्यायमूर्ति श्री जसराजजी श्री आनन्दजी चौपड़ा, जयपुर
- (2) श्री सुशीलजी सोलंकी, मुम्बई
- (3) श्री रतनराजजी नेमीचन्दजी भण्डारी, मुम्बई (पीपाड़ सिटी वाले)
- (4) नयनतारा रतनलाल सी. बाफणा एण्ड सन्स, जलगाँव
- (5) श्री राजरूपमलजी, संजयजी, अंजयजी, दिवेशजी मेहता, शिवाकाशी
- (6) डॉ. एस. एल. नागौरीजी, बून्दी
- (7) श्री अरुणजी मेहता, सुनीताजी मेहता छत्तरछाया फाउण्डेशन, जोधपुर
- (8) श्री उम्मेदराजजी, एवन्तकुमारजी, राजेशकुमारजी डूंगरवाल (थाँवला वाले), पाँच्चावाला-जयपुर
- (9) श्री चंचलराजजी मेहता, अहमदाबाद
- (10) श्री जिनेश कुमारजी, रोहितराजजी जैन (ढहरा वाले), हिण्डौनसिटी-जयपुर
- (11) श्री सागरमलजी, हुकमचन्दजी नागसेठिया, शिरपुर
- (12) श्री क्रान्तिचन्दजी मेहता, अलवर

वित्तीय वर्ष 2021-22 हेतु लाभार्थी

- (1) श्री भागचन्दजी हेमेशजी सेठ, जयपुर
- (2) श्री सौभाग्यमलजी, हरकचन्दजी, हनुमान प्रसादजी, महावीर प्रसादजी, कपूरचन्दजी जैन (बिलोता वाले), अलीगढ़-रामपुरा, सवाईमाधोपुर, कोटा एवं जयपुर
- (3) श्री स्वरूपचन्दजी बाफना, सूरत
- (4) श्री सुमतिचन्दजी कोठारी, जयपुर
- (5) श्री पवनलालजी मोतीलालजी सेठिया, होलनांथा
- (6) श्रीमती अलकाजी, विजयजी नाहर, इन्दौर
- (7) सेठ चंचलमल गुलाबदेवी सुराणा ट्रस्ट, बीकानेर
- (8) डॉ. सुनीलजी, विमलजी चौधरी, दिल्ली
- (9) इन्दर कुमार मनीष कुमार सुराणा चेरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर
- (10) श्री गणपतराजजी, हेमन्त कुमारजी, उपेन्द्र कुमारजी बाघमार (कोसाणा वाले), कोयम्बटूर
- (11) Shri Ankit ji lodha, Jewels of Jaipur Gie gold creations Pvt Ltd, Mahaveer Nagar, Jaipur
- (12) श्री राधेश्यामजी, कुशलजी, पदमजी, अशोकजी, प्रदीपजी जैन गोटेवाला, सवाईमाधोपुर (राज.)

उदारमना लाभार्थियों की अनुमोदना

एवं

स्वेच्छा से नये जुड़ने वाले लाभार्थियों का
हार्दिक स्वागत।



JVS Foods Pvt. Ltd.

Manufacturer of :

NUTRITION FOODS

BREAKFAST CEREALS

FORTIFIED RICE KERNELS

WHOLE & BLENDED SPICES

VITAMIN AND MINERAL PREMIXES

*Special Foods for undernourished Children
Supplementary Nutrition Food for Mass Feeding Programmes*

With Best Wishes :

JVS Foods Pvt. Ltd.

G-220, Sitapura Ind. Area,
Tonk Road, Jaipur-302022 (Raj.)

Tel.: 0141-2770294

Email-jvsfoods@yahoo.com

Website-www.jvsfoods.com

FSSAI LIC. No. 10012013000138

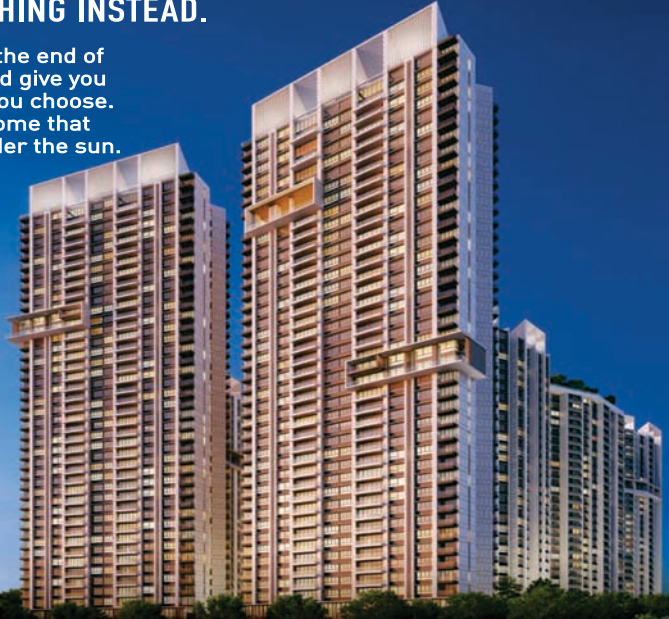




**WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.**

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 **022 3064 3065**



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENZA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

In association with
HDFC
PROPERTY FUND

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - अशोक कुमार सेठ द्वारा डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन